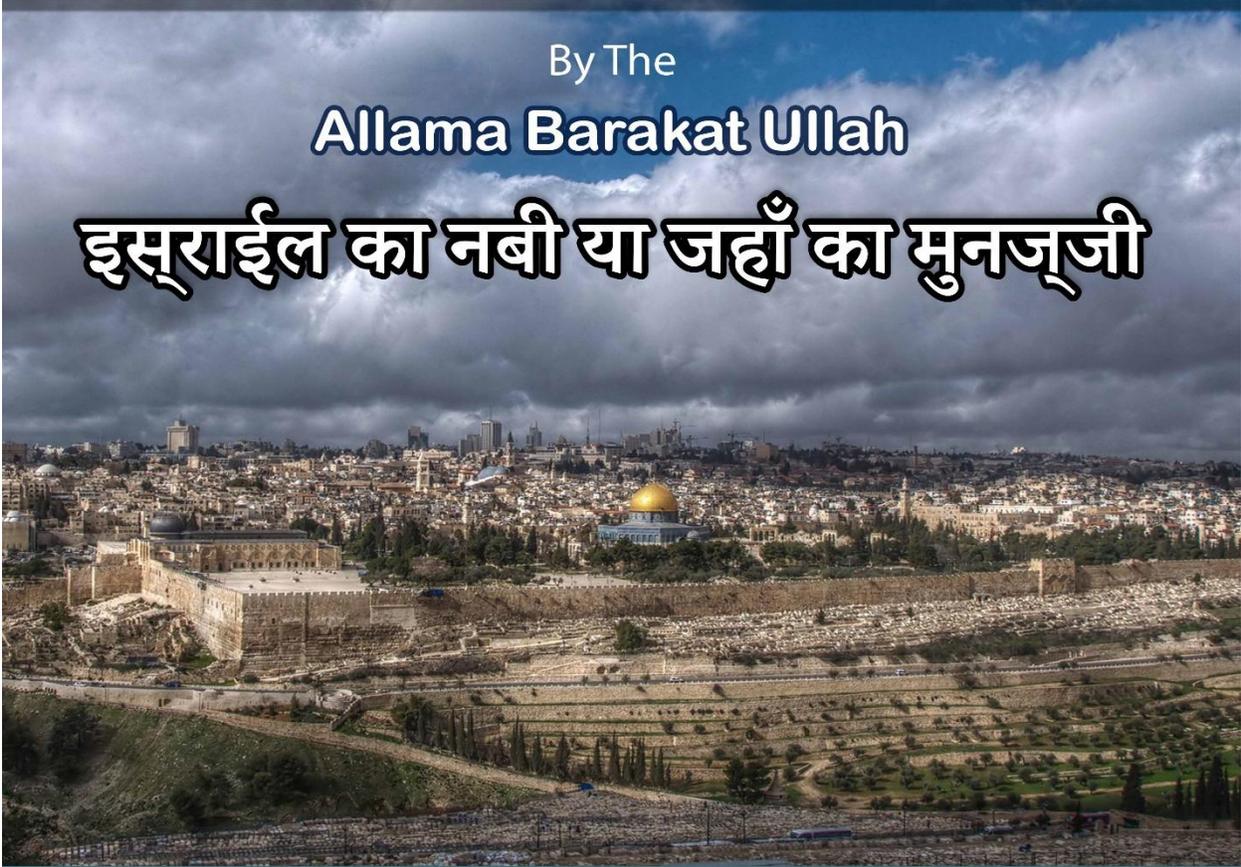


Was Jesus Sent To The Lost Sheep Of Israel Only

By The

Allama Barakat Ullah

इस्राईल का नबी या जहाँ का मुनज्जी



अल्लामा बरकतुल्लाह

1938



WAS JESUS SENT TO THE
LOST SHEEP OF ISRAEL ONLY?

BY

Allama Barakat Ullah, M.A.

“मैं दुनिया को नजात देने आया हूँ।” क्रौल-उल-मसीह
(यूहन्ना 12:47)

इस्राईल का नबी

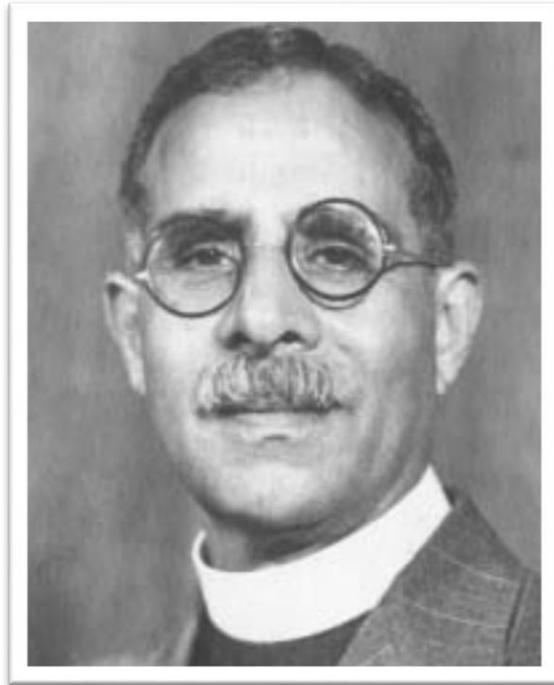
या

जहान का मुनज्जी

मुसन्निफ़

अल्लामा बरकतुल्लाह एम. ए.

1938 ई.



1891-1972

ALLAMA BARAKAT ULLAH, M.A.F.R.A.S

Fellow of the Royal Asiatic Society London

शुमाली हिन्दुस्तान की कलीसिया

के

मायानाज़ मुसन्निफ़, आलिम बेबदल

ज़बदतु-लमुतकल्लमीन, इमाम-अल-मुफ़स्सरीन,

सुल्तान-उल-मुनाज़रीन

जनाब मौलाना पादरी सुल्तान मुहम्मद

पाल साहब

प्रोफ़ैसर अरबी, मिशन कॉलेज, लाहौर

की ख़िदमत बाबरकत में

ये हदिया

पेश करता हूँ

गर कुबूल अफ़तदज़ है इज़ो शर्फ़

अल्लामा बरकत-उल्लाह

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

मुकदमा अल-किताब	7
फ़स्ल अद्वल.....	10
उसूल-ए-तफ़सीर	10
फ़स्ल दोम	13
अम्बिया-ए-इस्राईल की रिसालत का मतमइ नज़र और अहले-यहूद का नस्ब-उल-ऐन...13	
अहले-यहूद का नस्ब-उल-ऐन (मक़सद)	15
फ़स्ल सोम.....	32
सय्यदना मसीह के कलिमात-ए-तय्यिबात और आपका तर्ज़-ए-अमल.....	32
सय्यदना मसीह और अहदे-अतीक की कुतुब	33
सय्यदना मसीह की ताअलीम की बुनियाद	35
सय्यदना मसीह का लाएहा अमल	38
मुनज्जी आलमीन का तर्ज़-ए-अमल.....	39
सय्यदना मसीह की मौत और बनी-आदम की नजात	44
मुनज्जी आलमीन के कलिमात-ए-तय्यिबात	47
सय्यदना मसीह के अहकाम.....	52
गैर-यहूद में तब्लीग की मुमानिअत का सवाल.....	54
सूर फ़ीनीकी लड़की को शिफ़ा बख़शना.....	59
अक़वाम-ए-आलम की नजात और अहले-यहूद का नस्ब-उल-ऐन (मक़सद)	67
मसीही नजात की आलमगीरी.....	78

फ़स्ल चहारुम	80
हवारइन (शागिर्दो) की तहरीरात और तरीक़ अमल.....	80
मुक़द्दस पौलुस और मसीहीय्यत की आलमगीरी.....	84
रसूलों की तहरीरात और मसीहीय्यत की आलमगीरी	90
फ़स्ल पंजुम.....	92
मसीही कलीसिया का तर्ज़-ए-अमल	92
फ़स्ल शश्म.....	98
कुरआन और मसीहीय्यत की आलमगीरी	99

मुक़दमा अल-किताब

चंद साल हुए मरहूम ख्वाजा कमाल-उद्दीन कादियानी ने मसीहीयत की आलमगीरी और बेनज़ीरी पर एक ऐसे नुक्ता निगाह से हमला किया था जिसको अगरचे उलमा-ए-मगरिब ने बोसीदा और मर्दूद करार दे दिया हुआ था लेकिन वो पंजाब के सादा-लौह तबके के मुसलमानों के लिए एक नया नज़रिया था। मरहूम ने अपनी किताब में बज़अमे-ख़ुद पादरी डाक्टर टसडल साहब की बेअदील (बेनज़ीर) किताब “यनाबीअ-अल-इस्लाम” (بينات الإسلام) का इल्ज़ामी जवाब देने की कोशिश की थी कि अगर इस्लाम मुख्तलिफ़ मज़ाहिब से मुरक्कब है तो मसीहीयत के अक्काइद व रसूम भी रूमी यूनानी मज़ाहिबे बातिला से माखूज हैं।

इस दौर में मेय और है जाम और है हुजम और
साकी ने बिना की रविश लुत्फ़ व सितम और

मुद्दत हुई जर्मनी और दीगर ममालिक मगरिब के मसीही और ग़ैर-मसीही उलमा ने इस नज़रिये को बातिल और बे-बुनियाद साबित करके इस की धज्जियाँ उड़ा दी थीं चुनान्चे इस हकीकत को हमने अपनी किताब “नूर-उल-हुदा” (نور الهدى) के दोनों हिस्सों में वाज़ेह कर दिया था और यह साबित कर दिया था कि मसीहीयत के अक्काइद और रसूम मज़हब इस्लाम की तरह हरगिज़ असातीर-उला-अव्वलीन (اساطير الاولين) यानी पहले लोगों की कहानियाँ) नहीं हैं, क्योंकि मुशरिकाना मज़ाहिब बातिला के एतिक़ादात और रस्मियात में और मसीहीयत के एतिक़ादात और रस्मियात में ज़मीन आस्मान का फ़र्क़ है और वह एक दूसरे के ऐन ज़िद (खिलाफ़) हैं। यही वजह है कि दोनों में तसादुम और जंग वाक़ेअ हुई जिसका नतीजा ये हुआ कि कुल जहान ने मसीहीयत की बेनज़ीरी और आलम गीरी का लोहा मान लिया और कामयाबी का सहारा मसीहीयत के सर पर रहा।

ऐ ताज दौलत बर सरत अज-इब्तिदा-ता-इंतिहा

हमने अपने रिसाले “**सेहत कुतुब मुकद्दसा**” में ये साबित कर दिया है कि बाइबल शरीफ की सेहत जिसमें मसीहीय्यत की ताअलीम दर्ज है, ऐसी बेनज़ीर और आला पाया की है, जो कभी दुनिया के किसी दूसरे मज़हब की किताब को नसीब नहीं हुई। फिर हमने अपने रिसाले “**कलिमतुल्लाह की ताअलीम**” में ये साबित कर दिया है कि ये ताअलीम जिसकी सेहत का पाया इस कद्र लाजवाब, आला और अफ़ा है, आलमगीर उसूलों पर मुश्तमिल है और दुनिया के किसी मज़हब की ताअलीम इस के उसूल की बुलंदी को नहीं पहुंच सकती। हमने अपने रिसाले **दीन फ़ित्रत इस्लाम या मसीहीय्यत** में ये साबित कर दिया है कि सिर्फ मसीहीय्यत की ताअलीम ही इन्सानी फ़ित्रत के तमाम तकाज़ाओं को पूरा कर सकती है और करती है। फिर हमने अपने रिसाले “**मसीहीय्यत की आलमगीरी**” में ये साबित कर दिया है कि सिर्फ मसीहीय्यत के उसूल और इब्ने-अल्लाह की शख़िसयत ही जामेअ और आलमगीर (यानी पूरी दुनिया के लिए) है।

मसीहीय्यत की बे-नज़ीरी की वाज़ेह हकीकत के बावजूद बाअज ग़ैर-मसीही बिरादरान ये दाअ्वा करते हैं कि, सय्यदना मसीह का मिशन आलमगीर (पूरी दुनिया के लिए) ना था और इस इन्कार के सबूत में वो बिलउमूम दो इन्जीली आयात को पेश किया करते हैं, जिनमें मुनज्जी कौनैन (दुनिया को नजात देने वाले मसीह) के दो अक्वाल मुन्दरज हैं और वो आयात हस्बे-ज़ेल हैं :-

(1)मुकद्दस मती की इन्जील में खुदावंद का ये क़ौल है, “**मैं इस्राईल के घराने की खोई हुई भेड़ों के सिवा किसी और के पास नहीं भेजा गया।**” (मती 15 बाब आयत 24)

(2)कलिमतुल्लाह (मसीह) का एक क़ौल इसी इन्जील में है, “**यसूअ ने इन बारह को भेजा और उन को हुक्म देकर कहा कि, ग़ैर-क़ौमों की तरफ़ ना जाना और सामरियों के किसी शहर में दाखिल ना होना, बल्कि इस्राईल के**

घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाना और चलते-चलते ये मुनादी करना कि आस्मान की बादशाहत नज़दीक आ गई है। (मत्ती 10 बाब आयत 5 ता 7)

मज़क़ूरा बाला आयात के बिना पर बाअज़ मोअतरज़ीन (एतराज़ करने वाले) कहते हैं कि, जनाबे मसीह मुर्सल मिनल्लाह (यानी अल्लाह की तरफ से रसूल مرسل من الله) तो थे, लेकिन मुनज्जी आलमीन (दुनिया के लिए नजातदहिंदा) ना थे। आपकी रिसालत सिर्फ़ अहले-यहूद (यहूदियों) तक ही महदूद थी, लिहाज़ा आपका पैग़ाम आलमगीर (पूरी दुनिया के लिए) ना था।

इस मुख्तसर रिसाले में हम कलिमतुल्लाह (كلمته الله) के मज़क़ूरा बाला कलिमात-ए-तय्यिबात पर गौर करेंगे, ताकि मालूम करें कि, आया मुख़ालिफ़ीन के एतराज़ात सही और हक़-बजानिब हैं कि नहीं। हम अहले-यहूद के नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) और तारीख़ पर अम्बिया-ए-इस्राईल की कुतुब और खुद सय्यदना मसीह के अक्वाल व मोअज़िज़ात और आप के अहक़ाम, पैग़ाम और प्रोग्राम और तर्ज़-ए-अमल पर कलिमतुल्लाह के हवारियेन और मुबल्लगीन (तब्लीग़ करने वाले शागिर्दों) के अक्वाल व अफ़आल व हिदायात पर और कलीसिया-ए-जामा के लाएहा अमल और कारनामों पर एक मुख्तसर नज़र डाल कर मुंदरजा बाला एतराज़ की सेहत को जांचेंगे और उन की रोशनी में इब्ने-अल्लाह के हर दो अक्वाल की सही तफ़्सीर को समझने की कोशिश करेंगे, ताकि वो मोअतरिज़ (एतराज़ करने वाले) जो सिदक़ (सच्चे) दिल से इन आयात की बिना पर मसीहीय्यत की आलमगीरी को नहीं मानते, अपने नज़रिये की नज़र-ए-सानी करके मुनज्जी आलमीन पर ईमान ला कर हयात-ए-अबदी हासिल करें। وَمَا تَوْفِيقِي إِلَّا بِاللَّهِ

होली ट्रिनिटी चर्च, लाहौर

यक़म जुलाई 1938 ई.

अल्लामा बरकतुल्लाह

फ़स्ल अद्वल

उसूल-ए-तफ़सीर

इस से पहले कि हम उन आयात पर गौर करें जिनका ज़िक्र मुक़दमा अल-किताब में किया गया है, ये मुनासिब मालूम होता है कि हम नाज़रीन को किताब-ए-मुक़द्दस की तफ़सीर के सही उसूल से जो मुखालिफ़ व मवालिफ़ दोनों के नज़्दीक मुसल्लम हैं तआरुफ़ करा दें, ताकि इनको मालूम करके नाज़रीन खुद आयात-ए-मज़क़ूरा बाला की सही तफ़सीर को जांच सकें। अगर एतराज़ात की बिना (बुनियाद) सही उसूल तफ़सीर के खिलाफ़ साबित हो जाएगी, तो इन एतराज़ात के ग़लत होने में किसी किस्म के शक़ शुब्हा की गुंजाइश नहीं होगी। लेकिन अगर ये एतराज़ात सही उसूल के मुताबिक़ होंगे तो इन के हक़-बजानिब होने में किसी को कलाम ना होगा।

तफ़सीर का सही अस्ल ये है कि किसी क़ौल की सिर्फ़ वही तफ़सीर सही हो सकती है जो क़ाइल या कहने वाले के असली मफ़हूम और हकीक़ी मंशा को ज़ाहिर करे। पस अगर किसी क़ौल की तावील ऐसे तरीक़े से की जाये जो कहने वाले के असली मंशा के खिलाफ़ हो तो वो तावील बातिल और गुमराह कुन होगी। इस किस्म की तफ़सीर महज़ मन घड़त होगी और अरबाब-ए-दानिश (अक्लमंदों) के नज़्दीक उस की वक़अत और क़द्र सिफ़र (जीरो) से ज़्यादा ना होगी।

पस लाज़िम है कि जब हम किसी शख़्स के क़ौल की तावील या तफ़सीर करें, तो इस बात का लिहाज़ रखें कि वो तफ़सीर कहने वाले के ख़यालात के मुताबिक़ हो। उस के जज़्बात की सही तर्जुमानी करे और उस के अफ़आल और तर्ज़ अमल से इस तावील पर रोशनी पड़े, ताकि वो क़ाइल के ख़यालात, जज़्बात और अफ़आल का मज़हर हो। सही तफ़सीर के लिए लाज़िम है कि वो इबारत के सियाक़ व सबाक़ (सहीह मफ़हूम) का लिहाज़ रखे और किताब-ए-मुक़द्दस के अल्फ़ाज़ व मुहावरात से इस तफ़सीर की ताईद होती हो। जो तफ़सीर इस उसूल के खिलाफ़ होगी वो तफ़सीर القول بما لا يرشئ به قائله मुतसव्वर होगी। यानी वो ऐसी तावील होगी जो क़ौल के कहने वाले के मतलब व मंशा के खिलाफ़ होगी। लिहाज़ा वो तफ़सीर बातिल और नाक़ाबिल एतिमाद होगी। इस किस्म की तावील

को जो खिलाफ सियाक कलाम हो और खिलाफ अल्फ़ाज़ इन्जील जलील हो, कोई सही-उल-अक़ल (दाना, दानिशमंद) शख्स कुबूल नहीं कर सकता और अगर कोई शख्स इस किस्म की तफ़सीर करने पर इसरार करे, तो वो सही तफ़सीर नहीं बल्कि फुज़ूल बहस और मुकाबरा (शेखी, घमंड) होगा जिसके खिलाफ़ हमको इन्जील शरीफ़ में मुतनब्बाह (आगाह किया) किया गया है। (1 तीमुथियुस 6:4 वगैरह (

पस अगर कोई शख्स इन्जील जलील की किसी आयत की या सय्यदना मसीह के किसी क़ौल की इस तौर पर तफ़सीर करे, जो सय्यदना मसीह के हकीकी मंशा के खिलाफ़ हो और आपके कलिमात-ए-तय्यिबात, अहकाम व हिदायात और पैगाम व प्रोग्राम और तर्ज़-ए-अमल के मुताबिक़ ना हो, तो इस तफ़सीर के ग़लत होने में किसी को कलाम नहीं हो सकता। जो तफ़सीर कलिमतुल्लाह के खयालात, अल्फ़ाज़ और जज़्बात की सही तर्ज़ुमानी ना करे, बल्कि ऐसे मअनी बयान करे जो सय्यदना मसीह के मतलब व मक़सद (इरादे) के ऐन नकीज़ (मुखालिफ़) हों, तो वो तावील (शरह, जाहिरी मतलब से किसी बात को फेर देना) यकीनन सही तावील कहलाने की मुस्तहिक़ नहीं हो सकती।

इलावा अज़ीं अगर ऐसी तावील ना सिर्फ़ कलिमतुल्लाह के खयालात व जज़्बात हिदायात व अहकाम व अफ़आल के खिलाफ़ हो, बल्कि ऐसी हो जो कि आपके हवारइन (शागिर्दों) के खयालात व जज़्बात व अहकाम और तर्ज़-ए-अमल के भी खिलाफ़ हो, तो ऐसी तफ़सीर के ग़लत होने में शक़ की गुंजाइश नहीं रह सकती।

मज़ीद बरआँ अगर ये तावील ऐसी हो जो ना सिर्फ़ मुनज्जी-ए-आलमीन और आप के हवारइन (शागिर्दों) के खयालात व जज़्बात व अहकाम और पैगाम, हिदायात, प्रोग्राम और तर्ज़-ए-अमल के खिलाफ़ हो, बल्कि जम्हूर कलीसिया-ए-जामा की हिदायात और तर्ज़-ए-अमल के भी खिलाफ़ हो, तो इस तावील के मर्दूद होने में किसी शख्स को कलाम नहीं होना चाहिए, क्योंकि ऐसी तावील वो मअनी बयान करती है जो ना कलिमतुल्लाह (मसीह) समझे ना आपके हवारइन (शागिर्द) ना आइम्मा और आबा-ए-कलीसिया जामा और ना आममा (आम) मसीही। ऐसी तफ़सीर इन्जील जलील की आयात के वो मअनी बतलाएगी जो ना इबारत के अल्फ़ाज़ से निकलते हैं ना सियाक कलाम के मुताबिक़ हैं, बल्कि वो तावील ऐसी होंगी जो कलिमतुल्लाह (सय्यदना मसीह) के मंशा और इन्जील के मक़सूद और हवारइन और आबा-ए-कलीसिया की हिदायात की जो असली गर्ज़ है, इन

सब के खिलाफ होगी। पस इस क्रिस्म की तावील सरीह और साफ तौर पर गलत और नाकाबिल कुबूल होगी।

बाअज गैर-मसीही अस्हाब इस क्रिस्म की गलत तावील को काम में ला कर दो इंजीली आयात की इस तौर से तफ्सीर करते हैं जिस तरह ना तो खुद कलिमतुल्लाह (मसीह) ने समझा था ना आपके हवारइन (शागिर्दों) ने, ना आबा-ए-कलीसिया ने, ना कलीसिया-ए-जामा और ना जम्हूर मसीहीयों ने, बल्कि ये तावील इस क्रिस्म की है कि जिससे इन्जील का अस्ल-ए-मक्सूद ही फ़ौत हो जाता है। ये तफ्सीर कलिमतुल्लाह के खयालात, इन्जील के अल्फ़ाज़ और सबाक़ इबारत और उस की आम मंशा से कुछ मुनासिब और मुताबिक़त नहीं रखती। ये अस्हाब इन्जील की आयात को इस तरह माओल (उल्टा) कर देते हैं कि वो तावील ऐसे दर्जे पर पहुंच जाती है, कि इस पर तावील का लफ़ज़ भी सादिक़ नहीं हो सकता। मशहूर है कि :-

बरअक्स नहंद नाम जंगी काफ़ूर

इस क्रिस्म की तावील के ज़रीये ये अस्हाब साबित करना चाहते हैं कि सय्यदना मसीह का मिशन आलमगीर ना था और आप मुनज्जी-ए-आलमीन (जहान के नजातदहिंदा) ना थे। इस इन्कार के सबूत में वो बिल-उमूम दो आयात की तफ्सीर व तावील पेश करते हैं, जिनमें मुनज्जी-ए-कौनैन (मसीह) के दो अक्वाल मुन्दरज हैं। चुनान्चे वो कहते हैं कि मुकद्दस मती की इन्जील में वारिद हुआ है कि **“मैं इस्राईल के घराने की खोई हुई भेड़ों के सिवा किसी और के पास नहीं भेजा गया।”** (मती 15:24) और आपने शागिर्दों को हुक्म दिया कि **“इस्राईल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाना, गैर-क्रौमों की तरफ़ ना जाना।”** (मती 10:5)

मज़कूर बाला आयात की तावील ये की जाती है कि कलिमतुल्लाह (मसीह) को ये एहसास था कि आप मुर्सल मिनल्लाह (अल्लाह की तरफ से रसूल) हो कर सिर्फ़ क्रौम-ए-यहूद के लिए आए थे और आप का पैग़ाम सिर्फ़ अहले-यहूद के लिए ही था, ना कि दीगर अक्वाम-ए-आलम (दुनिया की क्रौमों) के लिए। आपकी हम्दर्दी का हलका क्रौम इस्राईल से ज़्यादा वसीअ ना था और आपके ख़्वाब व ख़याल में भी ये बात ना आई थी

कि आपका पैगाम इस्राईल के इलावा किसी और कौम के लिए है। चह जायके (चाहे) वो कुल बनी-नूअ इन्सान के लिए हो।

अगर ये साबित हो जाए कि मज़कूर बाला तावील कलिमतुल्लाह (मसीह) के खयालात व कलमात व जज़्बात व हिदायात, पैगाम व अहकाम और आप के लाएहि अमल और तर्ज़-ए-अमल के मुताबिक है, तो उस के सही मानने में किसी साहिबे अक्ल को कलाम ना होगा। लेकिन अगर ये साबित हो जाए कि ये तफ़सीर और तावील सय्यदना मसीह के खयालात व कलमात व जज़्बात व हिदायात व अहकाम और आपके लाएहि अमल और तर्ज़-ए-अमल के ऐन खिलाफ़ है और इन अल्फ़ाज़ से आपके हवारइन (शागिर्द) वो मतलब ना समझे, जो ये तावील हमको समझाना चाहता है बल्कि इन हवारइन (शागिर्दों) के खयालात, कलिमात, हिदायात, अहकाम और तर्ज़-ए-अमल इस तावील के ऐन जिद (मुखालिफ़) थे। मज़ीद बरअँ कलीसिया-ए-जामा और जम्हूर मसीहीयों का अक्कीदा और तर्ज़-ए-अमल इब्तिदा से दौरे हाज़रा तक इस तावील के बरअक्स रहा है, तो ये ज़ाहिर है कि ये तावील बिल्कुल ग़लत और नाकाबिल कुबूल साबित हो जाएगी और उन आयात-ए-शरीफा की सही तफ़सीर वो होगी जो कलिमतुल्लाह (मसीह) और आप के हवारइन (शागिर्द) और कलीसिया-ए-जामा के हक्कीकी मंशा और मक्सूद के मुवाफ़िक़ होगी। इंशा-अल्लाह हम माबाअद की फ़स्लों में ये बात वाज़ेह करके उन आयात की तावील सही उसूल तफ़सीर के मुताबिक़ करेंगे।

फ़स्ल दोम

अम्बिया-ए-इस्राईल की रिसालत का मतमाअ नज़र और अहले-यहूद का नस्ब-उल-ऐन

इस से पहले कि हम उन आयात व मकामात का मुफ़स्सिल मुतालाआ करें जिन पर मोअतरज़ीन के एतराज़ात मबनी हैं, ये मुनासिब मालूम होता है कि हम इस अम्र को दर्याफ़्त करें कि जिस कौम में कलिमतुल्लाह (मसीह) ने परवरिश पाई, उस का नस्ब-उल-ऐन (मक्सूद) क्या था और जिन अम्बिया-ए-उज़्जाम (बुजुर्ग) की कुतुब के गहवारे में

आप ने अपने अय्याम-ए-तुफुलियत (बचपन) और आलम-ए-शबाब (जवानी) के रुहानी मदरिज को हासिल किया। उनके पैगाम का मतमअ नज़र क्या था। क्या अहले-यहूद और इस्राईल की नज़र सिर्फ़ क़ौम इस्राईल के अफ़राद की नजात तक ही महदूद थी या उनका ख़याल था कि ग़ैर-यहूद भी नजात हासिल करेंगे? क्या इनके ख़याल में उनका खुदा महज़ यहूद का ही खुदा था या तमाम आलम का खुदा था? अगर ये साबित हो जाये कि अहले-यहूद की नज़र इस बाब में वसीअ थी और इनका ये ईमान था कि खुदा रब-उल-आलमीन है और अक्वाम-ए-आलम उस की नजात से बहरावर (फ़ायदा उठाने वाली) होंगी और अगर ये साबित हो जाए कि अम्बिया-ए-इस्राईल की रिसालत का मतमाअ नज़र (असली मक्सद) ही ये था कि बनी-इस्राईल ग़ैर-यहूद को खुदा के पास लाने का ज़रीया और वसीला होंगे, तो ये मानना एक ना-मुम्किन अम्र हो जाएगा कि कलिमतुल्लाह (मसीह) अपने ज़माने के हम-अस्रों और अम्बिया-ए-साबिका और उन के मुकल्लिदों (मुरीदों) की निस्बत ज़्यादा तंग-नज़र थे, क्योंकि अगर इब्ने-अल्लाह (मसीह) की ज़हनी नशो व नुमा और रुहानी तरक्की के माहौल वसीअ थे, तो आपके खयालात इनसे ज़्यादा तंग नहीं हो सकते, क्योंकि एक रोशन हकीकत है कि कलिमतुल्लाह के खयालात अपने हम-अस्रों से कहीं ज़्यादा बुलंद व बाला और वसीअ थे। आपके आने की गायत (गर्ज, मतलब) ही ये थी। आप तौरेत और सहफ़ अम्बिया को पूरा करें और एक कामिल शराअ और अकमल नमूना दें। (मती 5:18, ,11:29यूहन्ना 13:15, रोमीयों 10:4, 13:8, ग़लतीयों 3:24, इफ़िसियों 4:20 व फिलीप्पियों 2:5 वग़ैरह-वग़ैरह (

सच्च तो ये है कि कलिमतुल्लाह (मसीह) ने एक ऐसे घराने में परवरिश पाई थी जो अपनी नज़ीर आप ही था। मुक़द्दसा मर्यम पर बअल्फ़ाज़ इन्जील “खुदा की तरफ़ से फ़ज़ल हुआ था” और खुदा तआला की कुदरत ने इस पर साया डाला था। बअल्फ़ाज़ कुरआन अल्लाह ने आप को पसंद किया और पाक किया और तमाम जहान की औरतों से बर्गुज़ीदा किया।□ इन्जील जलील इस बात की गवाह है कि मुक़द्दसा मर्यम ने आपको सहफ़-ए-अम्बिया इस्राईल की ताअलीम दी थी। इन सहफ़ के हिस्स के हिस्स खुदावंद को ज़बानी याद थे। यहूदीयत की दुआएं बपचन ही से आपको हिफ़ज़ कराई गई थीं। (मती 4 बाब, 5 बाब, मर्कुस 12 बाब, 15 बाब, लूका 2 बाब, लूका 23:46 वग़ैरह)

हता कि आपके लड़कपन की निस्बत इन्जील शरीफ़ में वारिद हुआ है कि आप इस ज़माने में बढ़ते और कुच्चत पाते और हिक्मत से मामूर होते हो गए और खुदा का

फ़ज़ल आपके साथ मुदाम (हमेशा) रहा। (लूका 2:40) बअल्फ़ाज़-ए-कुरआन आप ऐसे “नेक-बख्त” वाक़ेअ हुए थे कि आप रूह-उल्लाह और कलिमतुल्लाह **وجيهاً في** **منّ المرين** और **الدنيا** **الاخره** थे।

पस जब कलिमतुल्लाह (मसीह) ने ऐसे हालात में अपनी ज़हनी और रुहानी परवरिश पाई हो तो मोअतरिज़ का ये क़ौल ना सिर्फ़ लगू और बे-बुनियाद बल्कि मज़हकाखेज़ है कि अहले-यहूद तो इस बात को मानते थे और उन के अम्बिया सदीयों से उन पर ये जतलाते चले आए थे कि उनका काम ये है कि अक्वाम-ए-आलम में ख़ुदा की नजात का पैग़ाम दें। लेकिन कलिमतुल्लाह ऐसे तंग-नज़र वाक़ेअ हुए थे कि अपने हम-अस्र यहूद के नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) और अम्बिया-ए-इस्राईल के मतमाअ नज़र को जिससे वो बचपन ही से वाक़िफ़ थे, दीदा दानिस्ता पस-ए-पुश्त फेंक कर ये मानते थे कि ख़ुदा की नजात सिर्फ़ अहले-यहूद तक ही महदूद है और अपने हवारियों को ये ताअलीम देते थे कि दीगर अक्वाम-ए-आलम इस नजात से बहरा-अंदोज़ नहीं हो सकतीं।

अहले-यहूद का नस्ब-उल-ऐन (मक्सद)

यहूदी अम्बिया की रिसालत का मक्सद ये था कि वो अपनी उम्मत यानी क़ौम बनी-इस्राईल पर ये सदाक़त ज़ाहिर कर दें कि उस की ज़िंदगी का मुतम्मह नज़र और नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) ये है कि वो अक्वाम-ए-आलम को ख़ुदा की मारफ़त और नजात का पैग़ाम देने का वसीला है, ताकि जुम्ला अक्वाम आलम, अहले-यहूद की मारफ़त एक हक़ीक़ी वाहिद ख़ुदा के इल्म को हासिल करें।

ये हक़ीक़त अहदे-अतीक़ की पहली किताब यानी पैदाइश से लेकर आख़िरी किताब यानी मलाकी नबी की किताब में पाई जाती है। चुनान्चे कुतुब मुक़द्दसा की पहली किताब यानी पैदाइश की किताब में जो सय्यदना मसीह से सदीयों पहले लिखी गई थी ये मुन्दरज है कि ख़ुदा ने हज़रत इब्राहिम से वाअदा फ़रमाया कि “दुनिया के सब घराने तुझसे बरक़त पाएँगे। (पैदाइश 12:3) इब्राहिम यकीनन एक बड़ी और बुजुर्ग़ क़ौम होगा और ज़मीन की सब क़ौमें उस से बरक़त पाएँगी। (पैदाइश 18:18) “ऐ इब्राहिम तेरी नस्ल से ज़मीन की सब क़ौमें बरक़त पाएँगी क्योंकि तूने मेरे हुक्म की तामील की। (पैदाइश 22:18 नीज़ देखो आमाल 3:25, ग़लतीयों 8:3, 18 वग़ैरह) फिर ख़ुदा ने हज़रत इज़हाक़

को भी यही फ़रमाया। (पैदाइश 26:4 (इस के बाद खुदा ने हज़रत याक़ूब को रोया (कश्फ़) के ज़रीये बतलाया कि, “तेरी नस्ल ऐसी होगी जैसी ज़मीन की गर्द और तू पच्छिम पूरब उत्तर और दक्षिण को फुट निकलेगा और ज़मीन के तमाम घराने तुझसे और तेरी नस्ल से बरकत पाएँगे।” (पैदाइश 28:14 (

पस इब्तदाए ज़माने से खुदा का ये इरादा था कि अहले इस्राईल को अक्वाम आलम (साडी दुनियां की क्रोमों) के दर्मियान अपनी मार्फ़त और बरकत बख़शने का वसीला बनाए। अम्बिया-ए-इस्राईल ने इस हकीकत को बार-बार अहले-यहूद के गोश गुजार करने में कोई दक्कीका फ़िरोगुजाशत ना रखा। (कसर ना छोड़ना, सख़्त कोशिश करना, सब कुछ कह देना) चुनान्चे अगर हम अम्बिया-ए-असगर को नज़र-अंदाज करके सिर्फ़ चंद अम्बिया-ए-उज़्जाम (बुजुर्ग को बतौर मुश्ते नमूना अज़-ख़रवारे (यानी ढेर में से मुट्ठी भर, थोड़े से नमूने से कुल चीज़ की असलीयत मालूम हो जाती है) लें तो ये हकीकत हम पर महर-नीम-रोज़ (दोपहर की तरह रोशन) हो जाती है, मसलन :-

(1)सय्यदना मसीह से (760) साल पहले हज़रत आमोस ने इस्राईल को ये सबक सिखलाया कि जिस तरह खुदा अहले-यहूद की हिफ़ाज़त करता है उसी तरह वो अहले हब्श की भी हिफ़ाज़त करता है। जिस तरह खुदा इस्राईल को मिस्र से निकाल लाया, उसी तरह वो फ़िलिस्तीयों को कफ़तूर से और अरामियों को क़ीर से निकाल लाया था। चुनान्चे नबी कहता है कि, “जो आस्मान पर अपने बाला खानों को बनाता है और ज़मीन पर अपने गर्दू (रथ, गाड़ी) की महराब को कायम करता है। वो जो समुंद्रों के पानियों को बुलाता है और इन को रूए ज़मीन की सतह पर उंडेलता है, उस का नाम खुदावंद है, वह फ़रमाता है, ऐ बनी-इस्राईल क्या तुम लोग मेरे हुज़ूर कूष की औलाद की तरह नहीं हो? खुदावंद फ़रमाता है, कि क्या जिस तरह मैं इस्राईल को मिस्र की सर-ज़मीन से निकाल लाया हूँ, फ़िलिस्तीयों को कफ़तूर से और अरामियों को क़ीर से नहीं निकाल लाया हूँ?” (आमोस 9:7 (

(2)हज़रत यसअयाह नबी जो 760 क़ब्ल अज़ मसीह पैदा हुए फ़रमाते हैं “सारी अक्वाम खुदावंद के घर की तरफ़ रवाना होंगी और कहेंगी, आओ हम खुदावंद के पहाड़ पर चढ़ें और याक़ूब के खुदा के घर में, कि वो अपनी राहें हमको बतलाएंगा और हम उस के रस्तों पर चलेंगे क्योंकि शरीअत सीहोन से और खुदावंद का कलाम यरूशलेम से

निकलेगा। (यसअयाह 2:2) रब-उल-अफ़वाज इस पहाड़ पर तमाम अक्वाम के लिए फ़र्बा चीज़ों से एक ज़ियाफ़त करेगा और खुदावंद खुदा सब के चेहरों से आँसू पोंछ डालेगा और उस रोज़ ये कहा जाएगा कि देखो ये हमारा खुदा है, हम उस की राह तकते थे और उसने हमको बचाया। ये खुदावंद है जिसके इंतज़ार में हम थे, अब हम उस की नजात से खुश व ख़ुरम होंगे।) यसअयाह 25 बाब नीज़ देखो 9:2, 11:1 ता 10, 18:7, 24:16, 27:1340:5 ,35:1 वग़ैरह-वग़ैरह (उस रोज़ मिस्र से असूर तक एक शाहराह होगी और मिस्री असूरियों के साथ इबादत करेंगे और उस रोज़ इस्राईल ज़मीन के दर्मियान बरकत का बाइस ठहरेगा और रब-उल-अफ़वाज उस को बरकत बख़शेगा और फ़रमाएगा कि मुबारक हो मिस्र मेरी उम्मत, असूर मेरे हाथ की सनअत और इस्राईल मेरी मीरास। (19:23 वग़ैरह-वग़ैरह)

(3)मीकाह नबी की किताब (700) ईस्वी से क़ब्ल लिखी गई, उसने भी ये हकीकत जतलाई है। (मीकाह बाब 4, 5 वग़ैरह-वग़ैरह (

(4)हज़रत यर्मियाह नबी सय्यदना मसीह से साढ़े छः सौ (650) साल पहले पैदा हुआ और वह बार-बार अपनी नबुव्वतों में जो उसने खुद लिखवाई, इस बात का ज़िक्र करता है और कहता है कि “ऐ खुदावंद, दुनिया के किनारों से अक्वाम तेरे पास आकर कहेंगी कि फ़िल-हकीकत हमारे बाप-दादा ने महज़ बतालत की मीरास हासिल की।” (यर्मियाह 16:19, 4:2 वग़ैरह-वग़ैरह)

(5)सफ़नियाह नबी की किताब सय्यदना मसीह से सवा छः सौ (625) साल पहले लिखी गई, इस में मर्कूम है कि “मैं उस वक़्त लोगों के हॉट पाक कर दूँगा ताकि सब के सब खुदावंद का नाम लें और एक दिल हो कर उस की इबादत करें। कूश की नहरों के पार से मेरे आबिद हदिया लाएँगे।” (सफ़नियाह 3:9 वग़ैरह (

(6)हिज़्कीएल नबी सय्यदना मसीह से छः सौ बाईस (622) साल पेशतर पैदा हुआ। वो मुतअद्दिद दफ़ाअ इस बात का ज़िक्र करता है। (हिज़्कीएल बाब 34, 37, 47 वग़ैरह)

(7)हज़रत ज़करीया ने सय्यदना मसीह से छः सौ बाईस(622)) साल पहले नबुव्वत करनी शुरू की। वो भी इस नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) का ज़िक्र करके कहता है कि

“बहुत अक्वाम और ज़ोर-आवर उम्मतें रब-उल-अफ़वाज को दूढने को और खुदावंद के चेहरे को देखने को यरूशलेम में आयेंगी। रब-उल-अफ़वाज यूं फ़रमाता है कि उन दिनों में ऐसा होगा कि क्रौमों के दस आदमी जिनको अलग-अलग नेअमत दी जाएगी, हाथ बढ़ाएंगे। वो एक यहूदी शख्स के दामन को पकड़ेंगे और कहेंगे कि हम तुम्हारे साथ जाएंगे क्योंकि हमने सुना है कि खुदा तुम्हारे साथ है। (जकरीयाह 8:22- ,2:10 ,23 9:1 ,6:15 और 14 बाब वगैरह (

(8)अहले-यहूद की जिलावतनी के दौरान में अम्बिया-ए-इसाईल ने इस नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) को बार-बार अपनी उम्मत के सामने रखा। चुनान्चे (यसअयाह की किताब के अबवाब 40 ता 66) जो (546 ता 539) कब्ल अज़ मसीह लिखे गए, इस नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) से पुर हैं। मिसाल के तौर पर ज़ेल की आयात मुलाहिजा हों :-

ऐ बनी-इसाईल, मैं खुदावंद ने तुझको सदाक़त के लिए बुलाया है, मैं तेरा हाथ पकड़ूंगा और तेरी हिफ़ाज़त करूंगा और लोगों के अहद और क्रौमों के नूर के लिए तुझे दूंगा तू अँधों की आँखें खोले और कैदीयों को ज़िंदाँ (कैद) से निकाले और उन को जो अंधेरे में बैठे हैं कैदखाने से छुड़ाले।” (यसअयाह 42:6 (ऐ जज़ीरों मेरी सुनो। ऐ लोगो जो दूर व नज़दीक के हो कान लगाओ। खुदावंद ने मुझसे कहा कि तू मेरा बंदा है, तुझमें ऐ इसाईल मैं अपना जलाल ज़ाहिर करूंगा। वो फ़रमाता है कि ये तो कम है कि तू याकूब के फ़िक्रों के बरपा करने और इसाईल के बचे हुआँ के फिर लाने के लिए मेरा बंदा हो, बल्कि मैंने तुझको अक्वाम-ए-आलम के लिए नूर बख़शा ताकि तुझसे मेरी नजात ज़मीन के किनारों तक पहुंचे। देख ये दूर से और देख ये उत्तर से और पच्छिम से और ये सीनीम (سینيم) के मुल्क से आएँगे। (यसअयाह 49:1- (13

ऐ मेरी सुन ऐ मेरी उम्मत, ऐ मेरी गिरोह मेरी तरफ़ कान धर कि एक शरीअत मुझसे राइज होगी और मैं अपनी शराअ (शरीअत) को अक्वाम की रोशनी के लिए कायम करूंगा। मेरी नजात चल निकली है, बहरी ममलकतें मेरा इंतज़ार करेंगी और मेरे बाजू पर इनका का तवक्कुल होगा।” (यसअयाह 51:4) “बेगाने की औलाद भी जिन्हों ने अपने आपको खुदावंद से पैवस्ता किया है, उस की बंदगी करें और खुदावंद के नाम को अज़ीज़ रखें और उस के बंदे हों। मैं उनको भी अपनी इबादत-गाह में शादमान करूंगा क्योंकि मेरा घर सब अक्वाम की इबादत-गाह कहलाएगा। (यसअयाह 56:6 (उठ रोशन

हो, कि तेरी रोशनी आई और खुदावंद के जलाल ने तुझ पर तुलूअ किया है। खुदावंद तुझ पर तालए होगा और उस का जलाल तुझ पर नमूदार होगा, अक्वाम तेरी रोशनी में और शाहँ तेरे तुलूअ की तजल्ली में चलेंगे। (60:1 ता 3 वगैरह-वगैरह (

ये तमाम अबवाब इन दो बातों पर जोर देते हैं कि खुदा यहूद और गैर-यहूद दोनों से मुहब्बत रखता है और उस की तमन्ना यही है कि अक्वाम-ए-आलम (दुनियां की कौमे) अहले-इसाईल के जरीये उस का इफ़ान हासिल करें। खुदा ने बनी-इसाईल की तरफ़ अपने अम्बिया भेजे और अब खुदा इसाईल से ये चाहता है कि उस के अफ़राद अम्बिया जादे बन कर अक्वाम आलम (दुनिया की कौमों) में जाएं और उन को खुदा-ए-वाहिद की तरफ़ लाएं। इन तमाम अबवाब में बार-बार इस अम्र पर जोर दिया गया है कि इसाईल खुदा का बंदा और खादिम है, जिसको खुदा ने इस मक्सद की खातिर चुना है कि वो अक्वाम-ए-आलम को खुदा की शरीअत और अहकाम का इल्म दे और रजा-ए-ईलाही की तल्कीन करे।)यसअयाह 42:1 ता 4, 45:8, 49:1 ता 6, 50:4 ता 9, 52:13 ता 53 12:55:5, 56:3:61 बाब, 65 1- 66:12वगैरह-वगैरह (और जिस तरह खुदा ने इसाईल को मिस्र की गुलामी से नजात दी, उसी तरह कौम इसाईल अक्वाम-ए-आलम को शैतान की गुलामी से निकाले। (यसअयाह 45:1 ता 6)

(9)जबूर नवीस जो सय्यदना मसीह से सदीयों पहले वक्तन-फ-वक्तन मुख्तलिफ़ औकात (वक्तों) और ज़मानों में मज़मूर लिखते रहे, बार-बार इसी एक हकीकत पर जोर देते हैं और ज़बूर की किताब का कोई सफ़ा ऐसा नहीं जिसमें बनी-इसाईल पर इस सदाकत को बज़ाहिर नहीं किया गया। मुश्ते नमूना अज़ खरवारे (ढेर में से मुट्ठी भर, थोड़े से नमूने से चीज़ की एहमीय्यत मालूम हो जाती है) ¶ए खुदा तवज्जो दुआ का सुनने वाला है, सारे बशर तुझ पास आएँगे। ए हमारे नजात देने वाले खुदा, तू ज़मीन के सारे किनारों का और उन का भी जो दूर दरिया के बीच में हैं, भरोसा है।” (जबूर 65) “(ए इसाईल) में कौमें तेरी मीरास में दूँगा और अक़सा-ए-आलम (اقصاء عالم) तेरे पास होंगे। (जबूर 2) सारे जहान के लोग सरासर खुदावंद की तरफ़ रुजू लाएँगे और सब कौमों के घराने तेरे आगे (ए खुदा) सज्दा करेंगे क्योंकि सल्तनत खुदावंद की है और अक्वाम आलम के दर्मियान वही हाकिम है।¶ (जबूर 22) ¶तुम जानो कि मैं खुदा हूँ अक्वाम आलम में बुलंद हूँगा।¶ (जबूर 46) ¶ए तू जो दुआ का सुनने वाला है, सारे बशर (इन्सान) तुझ पास आएँगे।¶ (जबूर 65) ¶सारी ज़मीन तुझको सज्दा करेगी और तेरी

मदह-ख्वाँ होगी, वो तेरे नाम के गीत गाएँगे।” (जबूर 66) “अम्मा मिस्र से आएँगे, कूश के बाशिंदे अपने हाथ खुदा की तरफ़ बढ़ाएँगे। ऐ ज़मीन की ममलकतो, खुदा के गीत गाओ।” (जबूर 68) समुंद्र से दूसरे समुंद्र तक और बहर से इंतिहा ज़मीन तक खुदा का हुक्म-जारी होगा। वो जो ब्याबान के बाशिंदे हैं, उस के हुज़ूर झुकेंगे सारी गिरोहें और कबाइल उस की इबादत करेंगी। जब तक आफ़ताब रहेगा उस के नाम का रिवाज होगा। तमाम अक्वाम खुदा को मुबारक कहेंगी। तमाम जहान उस के जलाल से मामूर है।” (जबूर 72) अक्वाम आलम (क्रौमें) खुदा के नाम से डरेंगी, खुदावंद का नाम सीहोन में बुलंद किया जाएगा जब कि उम्मतेँ और ममलकतेँ खुदावंद की इबादत के लिए एक साथ जमा हों।” (जबूर 102) “खुदा हम पर रहम करे और हम को बरकत दे। अपने चेहरे को हम पर जलवागर फ़रमाए, ताकि तेरी राह सारी ज़मीन में जानी जाये और तेरी नजात सब अक्वाम (क्रौमों) में। उम्मतेँ खुश हों कि तू ज़मीन पर की उम्मतेँ की हिदायत करेगा। खुदा हमको बरकत देगा और ज़मीन के सारे किनारे उस का खौफ़ मानेंगे।” (जबूर 67) “ऐ खुदावंद सारी अक्वाम जिनको तूने खल्क किया आयेंगी और तेरे हुज़ूर सज्दा करेंगी और तेरे नाम की बुजुर्गी करेंगी कि तूही वाहिद खुदा है।” (जबूर 86) “खुदावंद के लिए गाओ, उस के नाम को मुबारक कहो, रोज़ बरोज़ उस की नजात की बशारत दो, दुनिया की उम्मतेँ के दर्मियान उस के जलाल को तमाम अक्वाम के दर्मियान उस की अजाइब कुदरतेँ को बयान करो, क्योंकि खुदावंद बुजुर्ग और निहायत सताइश के लायक़ है। दुनिया की उम्मतेँ के माअबूद हीच हैं पर आसमानों का बनाने वाला खुदावंद है। ऐ क्रौमों के घरानों खुदावंद की हशमत व कुदरत को जानो। उस की बुजुर्गी करो, उस की बारगाहों में आओ। खुदावंद को हसनू तकद्दुस के साथ सज्दा करो। ऐ सारी ज़मीन, अक्वाम आलम के दर्मियान ऐलान करो कि खुदावंद सल्तनत करता है।” (जबूर 96 वगैरह-वगैरह (

(10) इस सदाकत पर कि इस्राईल का नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) ये है कि अक्वाम आलम को खुदावंद का इफ़ान बख़्शे। जोर देने के लिए अहदे-अतीक़ की कुतुब के मजमूए में रुत की किताब और यूनाह की किताब का वजूद खुद एक ज़बरदस्त दलील है। रुत की किताब की हीरोइन एक मूआबी औरत है जो गैर-यहूद थी। लेकिन उस का वजूद ये साबित करता है कि अहले-इस्राईल को अपना नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) याद था कि उस की हस्ती का वाहिद मक्सद यही है कि गैर-यहूद को खुदावंद का इल्म बख़्शे।

(11)यूनाह की किताब सय्यदना मसीह से सदीयों पेशतर लिखी गई है। इस का वाहिद सबक़ यही है कि खुदा की नजात और उस का रहम तमाम अक्वाम (क़ौमों) पर हावी है ख्वाह वो यहूद हों या ग़ैर-यहूद। इस किताब में यूनाह दर-हक़ीक़त बनी-इस्राईल की एक मिसाल है। खुदा ने बनी-इस्राईल के सपुर्द ये ख़िदमत की थी कि अक्वाम आलम (क़ौमों) में उस के इफ़ान को फैलाने का और उस की नजात की इशाअत का ज़रीया हो। लेकिन यूनाह की तरह बनी-इस्राईल ने इस ज़िम्मेवारी से इन्कार कर दिया। जिसका नतीजा ये हुआ कि जिस तरह मछली ने यूनाह को निगल लिया, उसी तरह बाबुल ने बनी-इस्राईल को तबाह कर दिया। लेकिन जिस तरह मछली ने यूनाह को ज़िंदा उगल दिया, उसी तरह बनी-इस्राईल बाबुल की कैद से वापिस यरूशलेम आ गए। तब फिर खुदा ने एक और मौक़ा बनी-इस्राईल को दिया, कि वो खुदा-ए-वाहिद की नजात को ग़ैर-यहूद और अक्वाम आलम तक पहुंचाए, लेकिन यूनाह की तरह बनी-इस्राईल ने भी अपना दिल सख़्त कर लिया और इस की बजाय कि वो अपनी ज़िम्मेदारी को महसूस करे, वो अपने दीन और मज़हब के साये में बैठ गए। जिस तरह यूनाह कद्दू की बेल के साये में बैठ गया और इस बात के मुंतज़िर होने लगे कि खुदा ग़ैर-यहूद को तबाह और बर्बाद करे। लेकिन खुदा के दिल पर इस्राईल की ये हालत देखकर चोट लगी, क्योंकि वो चाहता था कि बनी-इस्राईल के दिल में तब्दीली देखे और बनी इस्राईल अपनी ज़िंदगी के वाहिद मक्सद को सर-अंजाम दें और अक्वाम आलम (क़ौमों) को खुदा की नजात की बशारत देने का ज़रीया हों।

(12)अह्दे-अतीक़ की कुतुब के मजमूए की किताब मलाकी नबी में जो सय्यदना मसीह से करीबन पाँच सौ (500) साल पहले लिखी गई, इस सदाक़त की एक झलक हमको दिखाती है और इस में परज़ोर अल्फ़ाज़ में लिखा है, “रब-उल-अफ़वाज फ़रमाता है कि आफ़ताब के तुलूअ से उस के गुरुब तक मेरा नाम अक्वाम आलम (क़ौमों) के दर्मियान बुजुर्ग़ होगा।” (मलाकी 1:11 (

हम कहाँ तक इक़तिबास करते जाएं और किस-किस किताब में से इक़तिबास करते जाएं, हमने बख़ोफ़-ए-तवालत हज़रत हज्जी का (520) क़ब्ल मसीह, योएल नबी, होसेअ नबी (740) क़ब्ल मसीह, दानीएल वग़ैरह की कुतुब का ज़िक़र नहीं किया। लेकिन अह्दे-अतीक़ की कुतुब शुरू से लेकर आख़िर तक ये ज़ाहिर करती हैं कि बनी-इस्राईल के अम्बिया मुर्सल (रसूल) और ज़बूर नवीस सब के सब इस बात की तल्कीन करते हैं कि

अहले-यहूद को खुदा ने सिर्फ इस मक़सद की खातिर अक्वाम आलम में से चुन लिया है कि उनके ज़रीये खुदा का इल्म अकनाफ़ (कन्फ़ کف کی जमा, किनारे, सिम्टें) व एतराफ़ और अकसाए (बहुत दूर) आलम में फैल जाये ताकि तमाम रूए-ज़मीन की अक्वाम (कौमें) खुदा की नजात के नूर से मुनव्वर हो जाएं।

(2)

बनी-इसाईल ने सय्यदना मसीह से दो सौ पचास (250) साल से ले कर एक सौ पचास (150) साल पेशतर तक अपनी इल्हामी कुतुब का तर्जुमा यूनानी ज़बान में किया ताकि इस नस्ब-उल-ऐन (मक़सद) और अपनी भारी ज़िम्मेदारी को पूरा करे। यूनानी ज़बान उन दिनों में तमाम मुहज़ज़ब ममालिक और अक्वाम की ज़बान थी। पस इस तर्जुमे के ज़रीये जो सपटवाजनट (سپٹواجنٹ) कहलाता है, अहले-यहूद ने कोशिश की कि अपने इस फ़र्ज़ से जिसका बार (बोझ) खुदा तआला की तरफ़ से उनके कंधों पर डाला गया था सबकदोश हो (फ़ारिग हो) जाएं और खुदा की नजात का इल्म उन सब पर जाहिर हो जाए जो यूनानी ज़बान समझ सकते या लिख पढ़ सकते थे।

तारीख़ इस बात की शाहिद (गवाह) है कि ये तर्जुमा ग़ैर-यहूद को खुदा के पास लाने में इस क़द्र मोअस्सर साबित हुआ कि इस को इल्हामी तर्जुमा करार दे दिया गया और सय्यदना मसीह के ज़माने में ये तर्जुमा इस क़द्र मक़बूल आम था कि आपके हवारइन (शागिर्द) इस को इस्तिमाल किया करते थे। इस तर्जुमे का वजूद इस बात को साबित करने के लिए काफ़ी है कि अहले-यहूद और उन के अम्बिया की नज़र तंग ना थी, बल्कि वो अपने मज़हब को कुल दुनिया के लिए नूर और बरकत का बाइस ख़्याल करते थे।

(3)

रसूल-ए-अरब हज़रत मुहम्मद जैसे नुक्ता शनास शख्स ने भी इस हकीकत को बख़ूबी समझ लिया, अगरचे उनके पैरुं (मानने वाले) इस नुक्ते को समझने की कोशिश नहीं करते। चुनान्चे कुरआन में आया है कि “मूसा की किताब इमाम और रहमत है।” (सूरह हूद आयत 20) एहमने तौरात नाज़िल की जिसमें हिदायत और नूर है।” (माइदा

आयत 48) «हमने मूसा को किताब दी जो लोगों को राह समझाने वाली और हिदायात और रहमत थी। तू कह अगर तुम सच्चे हो तो तुम अल्लाह की तरफ से कोई ऐसी किताब लाओ जो हिदायत में इन दोनों (यानी तौरात और कुरआन) से बढ़कर हो, तो मैं (मुहम्मद) इसी पर चलने लगूँगा।» (किसस आयात 43, 49) मज्कूर आयात और दीगर कुरआनी आयात से (जिनका इक्तिबास करने से हम परहेज करते हैं) हमको मालूम होता है कि रसूल अरबी अहले-यहूद के साथ इस बात पर मुत्तफिक थे कि यहूदी कुतुब मुकद्दसा कुल दुनिया की पेशवा, रहमत, हिदायत और नूर हैं, जो लोगों को राह समझाने वाली हैं और आँहज़रत इसी वास्ते इन पर अमल पैरा भी थे।

(4)

सय्यदना मसीह की पैदाइश से दो सदीयां पहले बनी-इस्राईल की तारीख में एक ज़माना आया जब यूनानी अहले-यहूद पर हुक्मरान थे। इस ज़माने में यूनानी हुक्मरानों ने सर तोड़ कोशिश की, कि यूनानी तहज़ीब और कल्चर यहूदीयत पर ग़ालिब आ जाए। मुआमलात ने यहां तक तूल पकड़ा कि यहूदीयत और यहूदी मज़हब की जान खतरे में पड़ गई। क्योंकि अहले-यहूद में बहुत से लोग ऐसे थे जो यूनानी तहज़ीब व खयालात से मुतास्सिर हो चुके थे। जिस तरह फ़ी ज़माना हिन्दुस्तान के हिंदूओं और मुसलमानों में बहुत से ऐसे हैं जो मगरिब के आशिक और मगरिबी खयालात के गरवीदा और मगरिबी रसूमात के शैदाई हैं। बईना इसी तरह अहले-यहूद में से बहुत लोग ऐसे थे जो फ़ातेह हुक्मरान यूनानियों के खयालात और रसूमात वगैरह से इस कद्र मानूस हो गए थे कि वो अपने मज़हब और दीन हलका के उसूल को अमलन खैर बाद कह चुके थे। पस हालात जिस तरह दौरै हाज़रा के कट्टर हिंदू या कट्टर मुसलमान अपने दीन व मज़हब की हिफ़ाज़त की खातिर और मगरिब-ज़दा हिंदूओं और मुसलमानों को अपने हलके के अंदर रखने की खातिर मगरिब से बेज़ारी और नफ़रत रखते हैं। बईना इसी तरह मसीह से दो सदीयां पहले अहले-यहूद अपने मज़हब की हिफ़ाज़त की खातिर और अपने दीन के उसूलों को बरकरार रखने के लिए तमाम ग़ैर-यहूदी अक्वाम से बेज़ारी हिक़ारत, कीना और दुश्मनी रखने लग गए। मिसाल के तौर पर हम यहां एक मज़मून “मुसलमान की ज़हनीयत” का जो अहले-हदीस मौरखा 7 अक्टूबर 1932 ई. में शाएअ हुआ था मलहज़ देते हैं, ऐसे मज़ामीन हर रोज़ हिंदू मुसलमान अखबारों में शाएअ होते हैं, जो कनआन के उन यहूदीयों की ज़हनीयत को हम पर आशकारा कर सकते हैं।

“मुसलमानों की हालत इस हद तक पहुंच चुकी है कि जिस कद्र उनमें मगरिबी ताअलीम तरककी पजीर होती जाती है उसी कद्र उनमें मज़हबी एहसास तनज़्जुल पजीर होता जाता है। ऐसा मालूम होता है कि उनका मतमाअ नज़र (मकसद) महज़ ताअलीम इस्लाम की तरमीम और तंसीख करना है और बस जब कोई अम्र शरई नुक्ता निगाह से उनके सामने पेश किया जाता है तो उस को अपनी मन्ज़ूरे नज़र मगरिबी तहज़ीब के खिलाफ़ पाकर निहायत हिकारत आमेज़ लहजे से रद्द कर देने से उनको मुतलक बाक नहीं होता। वो इस्लाम को आबा व अजदादबाप) (दादोंकी रसूम पारीना) पुराना (से ज़्यादा वक़अत नहीं देते। ये रोशन ख़याल मुसलमान शरीअत इस्लाम की पाबंदी को मद्द-ए-नज़र रखे बग़ैर मुस्लिम क़ौम पर नया रंग चढ़ाने और उन में मगरिबी तहज़ीब की नई झलक पैदा करने की कोशिश में सरगर्म नज़र आते हैं। ये खयालात मुसलमानों की किस कद्र खतरनाक ज़हनीयत का इज़हार करते हैं कि बावजूद मुसलमान कहलाने के , अल्लाह और उस के रसूल के नाम से इस कद्र नफ़रत पैदा हो। इस से अहले-मशरिक़ मुतास्सिर हो रहे हैं कि मुआलिम शरीअत और शआइर) कुर्बानियां ,निशानीयां ,रसूम ,फ़राइज़ (इस्लाम उनके दिलों से महव (गुम) होते जाते हैं। आज खुद मुसलमान इस्लाम के तर्ज़े तमद्दुन पर ,इस की ताअलीम पर ,इस के तख़य्युल पर इस के उसूल व फ़रोग पर नुक्ता-चीनी कर रहे हैं। खुदा-न-ख्वास्ता अगर यही हालत और रही तो मुसलमान सफ़ा हस्ती से मिट जाएंगे। अल्लाह ने साफ़ फ़रमाया था कि मुसलमानो तुम अपने इन दोस्त नुमा दुश्मनों से क़तअन दोस्ती पैदा ना करो ,मगर ये इन्ही में जज़ब होते चले जाते हैं। मुसलमानो तुम इस्लाम के सच्चे और पक्के परस्तार बन जाओ और अपना दस्तूर-उल-अमल महज़ कलामउ-ल्लाह और हदीस रसूल अल्लाह को बना लो।”

बईना इसी तरह कनआन के अहले-यहूद को ये खौफ लाहक हो गया था कि मबादा उनके बच्चे रूमी यूनानी तहजीब से मुतास्सिर हो कर अपनी जुदागाना हस्ती को खो बैठें और मुशरिक कुफ़ार में जज़ब ना हो जाएं और उन की “मुहज़ज़ब” सोसाइटी और तर्ज़ मुआशरत और तरीक तमद्दुन को इख्तियार करके मूसवी शरीअत से रुगिरदानी (दुरी) इख्तियार ना कर लें। पस वो हर बात से जिससे यूनानियत की बू आती थी ना सिर्फ़ गुरेज़ करते थे और दूसरों को इस से दूर रहने की ताअलीम देते थे, बल्कि इस से नफ़रत और अदावत रखते थे। नौबत यहां तक पहुंची कि यहूद और गैर-यहूद के दर्मियान एक खलीज (दिवार, रुकावट) कायम हो गई जो इमतीदाद ज़माने से ज़्यादा वसीअ होती गई। ये खलीज (रुकावट) हमको खुदावंद के ज़माने में इन्जील के वर्कों के जरीये दिखाई देती है।

पस इन बैरूनी हालात और तासीरात की वजह से अर्ज़-ए-मुकद्दस कनआन में रहने वाले यहूदी पहली सदी कब्ल अज़ मसीह अपने क्रौम के हकीकी नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) को फ़रामोश कर चुके थे। बनी-इस्राईल के वो शुरका जो यहूदिया और यरूशलेम में रहते थे, गैर-अक्वाम से दुश्मनी और अदावत रखते थे और यह अदावत इस दर्जे तक पहुंच चुकी थी कि वो गैर-यहूद के साथ ख्वाह वो यूनानी थे या सामरी किसी किस्म का ताल्लुक नहीं रखते थे। इस का नतीजा ये हुआ कि यहूदिया और यरूशलेम के रहने वाले यहूदी अपने क्रौमी तअस्सुबात से इस कद्र भर गए कि उन्होंने अपनी कुतुब मुकद्दसा के अहकाम से रुगिरदानी (दुरी) इख्तियार कर ली। और गैर-यहूद में तब्लीग का काम छोड़ दिया। उन्होंने अपने अम्बिया के पैगाम को पस-ए-पुश्त (पीठ पीछे) फेंक दिया और अपने नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) से बे-तअल्लुकी इख्तियार कर ली। चुनान्चे दौरै हाज़रा का यहूदी फ़ाज़िल डाक्टर मॉटी फ़ेअरी कहता है कि :-

“रब्बियों के ज़माने की यहूदीयत गैर-अक्वाम की तरफ़ से बेपर्वा थी। इस ज़माने के यहूदी उनको नफ़रत और हिकारत की निगाहों से देखते थे और गैर यहूद-कुफ़ार को परले दर्जे के जहन्नुमी ख्याल करते थे।”

एक और जगह यही आलिम हमको बतलाता है कि :-

□अगरचे बाअज़ औकात रब्बी कहने को तो कहे देते थे कि जिस तरह बनी-इसाईल इब्राहिम की औलाद हैं उसी तरह गैर-अक्वाम (गैर-क्रौमों) में से जो यहूदी मज़हब कुबूल करते हैं, वो भी इब्राहिम की औलाद हैं। लेकिन अमली तौर पर गैर-अक्वाम को यहूदीयत के हल्का-बगोश होने में सख्त और बे-शुमार मुश्किलात का सामना करना पड़ता था।□

(Hilbert Journal, July 1912.p 767 to 773)

यहूद के सरदार काहिनों ने खुदा की हैकल (बैतुल्लाह) के उस हिस्से को जो गैर-अक्वाम (गैर-क्रौमों) की इबादत के लिए मख्सूस था, तिजारत करने वालों को दे रखा था (मर्कुस 11:15 (जहां तक उनका बस चलता वो किसी क्रौम को वहां फटकने नहीं देते थे। एक दफ़ाअ मुकद्दस पौलुस अपने साथ एक गैर-यहूदी “ट्रोफी मस” (تروفي مس) को जो इफिसुस का रहने वाला था गैर-अक्वाम की जाये मख्सूस में ले गया था तो अहले-यहूद उस पर टूट पड़े थे। (आमाल 21:29 (यूं अहले-यहूद के काइदीन आजम ने खुदा की हैकल की बुनियाद को अपने तब्लीगी फ़र्ज के इन्कार पर कायम कर रखा था। “हैकल के अंदर इस्राईली अहाता और गैर-अक्वाम के अहाते के दर्मियान पत्थर की एक दीवार हद-ए-फ़ासिल (फ़ासले को कायम रखने वाली हद) कायम थी। जिस पर यूनानी और लातीनी जबानों में ये कुतबा लिखा था, किसी गैर-यहूद को अंदर दाखिल होने की इजाज़त नहीं। अगर कोई इस कानून को तोड़ कर हद से तजावुज करेगा तो उस को सज़ा-ए-मौत दी जाएगी, जिसके लिए उस शख्स के सिवाए कोई और जिम्मेदार गिरदाना नहीं जाएगा।

हाँ वो यहूदी जो अर्ज-ए-मुकद्दस कनआन के बाहर रहते थे और जिन का साबिका रात-दिन गैर-यहूद से पड़ता था और जो यूनानी रूमी तहज़ीब से कदरे मुतास्सिर हो चुके थे वो तंग-नज़र ना थे, वो कुदरती तौर पर वसीअ-उल-खयाल वाक़ेअ हुए थे। क्रौमी तअस्सुबात ने उनके दिल से उनकी हस्ती के हकीकी नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) को मिटा नहीं दिया था और वो अपनी कुतुब मुकद्दसा के अहकाम को फ़रामोश नहीं करते थे और गैर-अक्वाम में खुदावंद की मारफ़त का इल्म फैलाने में कोशां रहते थे। पस अर्ज-ए-

मुकद्दस की हद्द के बाहर यहूदी हलके में ऐसे खुदा-तरस लोग मौजूद थे जो अहले-यहूद के वजूद के मक्सद और नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) को पेश-ए-नजर रखते थे। वो इस बात को फ़रामोश नहीं करते थे कि अहले-यहूद का सदीयों से ये नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) रहा था कि उनका वजूद दुनिया के लिए मूजिब-ए-बरकत व नजात है। पस अगरचे सय्यदना मसीह के ज़माने में कनआन के अहले-यहूद गैर-अक्वाम को उन की बुत परस्ती और दीगर कबीह (शर्मनाक, मअयूब, एब वाली) रसूम की वजह से नफ़रत और हिकारत से देखते थे। ताहम इस गए गुजरे ज़माने में भी कनआन के बाहर यहूद का तब्लीगी काम दीगर अक्वाम के दर्मियान निहायत वसीअ पैमाने पर जारी था। (मती 23:15) यहूदी मुअरिख यूसीफ़स की तस्नीफ़ात से भी ये ज़ाहिर होता है कि :-

अहले यहूद-मुरीद करने के लिए खुशकी और तरी ,ज़मीन और समुंद्र का सफ़र किया करते थे। उनके दर्मियान कुतुब मुबाहिसा व मुनाज़रा राइज थीं ,जिनके ज़रीये वो दीगर अक्वाम पर उनके माअबूदों की बतालत (रद्द करना) और बुत-परस्ती की खिदमत और यहूदीयत की सदाकत को साबित किया करते थे।

इबादत खानों में “बेगानों” को जाने की इजाज़त थी और यहूदी मज़हब के तब्लीगी काम के लिए इबादत खानों का इस्तिमाल वसीअ पैमाने पर किया जाता था। जिस पर इन्जील जलील भी नातिक्र (बोलने वाली) है, चुनान्चे लिखा है कि “कदीम ज़माने में हर शहर में जो मूसा की तौरैत की मुनादी करने वाले होते चले आए हैं और वो सबत को इबादत खानों में सुनाई जाती है, ताकि बाक़ी आदमी यानी सब दीगर कौमें जो मेरे नाम की कहलाती है, खुदावंद को तलाश करें। (आमाल 15:17, 21)

प्रोफ़ैसर ऐडवर्ड मेयर (Edward Meyer) का अंदाज़ा है कि :-

असूरी और बाबुल की असीरियों से पहले बनी-इस्राईल के दो ज़ादा कबाइल की कुल तादाद साढ़े सात लाख थी। लेकिन इन वाक़ियात के छः सदीयां बाद जब बनी-इस्राईल सल्तनत-ए-रुम के मातहत थे, अहले-यहूद की तादाद चालीस और सत्तर लाख के दरमियाँ थी। रूमी सल्तनत के आदाद व शुमार से पता चलता है

कि इस सल्तनत की आबादी में एक हजार शख्स में से सत्तर अशखास यहूदी थे।

)Legacy of Israel p.29)

इस आदाद व शुमार से हम कुछ अंदाजा लगा सकते हैं अहले-यहूद ने इन छः सदीयों में गैर-अक्वाम में से कितने लाख अशखास को यहूदीयत का हल्का-ब-गोश कर लिया था।

ये एक तारीखी हकीकत है कि पहली सदी कबल-अज़-मसीह और पहली सदी ईस्वी में यूनानी रूमी दुनिया में इन यहूदी मुबल्लगीन ने अर्ज-ए-मुकद्दस के बाहर तब्लीग का सिलसिला ऐसे वसीअ पैमाने पर जारी कर रखा था कि जब मसीही मुबल्लगीन मसीहीयत की मुनादी के लिए एशया-ए-कोचक और यूनान के शहरों में गए तो वहां उनको गैर-अक्वाम में से यहूदी नव-मुरीदों के गिरोह मिले जिन्होंने अपने मज़ाहिब बातिला को खैर बाद कह रखा था और वह इस्राईल के वाहिद खुदा पर ईमान ले आए थे। यूँ मसीही मुबल्लगीन को एक तैयार ज़मीन मिली जिसमें उन्होंने इन्जील का बीज बोया जिसका नतीजा ये हुआ कि यूनानी रूमी दुनिया की गैर-अक्वाम मवहिद गिरोह यहूदीयत को छोड़कर मुशर्रफ़ ब-मसीहीयत हो गए।

(5)

पस जब अहले-यहूद की तारीख पर नज़र करते हैं तो हम देखते हैं कि मुनज्जी आलमीन (मसीह दुनिया का नजातदहिदा) और आप के हवारइन (शागिर्दों) के ज़माने तक अहले-यहूद सदीयों से ये मानते चले आए थे कि उनकी क़ौम को खुदा ने रुए-ज़मीन की अक्वाम (क़ौमों) में से चुन लिया है ताकि वो अपने रुहानी पैग़ाम के ज़रीये तमाम दुनिया के बरकत पाने का वसीला हों। उनका ये अक़ीदा था कि आस्मान की बादशाहत के कायम होने से ये बरकत अक्वाम आलम (दुनिया की हर एक क़ौम) को मिलेगी और कि इस बादशाहत को कायम करने वाला एक फ़ौक-उल-फ़ित्रत शख्स होगा, जो यहूदी नस्ल में से होगा। उनकी कुतुब मुकद्दसा उस शख्स की आमद की मुंतज़िर थीं। बअल्फ़ाज़े दीगर यहूदी क़ौम की कुतुब मुकद्दसा में इस बात का इंतज़ार पाया जाता है

कि यहूदी मज्हब में से एक मज्हब निकलेगा जो आलमगीर होगा और जिस का क्रियाम मसीह मौऊद की ज्ञात और शख्सियत के साथ वाबस्ता होगा।

(6)

अब सवाल ये पैदा होता है कि क्या ये मुम्किन है कि कलिमतुल्लाह (मसीह) तौरात मुकद्दस और सहाइफ अम्बिया का मुतालआ करके और उन के मुतम्माअ नज़र से वाकिफ़ हो कर और यहूदी मज्हब के नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) को मद्द-ए-नज़र रखकर और अहले-यहूद की सर तोड़ तब्लीगी मसाई से वाकिफ़ हो कर और अपने आपको मसीह मौऊद जान कर जिसकी ज्ञात के साथ अक्वाम आलम (दुनिया की तमाम क्रोमों) की नजात वाबस्ता थी खुद अपनी रिसालत के दायरे को जान-बूझ कर तंग कर देते और ऐसे कोताह बीन होते कि अपने मिशन को सिर्फ़ इस्राईल के घराने की खोई हुई भेड़ों के लिए ही महदूद मुहाल करते? क्या कोई सहीह-उल-अक्ल शख्स ऐसी बात तस्लीम कर सकता है? अगर खुदावंद का ऐसा ख्याल होता तो वो अपने हम-अस्र यहूद से भी ज़्यादा तंग-खयाल तंग-दिल और कोताह बीन होते। लेकिन क्या ये हक़ है कि कलिमतुल्लाह (मसीह) अपने ज़माने के यहूद से भी ज़्यादा तंग-दिल और कोताह बीन वाक़ेअ हुए होते? जिस शख्स ने कुरआन शरीफ़ और इन्जील जलील का सरसरी मुतालआ भी किया है वो फ़ौरन इस सवाल का जवाब नफ़ी (इन्कार) में देगा। इन्जील का सतही मुतालआ भी इस बात को ज़ाहिर कर देता है कि कलिमतुल्लाह के दिल और दिमाग़ पर इस ख्याल का तसल्लुत था कि आप ही वो मसीह मौऊद (वाअदा किये हुए मसीह) हैं जिसके वसीले दुनिया की कुल अक्वाम (क्रोमों) बरकत पाएँगी जो शख्स कनफ़ूशीयस से वाकिफ़ है वो उस को चीन का नबी कहेगा। महात्मा बुद्ध की ज्ञात हिन्दुस्तान से मख्सूस है। हज़रत मुहम्मद साहब को मुहम्मद अरबी है कहा जाता है। लेकिन कलिमतुल्लाह (मसीह) को कोई शख्स गलीली नबी नहीं कहता है। आपको इब्न-ए-आदम ही कहा जाता है जिससे ज़ाहिर है कि आपका पैग़ाम तमाम दुनिया की तमाम अक्वाम के तमाम आदमीयों के लिए नजात और इन्जील यानी “खुशखबरी” का पैग़ाम था।

(7)

इन्जील जलील के मुतालए से ये मालूम हो जाता है कि सय्यदना मसीह के हम-अस्र अहले-यहूद में से जो लोग मसीह-ए-मौऊद के मुंतज़िर थे, उनका भी यही ख्याल था। मसीह मौऊद का वजूद अहले-यहूद और दीगर अक्वाम के लिए नूर और बरकत का मूजिब होगा। उनका ये अक्कीदा था कि खुदावंद कुद्स कुल दुनिया का खालिक है। और खुदा की वहदानीयत इस बात का तक्राज़ा करती है कि खुदा कुल अक्वाम आलम (दुनियां की क़ौमों) का वाहिद परवरदिगार हो। लिहाज़ा वो इस बात के काइल थे कि मसीह की बादशाहत में हर क़ौम और मुल्क के रास्तबाज़ शरीक होंगे। पस जो “खुदातरस मसीह मौऊद के मुंतज़िर थे, उनका ये ईमान था कि वो अपनी “आँखों” से खुदा की “नजात” को देखेंगे, जो खुदा ने मसीह मौऊद के वसीले “सब उम्मताँ के रूबरू तैयार की, ताकि वो अक्वाम आलम को रोशनी देने वाला नूर और इस्राईल का जलाल बने।” (लूका 2:32) ये सब रास्तबाज़ मुंतज़िर इस उम्मीद में थे कि मसीह मौऊद के जरीये ज़बूलोन का इलाका और नफ़्ताली का इलाका, दरिया की राह, यर्दन के पारगीर, यहूद अक्वाम की गलील में जो लोग अंधेरे में बैठे होंगे “वो बड़ी रोशनी” देखेंगे और जो “मौत” के मुल्क और साया में बैठे” होंगे उन पर रोशनी चमकेगी।” (यसअयाह 9:1 ता 2, मत्ती 4:15)

हज़रत यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने जो मसीह मौऊद का पेशरू था, अपने हम-अस्रों को ये जतला दिया था कि “तौबा के मुवाफ़िक़ फल लाओ और अपने दिलों में ये कहना शुरू ना करो, कि इब्राहिम हमारा बाप है क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि खुदा इन पत्थरों से इब्राहिम के लिए औलाद पैदा कर सकता है।” (लूका 3:8) इस का मतलब ये था कि हर क़ौम का आदमी जो सालेह (नेक) आमाल करेगा नजात पाएगा और वही मसीह मौऊद का हकीकी पैरू (मानने वाला) होगा, ना कि वो अपने आपको आल-ए-इब्राहिम कहेगा और अहले-इस्राईल के ज़मुरा में शुमार होगा।

यहां वही सवाल फिर पैदा होता है कि क्या कलिमतुल्लाह (मसीह) अपने इंतज़ार करने वालों और अपने पेशरू हज़रत यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले से भी ज़्यादा तंग-खयाल और कोताह नज़र थे, कि वो अपनी रिसालत को सिर्फ़ अहले-यहूद तक ही महदूद खयाल करते? आपके पेशरू का ये कौल था कि “जो मुझसे ज़ोर-आवर है वो आने वाला है, मैं

उस की जूती का तस्मा खोलने के लायक नहीं।” (लूका 3:16 (इन्जील जलील का हर नाज़िर (मुतालाआ करने वाला) यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के क़ौल की तस्दीक़ करके कहेगा कि यक़ीनन कलिमतुल्लाह (मसीह) अपने हम-अस्र यहूद से अपने इंतज़ार करने वालों से और अपने पेशरू से कहीं ज़्यादा फ़राख-दिली और दोरुबीन वाक़ेअ हुए थे। (मती 9:14, ,11:2 लूका 11:31, 32, मर्कुस 7 बाब, मती 15:12) अहले-यहूद के हक़ीक़ी नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) के इल्म में इब्ने-अल्लाह (मसीह) अपने हम-अस्रों से बहुत दूर निकल गए थे और इस का हज़रत यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को खुद इकरार है। (यूहन्ना 1:30, मती 11:11) कलिमतुल्लाह (मसीह) की नजात का पैग़ाम इस क़द्र वसीअ था कि वो कुल बनी-आदम पर और हर ज़माने और हर मुल्क और हर क़ौम के हर फ़र्द बशर (इंसान) पर हावी था। (यूहन्ना 3:16) वग़ैरह।

फ़स्ल सोम

सय्यदना मसीह के कलिमात-ए-तय्यिबात और आपका तर्ज-ए-अमल

इस सवाल के जवाब में कि आया मसीहीय्यत आलमगीर (पूरी दुनिया के लिए) मज़हब है याकि नहीं मुनज्जी-ए-जहान (नजातदहिंदा मसीह) के अक्वाल और अहकाम आपकी हिदायात और आप का लाएहा अमल और तर्ज-ए-अमल ही फैसलाकुन उमूर हो सकते हैं। अगर कलिमतुल्लाह (मसीह) के कलिमात-ए-तय्यिबात, पैगामात-ए-हिदायात और तर्ज-ए-अमल से ये साबित हो जाए कि आपके ख्याल में आपकी रिसालत सिर्फ अहले-यहूद तक ही महदूद थी, तो मुखालिफ़ीन के एतराजात हक बजानिब (सही) होंगे और हम को इस बात का इकरार करना पड़ेगा कि कलिमतुल्लाह (मसीह) सिर्फ एक यहूदी मुसलेह (सुधारक) थे और दीगर अम्बिया और मुर्सलीन (रसूलों) की मानिंद सिर्फ एक नबी और मुर्सल मिन-अल्लाह थे। लेकिन अगर यह इब्ने-अल्लाह (मसीह) के अक्वाल व अहकाम व प्रोग्राम, पैगाम और तर्ज-ए-अमल से ये साबित हो जाए कि आपके अपने ख्याल में आपकी रिसालत अहले-यहूद और दीगर अक्वाम दोनों के लिए थी, तो सही उसूल तफ़सीर के मुताबिक़ जिनका जिक़र फ़स्ल अक्वल में किया गया है, मसीहीय्यत का दाअ्वा हक़-बजानिब (सही) होगा, कि इस का बानी फ़िल-हकीक़त दुनिया का मुनज्जी है। (यूहन्ना 4:42) और एक ऐसी लासानी और यकता हस्ती है जिसकी नज़ीर रूए-ज़मीन पर नहीं मिलती और अगर ये नतीजा दुरुस्त है, तो खुदावंद के उन अक्वाल का जो उन आयात में दर्ज हैं जिनकी बिना पर एतराज़ किया गया है, वो मतलब हरगिज़ नहीं जो मोअतरिज़ (एतराज़ करने वाले) ने लिया है। बल्कि उन अक्वाल के मुतालिब व माअनी और गर्ज व गाएत कुछ और ही होगी।

सय्यदना मसीह और अह्दे-अतीक की कुतुब

गुजशता फ़स्ल में हम ज़िक्र कर चुके हैं कि कलिमतुल्लाह (सय्यदना मसीह) ने अह्दे-अतीक की कुतुब के गहवारे में परवरिश पाई। सय्यदना मसीह ने अपनी कुतुब मुकद्दसा का बचपन ही से मुतालआ किया और खुदा के इरादे और मक्सद और रज़ा-ए-ईलाही की निस्बत मुस्तफ़िसर (मुहक्किक, तहक्कीक करने वाले) रहे। (लूका 2:40 ता आखिर) आपने इन कुतुब के मुतालए को हमेशा हिर्ज-ए-जाँ बनाया (बहुत अज़ीज समझना, बेहद एहतियात से रखना) और दुख मुसीबत और तक्लीफ़ में यही कुतुब आपकी तसल्ली का बाइस थीं। (ज़बूर 43:5, व मती 26:28, ज़बूर 6:4, 42:6 व युहन्ना 12:27, ज़बूर 22:2 व मती 27:46, ज़बूर 31:5 व लूका 23:46 वगैरह) आपका इल्म इस कद्र वसीअ था कि आप इन कुतुब की एक-एक बात से वाकिफ़ थे और अपनी ताअलीम में बीसों (20) दफ़ाअ आपने इन कुतुब के वाकियात व अश्खास का ज़िक्र किया। (यसअयाह 51:17, यूहन्ना 18:11, मती 26:39, हबक्कूक 2:11, व लूका 19:40, ज़बूर 6:8 व मती 7:23, ज़बूर 147:9, लूका 12:24, यर्मियाह 22:5, व मती 23:38, ज़बूर 118:26, व मती 23:39, होसेअ 10:8, लूका 23:30, ज़बूर 91:13, व लूका 10:19, यसअयाह 6:9, लूका 8:10, यसअयाह 14:13, व लूका 10:15, मीकाह 7:6, व लूका 12:53, यसअयाह 19:2, व लूका 21:10, मती 6:29, 12बाब आयात 3, 40, 42, 23:35, लूका 4 बाब, 27, 17 26, 29, यूहन्ना 8:40 वगैरह-वगैरह)

मज़कूर बाला हवालेजात इस बात को जाहिर करने के लिए काफ़ी हैं कि सय्यदना मसीह कुतुब अह्दे-अतीक और सहफ़-ए-अम्बिया से कमा-हक्का वाकिफ़ थे। आप इन कुतुब को उन निगाहों से नहीं पढ़ते थे जिनसे आपके हम-अस्र इनका मुतालआ करते थे। कनआन के यहूद के लिए ये कुतुब शराअ (शरीअत) और ईलाही अहकाम का फ़क़त एक मजमूआ थीं। जिनकी शरह और तफ़सीर करना रब्बियों और फ़क़हियों का काम था। सिकंदरिया के यहूद के नज़दीक ये कुतुब पोशीदा और मख़फ़ी (छिपी) राज़ों का एक मजमूआ थीं। जिनको वो अपने फ़लसफ़ियाना नज़रियों के मुताबिक़ समझना और लोगों को समझाना चाहते थे। लेकिन कलिमतुल्लाह (सय्यदना मसीह) की नज़र में ये कुतुब खुदा के साथ रिफ़ाक़त रखने का ज़रीया थीं। फ़क़हा इनमें इल्म-ए-फ़िक्हा के नुक्ते ढूँढ़ते

थे। फिलासफर इनमें अपने फ़िल्सफ़ा का सहारा पाते थे, लेकिन कलिमतुल्लाह (मसीह) इन कुतुब में खुदा के अज़ली इरादों की तलाश करते थे।

ख़िर्द की गुथिया सुलज़ा चुके सब

मेरे मौला मुझे साहिबे जुनून कर।

ईलाही मकासिद से वाकिफ़ हो कर कलिमतुल्लाह (सय्यदना मसीह) रज़ा-ए-ईलाही को पूरा करना अपना फ़र्ज़ अक्वलीन समझते थे। (मर्कुस 12:24 ता आखिर, मत्ती 19:8 वगैरह)

पस कलिमतुल्लाह (सय्यदना मसीह) इस बात से कमा-हक्का वाकिफ़ थे कि खुदा ने क़ौम इस्राईल को चुना है ताकि अक्वाम आलम (क़ौमों) में खुदा की माफ़त का इल्म अकनाफ़े (کف کناف की जमा, अतराफ़) आलम (दुनिया) तक पहुंचाए। आपको ये एहसास था कि आप शरीअते मूसा और सहाइफ़-ए-अम्बिया का नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) हैं। (लूका 4:21) आपने अपनी खिदमत की इब्तिदा में अलल-ऐलान (गवाहों के रूबरू, बे रोक-टोक) यहूदी इबादत खाने में फ़रमाया कि सहाइफ़-ए-अम्बिया आपकी ज़ात में पूरी हुई। आपने आम्मतुन्नास (लोगों) को सरीह (साफ़) अल्फ़ाज़ में बतला दिया कि आप शरीअत और सहाइफ़ अम्बिया को कामिल करने की गर्ज़ से इस दुनिया में आए हैं और फ़रमाया कि आस्मान व ज़मीन टल जाएं लेकिन कुतुब मुकद्दसा का आपकी ज़ाते मुबारका में कामिल होना लाज़िमी और ला-अबदी अम्र है। (मत्ती 5:17 (चुनान्चे अपनी जिंदगी के आखिरी लम्हों में आपने सलीब पर से ये ऐलान फ़रमाया कि आपने सब कुछ कामिल कर दिया। (यूहन्ना 19:30 (आपने खुदा के अज़ली इरादे और मक्सद को पूरा करने के लिए यहूदी कुतुब मुकद्दसा में उन तमाम उमूर को यकसर खारिज कर दिया जो गैर-यहूद को खुदा के पास आने की राह में हाइल थे, ताकि यहूद और गैर-यहूद और कुल बनी-नूअ इन्सान खुदा की नजात से बहरावर होकर खुदा की आलमगीर बादशाहत के वारिस हो जाएं।

सय्यदना मसीह की ताअलीम की बुनियाद

सय्यदना मसीह की ताअलीम की असास (बुनियाद) ये हैं कि खुदा कुल बनी-नूअ इन्सान का बाप है और कुल जहान के इन्सान एक दूसरे के भाई हैं। चुनान्चे आपने इस हकीकत पर निहायत जोर दिया। (मती 7:21 वगैरह) सिर्फ पहाड़ी वाअज़ में आपने खुदा को 7 दफ़ाअ “बाप” के नाम से मौसूम किया है। आपने ये ताअलीम दी कि खुदा जो हमारा बाप है वो रब-उल-आलमीन और दुनिया का परवरदिगार है उस की ज़ात मुहब्बत है और उस की लाज़वाल मुहब्बत ये गवारा नहीं करती कि दुनिया का कोई फ़र्द बशर (इन्सान) भी ख्वाह वो किसी क़ौम या नस्ल का हो नजात से महरूम रह जाये। (यूहन्ना 3:16 वगैरह) पस कलिमतुल्लाह की ताअलीम के मुताबिक़ खुदा की मुहब्बत और अब्बुयत परवरदिगारी और नजात किसी खास क़ौम, मुल्क, तबका, नस्ल, कबीला, मिल्लत या फ़र्द तक ही महदूद नहीं बल्कि वो तमाम दुनिया पर बिला किसी इम्तियाज़ के हावी है। (मती 5 बाब 44 आयत ता आखिर वगैरा) पस जब आँखुदावंद की ताअलीम की बुनियाद ही ऐसी है तो सही उसूल-ए-तफ़सीर के मुताबिक़ कोई शख्स ये नहीं कह सकता कि सय्यदना मसीह की निगाह सिर्फ़ अहले-यहूद तक ही महदूद थी क्योंकि ये आलमगीर ताअलीम इन्जील की किसी एक आयत पर ही मबनी नहीं, बल्कि इन्जील के रग व रेशे में और हर सफ़हे में पाई जाती है और इस के बगैर इन्जील की ताअलीम का तारो पोद (तानाबाना) बिखर जाता है।

कलिमतुल्लाह (सय्यदना मसीह) ने हमको ये सिखलाया है कि खुदा दुनिया के हर फ़र्द बशर (इन्सान) से लाज़वाल मुहब्बत करता है। आपने फ़रमाया कि तुम “अपने दुश्मनों से मुहब्बत रखो ताकि तुम अपने आस्मानी बाप के बेटे ठहरो क्योंकि वो अपने आफ़ताब (सूरज) को बर्दों (बुरों) और नेकों दोनों पर चमकाता है और रास्तबाज़ों और नारास्तों दोनों पर मेह (पानी) बरसाता है। लाज़िम है कि तुम भी सब बनी-नूअ इन्सान से कामिल मुहब्बत रखो जिस तरह तुम्हारे आस्मानी बाप की मुहब्बत कामिल है। (मती 5 बाब) खुदा की मुहब्बत हर तरह की फ़िर्काबंदी और हर फ़िस्म के इम्तियाज़ से बुलंद व बाला है, जिस तरह खुदा एक है, इसी तरह बनी-आदम एक हैं और एक दूसरे के आज़ा (हिस्सा) हैं। (रोमीयों 12 बाब वगैरह) अगर खुदा एक है तो वो सब का सुल्तान और सब के साथ यकसाँ मुहब्बत रखने वाला है। कलिमतुल्लाह (सय्यदना मसीह) की ये

मुहय्यिरुल-उकूल (अकूलों को हैरान करने वाली) ताअलीम दुनिया की काया पलट देने वाली ताअलीम है। (रोमीयों 5:6, 8 (हर फ़र्द बशर (इन्सान) काबिल-ए-क़दर और वक़अत हस्ती है। (मती 5 बाब वगैरह) इस ताअलीम के मुताबिक़ अहले-यहूद को गैर-यहूद पर फ़ौक़ियत हासिल नहीं और ना मख़्तून को गैर-मख़्तून पर किसी किस्म की फ़ज़ीलत हासिल है। गुलाम और आज़ाद की तमीज़ उठ गई। (कुलस्सियों 3:11, रोमीयों 10:12,1 कुरिन्थियों 12:13, गलतीयों 5:6 वगैरह) क्योंकि “वही सब का खुदावंद है और जो कोई खुदावंद का नाम लेगा नजात पाएगा। (रोमीयों 10:12) उसूल उखुव्वत व मसावात (भाईचारा और बराबरी) मसीहीय्यत की रूह-रवाँ में कुल बनी-नूअ इन्सान ख्वाह वो किसी मुल्क और क़ौम और नसल के हों, एक खुदा के एक ख़ानदान के अफ़राद हैं जो खुदा को बाप कहते हैं। (मर्कुस 14:36, रोमीयों 8:15, गलतीयों 4:6 वगैरह (

पस जब मुनज्जी-आलमीन (मसीह नजात-दहिंदा) की ताअलीम के बुनियादी उसूल आलमगीर (पूरी दुनिया के लिए) हैं तो सही उसूल-ए-तफ़सीर के मुताबिक़ जिसका ज़िक्र फ़स्ल अव्वल में किया गया है लाज़िम है कि उन आयात की जो एतराज़ की बिना (बुनियाद) हैं इस तौर पर तफ़सीर की जाये जो कलिमतुल्लाह की ताअलीम के मुताबिक़ हो, क्योंकि ये ताअलीम किसी एक आयत या दस बीस पचास आयत पर मुन्हसिर नहीं, बल्कि आपकी ताअलीम के उसूल ही आलमगीर थे। कलिमतुल्लाह के मज़हब की आलमगीरी इन्ज़ील के रग व रेशे में पाई जाती है। मसलन पहाड़ी वाअज़ में क्या शैय है जो यहूदी मज़हब या किसी दूसरी क़ौम के साथ मुख़तस हो। “खुदावंद की दुआ” तमाम बनी-नूअ इन्सान की ज़रूरीयात का खुलासा है “बरकात (मती 5 1 ता 9) कुल नूअ इन्सान पर हावी हैं। खुदा और इन्सान के साथ मुहब्बत रखना, इलाही अबुयित, इन्सानी उखुव्वत व मसावात (भाईचारा व बराबरी) के उसूल हैं बैन-उल-अक़वामी उसूल हैं जो कुल आदमज़ाद पर हावी हैं। कलिमतुल्लाह (मसीह) ने जिस उसूल की भी तल्कीन फ़रमाई उस पर सतही निगाह भी डालो तो कोई बात ऐसी ना पाओगे जो किसी एक क़ौम के लिए और दूसरी अक़वाम (क़ौम) पर इस का इतलाक़ ना होता हो।

पस जब ये अम्र मुसल्लमा है कि कलिमतुल्लाह की ताअलीम के उसूल किसी खास मुल्क या क़ौम या ज़माने के साथ मुख़तस नहीं तो ये दरहकीक़त इस अम्र का एतराफ़ है कि आपकी ताअलीम आलमगीर (पूरी दुनिया के लिए) है। क्योंकि जिस उसूल का ताल्लुक़ तमाम बनी-नूअ इन्सानी के साथ हो, उस में किसी एक क़ौम को दूसरी

अक्वाम पर तर्जिह नहीं हो सकती, बल्कि तमाम अक्वाम (क्रोमें) इस में यकसाँ तौर पर शामिल होती हैं और वो उसूल तमाम ममालिक वाजमिना और अक्वाम के वास्ते होते हैं।

हमने ऊपर लिखा है कि मसीहीय्यत की आलमगीरी इन्जील मुकद्दस की किसी एक आयत या मुंतशिर आयात पर मबनी नहीं। अगर हम इस आलमगीरी के सबूत में आयात को दर्ज करने लगे तो हम को बेशुमार आयात दर्ज करनी होंगी और हमारी किताब के सफ़े के सफ़हे भर जाएंगे। अगर नाज़रीन में से किसी को शक हो तो वो खुद इस नुक्ता-ए-नज़र से इन्जील शरीफ़ की आयात को नक़ल करके हमारी बात की तस्दीक कर सकता है।

सफ़ीना चाहिए इस बहर-ए-बे-कराँ के लिए

हकीकत तो ये है कि मसीहीय्यत की आलमगीरी इन्जील के तारो पोद में पाई जाती है। सलीब पर का कुतबा यूनानी, लातीनी और इब्रानी ज़बानों में लिखा गया था। (लूका 23:38) ये एक तम्सील है जिससे हम मालूम कर सकते हैं कि सलीब तमाम क्रोमों के लिए नजात की राह है। पहली तीनों इंजीलें उन तीनों अक्वाम के लिए लिखी गई हैं जिनकी ज़बानों में सलीब पर का कुतबा था। मुकद्दस मती की इन्जील इब्रानियों की खातिर लिखी गई ताकि उन पर ये साबित हो जाए कि सय्यदना ईसा ही उनका मसीह मौऊद है। जिसकी इब्रानी क्रोम मुद्दत से मुंतज़िर थी। मुकद्दस मर्कुस की इन्जील रुम में लातीनी नस्ल के अक्वाम के लिए लिखी गई जिसमें आँखुदावंद की वो तस्वीर मौजूद है जो बिलआखिर सलतनत-ए-रूम को सय्यदना मसीह के क़दमों में ले आई। मुकद्दस लूका की इन्जील यूनानियों के लिए लिखी गई और इस का मुसन्निफ़ खुद गैर-अक्वाम में से मुशर्रफ़ बह मसीहीय्यत हुआ था और उस की तस्नीफ़ात ज़ाहिर करती हैं कि सय्यदना मसीह ना सिर्फ़ क्रोम यहूद के मसीह मौऊद थे, बल्कि दुनिया के मुनज्जी (नजातदहिंदा) थे। मुकद्दस यूहन्ना की इन्जील में जो कलिमतुल्लाह (मसीह) की ताअलीम दर्ज है उस का किसी एक क्रोम और बिलखुसूस क्रोम यहूद से कोई खास वास्ता नहीं। इस इन्जील के पहले बाब में दर्ज है कि मसीह खुदा का कलाम है और उस की शख़िसयत तमाम कायनात और खलफ़त का मब्दा, मर्कज़ और इंतिहा है। इस इन्जील में साफ़ तौर पर वाज़ेह कर दिया गया है कि मसीहीय्यत का पैग़ाम आलमगीर (पूरी दुनिया के लिए) पैग़ाम है और सय्यदना मसीह की शख़िसयत कुल नूअ इन्सान की पनाह-गाह।

आब व दाना, रोशनी और ज़िंदगी है वो कुल आलम की नजात का दरवाज़ा है। (यूहन्ना 10:9 (वो दुनिया का नूर है। (यूहन्ना 8 12, 1:9, व यसअयाह 49:6, यूहन्ना 9:5, 12:46 (वो ज़िंदगी की रोटी है। (यूहन्ना 6:35, (6:51वो आब-ए-हयात है। (यूहन्ना 4:10, 7:27 (वो ज़िंदगी का सरचश्मा है। (यूहन्ना 1:4, 11:25, (14:6वो तमाम अक्वाम-ए-आलम के उन लोगों को दावत देता है जो शैतान की गुलामी में तारीकी और जुल्मत में पड़े भूके और प्यासे मर रहे हैं। (यूहन्ना 6 53, 7:37 वगैरह (

आफ़ताब आमद दलील आफ़ताब

गर्दलीलियात बाईदअज़वे रू मताब

सय्यदना मसीह का लाएहा अमल

जब हम इन्जील शरीफ़ को पढ़ते हैं तो हम पर ये वाज़ेह हो जाता है कि इब्तिदा ही से सय्यदना मसीह की ये दिली-ख्वाहिश थी कि दुनिया की तमाम अक्वाम खुदा की बादशाहत में शामिल हो जाएं। चुनान्चे इन्जील में वारिद है कि शैतान ने सय्यदना मसीह की इस ख्वाहिश को मद्द-ए-नज़र रख कर आपके सामने ये आजमाईश पेश की और कहा, तू चाहता है कि तू दुनिया की अक्वाम (कौमों) को खुदा के लिए हासिल करे। आ. मैं तुझको इस मक्सद को हासिल करने का तरीका बतलाऊं। अगर तू उन वसाइल और ज़राए को इस्तिमाल करे जो मैं तुझे बताऊँगा तो अक्वामे आलम (दुनियां की कौमों) तुझ पर ईमान ले आर्येंगी। लेकिन खुदावंद ने शैतानी तरीकों और वसीलों को इस्तिमाल करने से इन्कार कर दिया। (मत्ती 4:8 ता 10) आप दुनिया की कुल अक्वाम (कौमों) को खुदा के वास्ते हासिल करना चाहते थे। आपके दिल में ये ज़बरदस्त ख्वाहिश मौजूद थी कि अक्वाम-ए-आलम खुदा की बादशाहत में शरीक हो जाएं, लेकिन आप इस आला तरीन मक्सद को हासिल करने के लिए शैतानी ज़राए इस्तिमाल नहीं करना चाहते थे। बल्कि सिर्फ़ आला तरीन वसाइल के ज़रीये खुदा की बादशाहत को अक्वाम आलम (दुनियां की कौमों में) में कायम करना चाहते थे। पस आपने सलीब का रास्ता इख्तियार फ़रमाया और अलल-ऐलान कहा कि, इब्न-ए-आदम इसलिए नहीं आया कि खिदमत ले, बल्कि खिदमत करे और अपनी जान बहुतेरों के बदले में फ़िदिये में दे। (मत्ती 20:28)

(2)

सय्यदना मसीह ने अपनी खिदमत की इब्तिदा ही में अपना लाएहा अमल यहूदी और दीगर अक्वाम (क्रौमों) के सामईन (सुनने वालों) के सामने अहदे-अतीक के उन अल्फाज़ में पेश किया, जहां मसीह मौऊद की निस्बत लिखा है कि, वो अहले-यहूद और दीगर अक्वाम (क्रौमों) के लिए रसूल होगा। यहूदी कुतुब-ए-मुकद्दसा में मसीह मौऊद की रिसालत के लिए फ़ेअल मुस्तक़बिल (आइन्दा आगे आने वाले वक़्त के तौर पे) इस्तिमाल किया गया था, क्योंकि ये कुतुब आँखुदावंद की आमद की मुंतज़िर थीं। लेकिन खुदावन्द-ए-आलमीन इन अल्फाज़ का इक्तिबास करते वक़्त मुस्तक़बिल फ़ेअल की बजाए फ़ेअल हाल (मौजूदा वक़्त के तौर पर) इस्तिमाल करते हैं। चुनान्चे नासरत के इबादत खाने में इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने फ़रमाया, खुदावंद की रूह मुझ पर है इसलिए कि उसने मुझे गरीबों को खुशख़बरी देने के लिए मसह किया है। उसने मुझे भेजा कि कैदीयों को रिहाई और अँधों को बीनाई पाने की खबर सुनाऊँ। कुचले हुआँ को आज़ाद कर दूँ और खुदावंद के साल मक्बूल की मुनादी करूँ। खुदावंद (मसीह) ने अहद-ए-अतीक की किताब के इन अल्फाज़ का इक्तिबास करके फ़रमाया कि, “आज ये नविश्ता तुम्हारे सामने पूरा हो गया है।” (लूका 4:18 ता 21) दौरान तक़रीर में कलिमतुल्लाह (मसीह) ने उन ग़ैर-यहूद मर्दों और औरतों का ज़िक्र किया, जिन्हों ने बनी-इस्राईल के अम्बिया के ज़रीये बरकत पाई थी। आपने फ़रमाया, “एलियाह के दिनों में बहुत सी बेवा औरतें इस्राईल में थीं, लेकिन एलियाह (इल्य़ास) उनमें से किसी के पास ना भेजा गया (मगर ग़ैर-यहूद) मुल्क सैदा के शहर सारपत में एक (ग़ैर-इस्राईली) बेवा औरत के पास। इलीशा नबी के वक़्त में इस्राईल के दर्मियान बहुत से कौड़ी थे, लेकिन उनमें से कोई पाक-साफ़ ना किया गया। ऍसिवाए नोमान के जो सूर्यानी था।” (लूका 4:26 ता 27) कलिमतुल्लाह (मसीह) के सामईन (सुनने वाले) इन माअनी-खेज़ मताइन (तम्बीह) को सुनते ही गुस्से से भर गए और उन्हीं ने उठकर उस को शहर से बाहर निकाल दिया।” (लूका 28:4 (

मुनज्जी आलमीन का तर्ज़-ए-अमल

जब अहले-यहूद ने इब्ने-अल्लाह (मसीह) को शहर-बद्र कर दिया तो आप ने किसी यहूदी शहर में रिहाइश इख्तियार ना की, बल्कि “आपने ग़ैर-क्रौमों की गलील” को

अपना वतन बनाया (मत्ती 4:15) इसी गलील में (जहां गैर-यहूद कसत से आबाद थे) कलिमतुल्लाह (मसीह) ने अपनी सह साला खिदमत का ज्यादा हिस्सा सर्फ किया। कफर्नहूम में खुदावंद ने एक रूमी सूबेदार के खादिम को शिफा बखशी।) मत्ती 8:5- (13

वहां से खुदावंद (मसीह) “सूर और सैदा” की सरहदों में तशरीफ ले गए। (मर्कुस 7:24) जहां आपने आयात जेर-ए-बहस के मुताबिक एक सूर फीनीकी औरत की लडकी को शिफा इनायत फरमाई। (मत्ती 15:28) इस जगह कलिमतुल्लाह (मसीह) ने कई माह सर्फ किए। आपने कम अज कम मौसमे गर्मा के सब महीने यहां खिदमत की, क्योंकि सिर्फ इसी मौसम में इस जगह सफर किया जा सकता था। इस इलाके के जितने बाशिंदे आपके पास आए उनको मुनज्जी-ए-आलम (दुनिया के नजात-दहिंदा) ने ताअलीम दी और उन के मरीजों (बीमारों) को तंदुरुस्त किया।

इन तमाम महीनों के बाद “वो सूर की सरहदों से निकल कर सैदा की राह से दिकपौलस की सरहदों में होता हुआ गलील की झील पर पहुंचा।” (मर्कुस 7:30) जो लोग गैर-यहूदी इलाके दिकपौलस से आपके पीछे हुए वो भी आपकी ताअलीम से बहरावर हुए। (मत्ती 4:25) आपने इस इलाके के गैर-यहूदी बीमारों को भी शिफा बखशी। (मर्कुस 5:1 ता 21)

इसी तरह अदूमिया से और यर्दन के पार सूर और सैदा के गैर-यहूद इलाके के आस पास से एक भीड़ ये सुन कर कहने लगी की, वो कैसे बड़े काम करता है उस के पास आई। पस उसने अपने शागिर्दों से कहा, भीड़ की वजह से एक छोटी कश्ती मेरे वास्ते तैयार रहे, ताकि वो मुझे दबा ना डालें। क्योंकि उसने बहुत लोगों को अच्छा किया था। चुनान्चे जितने लोग सख्त बीमारीयों में गिरफ्तार थे उस पर गिरे पड़ते थे कि उसे छुलें।” (मर्कुस 3:8 ता 9 (

इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने ना सिर्फ अदूमिया और यर्दन पार के गैर-यहूद इलाकों में खिदमत की, बल्कि आप सामरिया में भी गए। (लूका 9:52) और वहां के बाशिंदों को अपनी नजात के पैगाम से सर्फराज फरमाया। (यूहन्ना 4:4) और बहुत से सामरी उस पर ईमान ले आए। वो उस के पास आए और दरख्वास्त करने लगे कि हमारे पास रह। चुनान्चे वो दो रोज वहां रहा और उस के कलाम के सबब और भी बहुतेरे उस पर ईमान

लाए “और इकरार किया कि, ये फ़िल-हकीकत दुनिया का मुनज्जी (नजात देने वाला) है।” (यूहन्ना 4:39-42)

यक-दम अज़ बहर-ए-ख़ुदा दरबर मा बह नशीनी
दिलगम दीदा बदीदार तो गुलशन दारैम

एक और दफ़ाअ जब ख़ुदावंद ने दस (10) कौड़ी अच्छे किए तो उनमें से एक ये देखकर कि मैं शिफ़ा पा गया, बुलंद आवाज़ से ख़ुदा की बड़ाई करता हुआ लौटा और मुँह के बल यस्अ (ईसा) के पांव पर गिर कर उस का शुक्र करने लगा और वो सामरी था। यस्अ ने जवाब में कहा, क्या दसों (10) पाक साफ़ ना हुए थे, फिर वो नौ (9) कहाँ हैं? क्या सिवा इस परदेसी के और ना निकले जो लौट कर ख़ुदा की तम्जीद करते। फिर उसने उस से कहा, उठकर चला जा तेरे ईमान ने तुझे अच्छा किया है।” (लूका 17:15 (मुनज्जी-आलमीन (नजा-दहिंदा मसीह) ने इस सामरी की तारीफ़ की और उन नौ (9) यहूदी कोठीयों की नाशुकी पर इज़हार इतासफ़ (अफ़सोस) फ़रमाया।

पस जब हम इब्ने-अल्लाह (मसीह) के तर्ज़-ए-अमल पर गौर करते हैं तो हम इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि अगर आपने अपनी तब्लीगी मसाई (कोशिशों) को एक हद तक अहले-यहूद तक महदूद रखा, तो ये किसी खास मक्सद को निगाह रखकर किया। हम आगे चल कर देखेंगे कि वो मक्सद क्या था। लेकिन इस मक्सद का ताल्लुक यहूदी कौमी तअस्सुबात से हरगिज़ ना था। साथ ही आपने किसी ग़ैर-कौम के शख्स को अपना जाँ-फ़जाँ (दिल खुश करने वाला) पैग़ाम पहुंचाने से दरेग ना किया। (मत्ती 8:13, 15:28 वग़ैरह) बल्कि हक़ तो ये है कि जहां आपने ख़ुदा की बादशाहत को फैलाने का मौक़ा पाया आपने वहीं काम शुरू कर दिया। ग़ैर-अक्वाम में काम और ख़िदमत करने का ख़्याल आपके ज़हन में शुरू ही से था।)मत्ती 10:18, यूहन्ना 10:16,12:23 व 32 वग़ैरह (आपने अपने शागिर्दों को वाज़ेह अल्फ़ाज़ में बतला दिया कि उनकी तब्लीगी मुहिमें उस की अपनी मसाई (कोशिशों) से बहुत ज़्यादा वसीअ होंगी।)यूहन्ना 4:38,

(14:12और साथ ही आपने इस का सबब भी उन पर ज़ाहिर कर दिया और फ़रमाया कि ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-कौमों) में तब काम वसीअ पैमाने पर होगा, जब आप इस मुख्तसर ज़िंदगी को ख़त्म करके ज़मान व मकान की कुयूद (क़ैद) से आज़ाद हो कर उन के साथ रहेंगे। (यूहन्ना 12:24) ग़ैर-अक्वाम में इस मुक़द्दस ख़िदमत को सरअंजाम देने के लिए

आपने अपने शागिर्द गैर-अक्वाम (गैर-क्रौमों) में रवाना भी किए।) मत्ती 28:19, मर्कुस 16:15, लूका 24:47 ता आखिर, यूहन्ना 20:21 आमाल 1:8 वगैरह (क्योंकि आपको इस बात का एहसास था कि आपकी रिसालत सिर्फ यहूद के लिए ही नहीं।) मत्ती 8:12, 11:20, 12:39, 21:41, 22:7, 23:34, 24:2, लूका 13:28 वगैरह (

अब सवाल ये पैदा होता है कि अगर सय्यदना मसीह का ये ख्याल था कि आपकी रिसालत अहले-यहूद तक ही महदूद है तो आपने क्यों गैर-अक्वाम (गैर-क्रौमों) के इलाकों के रहने वालों और सामरिया के बाशिंदों को क्यों ताअलीम दी, उनके बीमारों को क्यों शिफा बख्शी और क्यों उनकी खातिर मौत के मुँह गए? जो अस्थाब अहले-यहूद के खयालात से वाकिफ़ हैं, वो जानते हैं कि अम्बिया-ए-इस्माईल के पैगामात के बावजूद कनआन के यहूद गैर-अक्वाम को निहायत नफ़रत की निगाह से देखते थे। चुनान्चे टीसीटीस (Tacitus) कहता है कि¹ :-

□अहले-यहूद अपने सिवा बाकी तमाम दुनिया को अपना जानी दुश्मन ख्याल करते थे।□

यहूदी आलिम डाक्टर मॉटी फ़ेअरी कहता है कि² :-

□खुदावंद के जमाने के अहले-यहूद गैर-यहूद को नफ़रत , हिक़ारत और इनाद की नज़रों से देखते थे और उन का ये ख्याल था कि गैर-यहूद काफ़िर जहन्नम में डाले जाएंगे ,जहां तारीकी और अंधेरा होगा।□

□हर यहूदी को गैर-क्रौम वाले से मुहब्बत रखनी और उस के यहाँ जाना जायज़ ना था।" (आमाल 10:28) इलावा अर्जी "यहूद सामरियों से किसी तरह का बर्ताव नहीं रखते थे।" (यूहन्ना 4:10 (दोनो अक्वाम (क्रौमें) एक दूसरे की जानी दुश्मन थीं। (लूका

¹ History .v.5.

² Judaism & Paul p.56

9:51 ता 56) किसी शख्स को सामरी कहना एक नाकाबिल-ए-बर्दाश्त गाली थी। (यूहन्ना 8:48 (यहूदी रब्बियों का कौल था कि :-

□जो सामरियों की रोटी खाता है वो सूअर का गोश्त खाता है।□³

□सामरी क्रियामत के रोज मुर्दों में से कभी जिंदा ना होंगे।”⁴

लेकिन मुनज्जी-आलमीन (मसीह नजात-दर्हिदा) ने ना सिर्फ उनको ताअलीम दी बल्कि उनके हाँ गए। उनके साथ रहे। उनके बीमारों को शिफा बख्शी और उन में से बहुतेरे आप पर ईमान भी लाए। खुदावंद ने अपनी खिदमत को यहूद, गैर-अक्वाम और सामरियों तक ही महदद ना रखा, बल्कि आपने बुत-परस्त रोमीयों में भी काम किया। चुनान्चे आपने रूमी फ़ौज के सूबेदार के मफ़लूज खादिम को मोअजज़ाना तौर पर शिफ़ा बख्शी। हर शख्स जिसको तारीख़ से ज़रा भी मस (महारत) है जानता है कि रूमी फ़ातहीन और यहूदी मफ़तूहीन के बाहमी ताल्लुकात किस कद्र कशीदा थे। लेकिन इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने उनमें भी ईलाही मुहब्बत के ज़हूर को दिखाया। आपने रोमीयों, यूनानियों, सामरियों, यहूदीयों वगैरह के दरम्यान खिदमत की और उनको खुदा की निस्बत ताअलीम दी। मुनज्जी-ए-कौनैन (मसीह) को यहूदी तअस्सुबात से ज़रा भी हमदर्दी और वास्ता ना था। इब्ने-अल्लाह की वसीअ नज़र में दुनिया यहूद और गैर-यहूद पर मुश्तमिल ना थी, बल्कि नेक और बद अफ़राद पर मुश्तमिल थी। ख़्वाह वो अफ़राद किसी क़ौम से मुताल्लिक हों। (मत्ती 5:45) यही वजह थी कि आपने फ़रीसियों और फ़किहियों को मुखातब करके फ़रमाया, “मैं रास्तबाज़ों को नहीं बल्कि गुनाहगारों को बुलाने आया हूँ।” (मर्कुस 2:17) अगर इब्ने-अल्लाह अपनी रिसालत को सिर्फ अहले-यहूद तक ही महदद ख़्याल फ़रमाते, तो गैर-यहूद के पास हरगिज़ ना जाते और ना उनको मुरीद बनाते। लेकिन आप का तर्ज़ अमल इस बात को साबित करता है कि आप अपनी

³ Mishna Sebiith V111.10

⁴ Prike Rabbi Elieser .38

रिसालत को तमाम दुनिया के लिए ख्याल करते थे और हर क्रौम और गिरोह के शुरका से मिलते और उन को ताअलीम देकर उन्हें खुदा के कदमों में लाते थे। मुनज्जी-आलमीन (मसीह) की नज़र निहायत वसीअ थी। यही वजह है कि आपने जो नाम अपने लिए तज्वीज़ फ़रमाया वो “इब्न-ए-आदम” था। ये नाम साफ़ जाहिर करता है कि आपको इस बात का पूरा एहसास था कि आपका पैग़ाम किसी खास ज़माने, मुल्क, क्रौम या कबीले के लिए नहीं था, बल्कि कुल बनी-आदम (तमाम इंसानों) के लिए है।

(3)

सय्यदना मसीह की मौत और बनी-आदम की नजात

कलिमतुल्लाह (मसीह) ने अपनी ख़िदमत के आख़िर में एक ऐसी बात की जिससे सब यहूद पर और बिलखुसूस उलमा और रऊसा-ए-यहूद पर ये जाहिर हो गया कि आप यहूद और ग़ैर-यहूद दोनों को एक आँख से देखते थे। इस एक वाक़िये ने कलिमतुल्लाह (मसीह) की किस्मत का फ़ैसला कर दिया और आप को एक हफ़्ते के अंदर अंदर मस्लूब कर दिया गया। चुनान्चे लिखा है कि आप अपनी ज़िंदगी के आख़िरी हफ़्ते में यरूशलेम तशरीफ़ ले गए “और हैकल में दाख़िल हो कर उन को जो हैकल (बैत-उल्लाह) में ख़रीदो फ़रोख़्त कर रहे थे बाहर निकालने लगा और सर्राफ़ों के तख़्ते और कबूतर फ़रोशों की चौकियां उलट दीं और ताअलीम में उनसे कहा कि, क्या ये नहीं लिखा है कि मेरा घर सब क्रौमों के लिए दुआ का घर कहलाएगा? लेकिन तुमने उसे डाकूओं की खोह बना दिया है और सरदार काहिन और फ़कीह ये सुनकर उस के हलाक करने का मौक़ा ढूढने लगेइ” (मर्कुस 11:15) ये जगह जहां ख़रीद व फ़रोख़्त होती थी हैकल का वो हिस्सा था जो ग़ैर-क्रौमों की इबादत के लिए मख़सूस था :-

□ख़ुदावंद के ज़माने के सरदार काहिनों और रऊसा-ए-यहूद ने ये हिस्सा जो ग़ैर-यहूद की इबादत के लिए वक्फ़ था, सौदागरों को देकर ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क्रौमों) से इबादत और परस्तिश करने का हक़ छीन लिया था। ख़ुदावंद ने फ़रमाया कि हैकल का ये

हिस्सा गैर-यहूद की इबादत के लिए मख्सूस था लेकिन तुमने उनके जायज़ हुकूम पर डाका ज़नी की है।⁵

खुदा की हैकल सब क्रौमों के लिए यहूद हों या गैर-यहूद इबादत का घर है। खुदावंद ने हैकल को सौदागरों के माल से साफ़ किया ताकि गैर-यहूद वहां इबादत करें। खुदावंद के इस तर्ज-ए-अमल से रऊसा-ए-यहूद को इस बात का पूरे तौर पर एहसास हो गया कि इस शख्स की ज़िंदगी क्रौम यहूद की हस्ती के लिए खतरनाक है और उन्होंने फ़ैसला कर लिया कि एक आदमी का मरना इस से बेहतर है कि सारी क्रौम हलाक हो। (यूहन्ना 11:50 (और उन्होंने ने मुनज्जी-आलमीन (नजात देने वाले मसीह) को इस वाकिये के चार दिन के अंदर अंदर मस्लूब कर दिया। पस खुदावंद ने अपने खून से इस बात पर मुहर कर दी कि आप यहूद और गैर-यहूद दोनों के नजातदिहंदा थे।

(4)

जब खुदावंद आखिरी दफ़ाअ यरूशलेम में ईद फ़सह के मौके पर तशरीफ़ ले गए तो चंद “यूनानी” आपके शागिर्द फिलिप्पुस के पास आए और उन्होंने दरख्वास्त की कि, “जनाब हम यसूअ को देखना चाहते हैं।”

“ये अशखास अपने हम-वतन शहे आफ़ाक हुकमा-ए-सुक़रात और अफ़लातून की हकीकी औलाद थे। जिनके तहरीरी और ज़बानी अक्वाल नूर और हक़ यानी रब्बना सय्यदना मसीह की तलाश और दीदार के शाहिद) गवाह (थे।⁶

चूँकि फिलिप्पुस एक यहूदी शख्स था और यहूदी तअस्सुबात से मुतास्सिर था और यह अशखास गैर-अक्वाम में से थे। फिलिप्पुस उनको सय्यदना मसीह के पास ले जाने से हिचकिचाया और उस ने एक और शागिर्द इन्द्रियास से इस मुआमले में सलाह और मश्वरा किया लेकिन कलिमतुल्लाह (मसीह) ने इन गैर-अक्वाम को मुलाक़ात का

⁵ Wilson, Problem of the Cross.pp.33-34

⁶ A.B.Bruce, the Training of the Twelve. P.311 2nd edition

शरफ़ बख़्शा और शागिर्दों को फ़रमाया कि आप की सलीब और ज़फ़रयाब क्रियामत के ज़रीये ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क्रौमों) में इन्जील जलील की इशाअत के लिए रास्ता साफ़ हो जाएगा। (यूहन्ना 12:23) और खुदा सैदा की कि इन यूनानियों के ज़रीये भी तू अपने मुकद्दस नाम को जलाल दे ताकि दुनिया पर ज़ाहिर हो जाए कि मेरी मौत से तेरा पाक मक्सद पूरा होगा और दुनिया और बनी-नूअ इन्सान की नजात होगी। (आयत 27, 28) दौरान-ए-मुलाकात में आपकी रुहानी आँखों ने इन्जील की बशारत और दुनिया भर में इस की इशाअत का नज़ारा देखा और अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाया, “वो वक़्त आ गया है कि इब्न-ए-आदम जलाल पाए।” (आयत 23) मुनज्जी-आलमीन (दुनिया के नजातदहिंदा मसीह) ने अपनी हयात और मौत के ज़रीये अहले-यहूद और ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क्रौम) दोनों को एक कर लिया और जुदाई की दीवार को जो बीच में थी, ढा दिया (इफिसियों 2:14) सय्यदना मसीह के ज़माने में इन्सान और इन्सान के दर्मियान बेशुमार जुदाई की दीवारें थीं। आपने अपने उसूल मुहब्बत, उखुव्वत और मुसावात (भाईचारे और बराबरी के उसूल) के ज़रीये और सब से ज़्यादा अपनी सलीबी मौत के ज़रीये इन तमाम दीवारों को बिल्कुल मुनहदिम (खराब, बर्बाद, वीरान) और मिस्मार कर दिया। इन तमाम दीवारों में सबसे मज़बूत और पाएदार दीवार वो थी जो यहूद और ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क्रौमों) के दर्मियान हाइल थी। लेकिन ये दीवार इब्तिदा ही में टूट गई। (आमाल 15 बाब) यहूद और ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क्रौम) मुनज्जी जहान (दुनिया के नजात देने वाले मसीह) की सलीब के सामने एक हो गए। कलिमतुल्लाह (मसीह) की सलीबी मौत ने खुदा की बादशाहत के दरवाज़े को तमाम जहान के गुनेहगारों के लिए खोल दिया। ख्वाह वो गुनाहगार क्रौम के यहूद थे ख्वाह ग़ैर-यहूद (मर्कुस 14:24, मत्ती 20:28, यूहन्ना 10:15) चुनान्चे यूहन्ना रसूल साफ़ और सरीह अल्फ़ाज़ में बतलाता है कि, “यसूअ इस क्रौम यहूद के लिए मरेगा और ना सिर्फ़ इस क्रौम के वास्ते बल्कि इस वास्ते भी कि खुदा के तमाम परागंदा फ़रज़न्दों को जमा करके एक कर दे।” (यूहन्ना 11:52, 1:29 12:32 4:42 वग़ैरह (“वो ना सिर्फ़ अहले-यहूद के गुनाहों का बल्कि तमाम दुनिया के गुनाहों का कफ़ारा है।” (1 यूहन्ना 2:2 रोमीयों 4:25 गलतीयों 1:42:20 , 1 तीमुथियुस 2:6 फिलिप्पियों 2:14 1 पतरस 1:18 वग़ैरह-वग़ैरह (

मुनज्जी आलमीन के कलिमात-ए-तय्यिबात

जब हम कलिमतुल्लाह (मसीह) के कलिमात-ए-तय्यिबात पर नज़र करते हैं तो ये हकीकत हम पर और भी वाज़ेह हो जाती है, क्योंकि आपके ज़रीं अक्वाल आपके लाएह अमल और तर्ज़-ए-अमल पर रोशनी डालते हैं।

मुनज्जी-आलमीन (मसीह) ने अपने शागिर्दों को मुखातब करके फ़रमाया, तुम ज़मीन के नमक हो। तुम दुनिया के नूर हो। (मती 5:13) आपने रूमी सूबेदार के ईमान की तारीफ़ में फ़रमाया, “मैं तुमसे, सच्च कहता हूँ कि मैंने इस्राईल के किसी शख्स में भी ऐसा ईमान नहीं पाया। और मैं तुमसे कहता हूँ कि बहुतेरे (ग़ैर-इस्राईली) पूरब और पच्छिम से आकर इब्राहिम और इज़हाक और याकूब के साथ आस्मान की बादशाहत में शरीक होंगे। मगर बादशाहत के बेटे यानी यहूदी अंधेरे में डाले जाएंगे।” (मती 8:11) कलिमतुल्लाह (मसीह) ने एक ग़ैर-क्रौम को जिसमें बहुत सी बदरूहें निकाली थीं हुक्म देकर फ़रमाया, “अपने लोगों के पास अपने घर जा और उन्हें ख़बर दे कि ख़ुदावंद ने तेरे लिए कैसे बड़े काम किए और तुझ पर रहम किया।” (मर्कुस 5:19) आपने नजात हासिल करने की शर्त बयान करके फ़रमाया, “देखो बाअज़ आखिर (यानी ग़ैर-यहूद) ऐसे हैं जो अक्वल (यानी पसंदीदा क्रौम) होंगे (लूका 13:2) जब आपके सर मुबारक पर इत्र डाला गया तो आपने फ़रमाया, “(तमाम में) जहां कहीं इन्जील मुनादी की जाएगी ये भी यादगारी में किया जाएगा।” (मती 26:13) (इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने अपने रसूलों को आने वाली तक्लीफों से आगाह करते वक़्त फ़रमाया कि “तुम मेरे सबब हाकिमों और बादशाहों के सामने हाज़िर किए जाओगे ताकि उनके और दीगर अक्वाम (ग़ैर-क्रौमों) के लिए गवाही हो।” (मती 10:18) (आपने यरूशलेम की बर्बादी और यहूदीयत की तबाही की निस्बत फ़रमाया कि इस हैकल में “किसी पत्थर पर पत्थर बाकी ना रहगा जो गिराया ना जाएगा।” (मर्कुस 13:2) और इन्जील की इशाअत की निस्बत फ़रमाया कि “ज़रूर है कि सब क्रौमों में इन्जील की मुनादी की जाये।” (मर्कुस 13:10) (आपने अक्वाम आलम (दुनिया की क्रौमों) की तरफ़ इशारा करके फ़रमाया, “अच्छा चरवाहा मैं हूँ, मैं अपनी भेड़ों के लिए जान देता हूँ, (अक्वाम आलम में) मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस (यहूदीयत) के भेड़ खाने की नहीं, मुझे उनका लाना भी ज़रूर है और वह मेरी आवाज़ सुनेंगी। फिर एक ही गल्ला और एक ही चरवाहा होगा।” (यूहन्ना 10:16) (आपने अपनी मौत की तरफ़

इशारा करके फ़रमाया, “जब मैं ज़मीन पर से ऊंचे पर चढ़ाया जाऊँगा तो मैं सबको अपने पास खींचूँगा।” (यूहन्ना 12:32) कलिमतुल्लाह (मसीह) ने पुकार कर फ़रमाया, “मैं दुनिया को मुजरिम ठहराने नहीं बल्कि दुनिया को नजात देने आया हूँ। खुदावंद ने इस दुनिया से रुख्सत होते वक़्त फ़रमाया, “मेरे बाप के घर में बहुत से मकान हैं, मैं जाता हूँ ताकि तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ।” जिससे साफ़ ज़ाहिर है कि आस्मान में ना सिर्फ़ अहले-यहूद के लिए मकान हैं बल्कि अक्वाम आलम (दुनिया की क़ौमों) के मकीनों (रहने वालों) के लिए जगह होगी। इब्ने-अल्लाह (मसीह) की ये आखिरी गुफ़्तगु (यूहन्ना 14 ता 17 अबवाब) में है और इस के एक-एक लफ़ज़ से यही मुतरशशेह (तशरीह करने वाला, टपकने वाला) होता है कि मुनज्जी-आलमीन (मसीह) का यही ख़्याल था कि आप कुल बनी-नूअ इन्सान की नजात के लिए मबऊस हो कर इस दुनिया में आए हैं। आपने फ़रमाया, “मैं नूर हो कर दुनिया में आया हूँ ताकि जो कोई मुझ पर ईमान लाए अंधेरे में ना रहे।” (यूहन्ना 12:46) और फिर फ़रमाया दुनिया का नूर मैं हूँ, जो मेरी पैरवी करेगा वो अंधेरे में ना चलेगा बल्कि ज़िंदगी का नूर पाएगा।” (यूहन्ना 8:13 (जब इब्ने-अल्लाह ने लाज़र को दुबारा ज़िंदा किया तो आपने फ़रमाया, “क्रियामत और ज़िंदगी मैं हूँ, जो मुझ पर ईमान लाता है गो वो मर जाये तो भी वो ज़िंदा रहेगा और जो कोई ज़िंदा है और मुझ पर ईमान लाता है वो अबद तक कभी ना मरेगा।” (यूहन्ना 11:25 (आपने निशान तलब करने वालों के जवाब में ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क़ौमों) को अहले-यहूद पर तर्जीह दी और फ़रमाया नैनवा के ग़ैर-यहूद लोग इस ज़माने के यहूदी लोगों के साथ अदालत के दिन खड़े हो कर उनको मुजरिम ठहराएँगे क्योंकि उन्होंने यूनुस की मुनादी पर तौबा करली और देखो यहां वो है जो यूनुस से भी बड़ा है। दक्षिण की ग़ैर-यहूद मलिका इस ज़माना के यहूदी लोगों के साथ अदालत के दिन उठकर उनको मुजरिम ठहराएगी।” (मती 12:41 (खुदावंद ने अपने पेशरू यूहन्ना इस्तिबागी के हम-आवाज़ हो कर अहले-यहूद को जतला दिया कि वो आले इब्राहिम होने पर नाज़ाँ ना हों (फ़ख़्र ना करें) और फ़रमाया कि इब्राहिम के फ़र्जन्द कहलाने के मुस्तहिक सिर्फ़ वही लोग हैं जो इब्राहिम का सा ईमान रखते हैं, ख़्वाह वो किसी नस्ल के हों। (यूहन्ना 8:40 (

(2)

कलिमतुल्लाह (मसीह) ने जिन तम्मिसलों के ज़रीये ताअलीम दी उनसे ये ज़ाहिर है कि आपको ये हस्सास (एहसास) था कि आपका पैग़ाम कुल दुनिया के लिए है। एक

दफ़ाअ का ज़िक्र है कि लोग सय्यदना मसीह से निशान तलब करने लगे। आपने जवाब में इर्शाद फ़रमाया कि, “यूनाह (यूनुस) के निशान के सिवा कोई और निशान उनको ना दिया जाएगा। आप का मतलब ये था कि जिस तरह एक यहूदी नबी यूनाह के ज़रीये नैनवा मुल्क के ग़ैर-अक्वाम बाशिंदों ने नजात हासिल की थी, उसी तरह आपके और आपके यहूदी शागिर्दों की मुनादी के ज़रीये ग़ैर-अक्वाम नजात हासिल करेंगी। चुनान्चे आपने इस मतलब को यूं ज़ाहिर किया “क्योंकि जिस तरह यूनाह (युनुस) नैनवा के लोगों के लिए निशान ठहरा, उसी तरह इब्न-ए-आदम (मसीह) भी इस ज़माने के लोगों के लिए निशान ठहरेगा। दक्षिण की मलिका इस ज़माने के आदमीयों के साथ अदालत के दिन उठकर उनको मुजरिम ठहराएगी।... नैनवा के लोग इस ज़माने के लोगों के साथ अदालत के दिन खड़े हो कर इनको मुजरिम ठहराएँगे, क्योंकि उन्होंने यूनाह की मुनादी पर तौबा कर ली।” (लूका 11 बाब (

खमीर की तम्सील (मत्ती 13:33) से ज़ाहिर है कि कलिमतुल्लाह (मसीह) का ये ख्याल था कि आप का पैगाम खमीर की तरह तमाम आलम में सरायत कर जायेगा। जब आपकी ज़बान हक्कायक तर्जुमान ने कड़वे दानों की तम्सील की तावील की तो फ़रमाया कि, “अच्छे बीज का बोने वाला इब्न-ए-आदम है और खेत दुनिया है।” (मत्ती 13:38) याद रहे कि ये तम्सील खुदावंद ने अपनी खिदमत की इब्तिदा में फ़रमाई थी जिससे ज़ाहिर है कि सय्यदना मसीह शुरू ही से जानते और महसूस करते थे कि उनका “खेत दुनिया है।” कलिमतुल्लाह को इब्तिदा ही से इस बात का इल्म था कि आपके उसूल और यहूदीयत के उसूल में मुगाइरत (ना मुवाफ़िकत, अजनबीयत) और तज़ाद का रिश्ता है। चुनान्चे आपने सामईन (सुनने वालों) को फ़रमाया कि “कोई शख्स पुराने कपड़े में नए की पैवंद नहीं लगाता और ना नई मेय पुरानी मशकों में भरी जाती है। क्योंकि पुरानी मशकें फट जाती हैं और मेय ज़ाए हो जाती है। यहूदी आलिम डाक्टर मॉंटी फ़ेअरी अपनी तफ़सीर इन्जील में कहता है कि⁷ :-

“यहां पुरानी मशकों से यहूदीयत और नई मेय से मसीही
उसूल मुराद हैं।”

⁷ Montifiori, Synoptic Gospels, vol.I, pp.59-61

कलिमतुल्लाह (मसीह) ने अपनी खिदमत के आखिर में अंगूरी बाग के ठेकेदारों की तम्सील सुना कर फ़रमाया, "खुदा की बादशाहत तुमसे (यहूद से) ले ली जाएगी और उस क़ौम को जो उस के फल लाए दे दी जाएगी।" (मत्ती 21:43) जिससे मालूम होता है कि इब्तिदा से लेकर आखिर तक मुनज्जी-ए-आलमीन (दुनिया के नजात देने वाले मसीह) का मतमाअ नज़र और नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) यही था कि इन्जील जलील की बशारत (प्रचार) तमाम क़ौमों में हो। भेड़ों और बकरीयों की तम्सील में आपने फ़रमाया, "जब इब्न-ए-आदम जलाल में आएगा तो सब क़ौमों उस के सामने जमा की जाएँगी।" (मत्ती 25:32) रहम-दिल सामरी की तम्सील में कलिमतुल्लाह (मसीह) ने यहूदी काहिनों और यहूदीयों को रहम और मुहब्बत का नमूना ना बतलाया बल्कि एक सामरी को रहम और तरस का नमूना बनाया। (लूका 10:33) यहूदीयत के मुताबिक लफ़्ज़ "पड़ोसी" का मतलब "क़ौम के फ़रजन्दों से था।" (अहबार 19:18) लेकिन कलिमतुल्लाह ने उस माअनी को मर्दूद (रद्द) करार दे दिया और इस में तम्सील के ज़रीये ये ताअलीम दी कि लफ़्ज़ पड़ोसी से मुराद नूअ इन्सानी के हर फ़र्द से है। ख्वाह वो किसी जमाअत, क़बीला, क़ौम या नस्ल का हो। (लूका 10:25 ता 37)

कोई कहाँ तक कलिमतुल्लाह के अक्वाल को नक़ल करे। जिस शख्स ने आपकी ताअलीम का सरसरी मुतालआ भी किया है वो जानता है कि इस ताअलीम का यहूदी क़ौमीयत के साथ ज़रा भर ताल्लुक नहीं। कलिमतुल्लाह की ताअलीम का एक मुखतस (मख़सूस किया गया) नहीं, बल्कि नूअ इन्सान के लिए है। जब आपने ये ताअलीम दी कि खुदा कुल बनी-नूअ इन्सान का बाप है और उस की लाज़वाल मुहब्बत अज़ल से यहूद और ग़ैर-यहूद सब पर यकसाँ तौर पर हावी है। (मत्ती 5:43 ता 48) तो आपने सामईन (सुनने वालों) के सामने ऐसे उसूल बयान किए जिनसे उनके कान ना-आश्ना थे। ये उसूल अपनी तर्ज़ में दर-हकीकत बिल्कुल नए उसूल थे। यही वजह है कि आपके यहूदी सामईन (सुनने वाले) उनको सुनकर ग़ज़ब में आ जाया करते थे। (लूका 4:16 ता 30 वग़ैरह) यहूदी रब्बियों की तंग-नज़री का ये हाल था कि :-

□वो कहते थे कि खुदा ने कहा है, मैं आइन्दा जहान में तुम्हारे लिए एक बड़ी मेज़ तैयार करूँगा। ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क़ौमों) देखेंगी और हसद के मारे जल भुन कर रह जाएँगी।□

एक और आलिम प्रोफ़ेसर बरकट (Burkitt) लिखता है :-

यरूशलेम की तबाही से पहले कनआन के यहूदियों में चंद एक बातें ऐसी थीं जिन्होंने ने यहूदीयत को एक क्रौमी मज़हब बना रखा था। हालाँकि ये इस मज़हब की ताअलीम ना थी और ना इस क्रौम का हकीकी मतमाअ नज़र था। इस की ताअलीम तो ये थी कि खुदा एक है ,जो अक्वाम-ए-आलम) दुनिया की क्रौमों (का रब-उल-आलमीन है ,लेकिन अमली तौर पर कनआन में यहूदीयत एक क्रौमी मज़हब था जिसका मर्कज़ यरूशलेम था। ”

(Legacy of Israel p.75)

कलिमतुल्लाह (मसीह) की आलमगीर ताअलीम की नई मेय उन पुरानी बोसीदा मशकों में भरी नहीं जा सकती थी। अगर आपकी ताअलीम यहूदी खयालात के हलका (गिरोह) के अंदर महदूद की जा सकती तो आपकी उलमा-ए-यहूद के साथ कश्मकश और जंग ना होती और इस तसादुम का नतीजा सलीब ना होता।

गुल अस्त साअदी व दर्द चश्म दुश्मनां खारास्त

डाक्टर मॉटी फ़ेअरी कहता है कि⁸ :-

कलिमतुल्लाह ने यहूदीयत के बुनियादी अकाइद के खिलाफ़ अपनी ताअलीम के उसूल को आलमगीर (पूरी दुनिया के लिए) बना दिया। अगरचे बाअज़ आला तरीन यहूदी रब्बी इस बात को मानने को तैयार थे कि ना सिर्फ़ पैदाइशी यहूद आले-इब्राहिम हैं बल्कि दीगर अक्वाम (गैर-क्रौमों) के नव-मुरीद भी इस ज़मुरा में शामिल हैं। लेकिन ये सिर्फ़ ज़बानी जमा खर्च था।

⁸ Hibbert Journal , July 1912. pp. 767-73

नफ़स-उल-अम्र (दर-हकीकत, अस्ल बात) इस ख़याल के आगे मुश्किलात के पहाड़ सद्द-ए-राह (हाइल होना) थे। यसूअ का कमाल इस में है कि उसने अपनी ताअलीम और शख़िसियत से उन शरई और क़ौमी रुकावटों को दूर कर दिया।

ख़ुदावंद की ताअलीम के बुनियादी उसूल ये थे कि ख़ुदा मुहब्बत है वो बनी-नूअ इन्सान का बाप है। और कुल अक्वाम आलम के अफ़राद आपस में भाई भाई हैं। ये उसूल-ए-मुहब्बत व उखुव्वत व मसावात (भाईचारा और बराबरी) आलमगीर हैं। आपका पैग़ाम आलमगीर (पूरी दुनिया के लिए) है, जिसको इन्जील नवीस ने इन ग़ैर-फ़ानी अल्फ़ाज़ में अदा किया है कि “ख़ुदा ने दुनिया से ऐसी मुहब्बत रखी कि उसने अपना इकलौता बेटा बख़्श दिया, ताकि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक ना हो, बल्कि हमेशा की ज़िंदगी पाए।” (यूहन्ना 3:16 (सय्यदना मसीह ने ख़ुद अपनी ज़बाने मुबारक से फ़रमाया, “ऐ सब मेहनत उठाने वालो और बड़े बोझ से दबे हुए लोगो, सब मेरे पास आओ, मैं तुमको आराम दूँगा। (मत्ती 11:28 (

हस्त मैकदा व दअवत-ए-आम अस्त हैं जा

सय्यदना मसीह के अहकाम

जिस तरह सय्यदना मसीह के लाएहा अमल, तर्ज़-ए-अमल और कलिमात-ए-तय्यिबात से ये मुतरशशेह (जाहिर) होता है कि आँख़ुदावंद अपने आपको मुनज्जी-ए-आलम ख़याल फ़रमाते थे और अपने पैग़ाम को कुल बनी-नूअ इन्सान के लिए तसव्वुर फ़रमाते थे। इसी तरह ख़ुदावंद के अहकाम से भी यही साबित होता है कि मुनज्जी-आलमीन की रिसालत तमाम मुल्कों क़ौमों और ज़मानों के लिए है। सय्यदना मसीह ने शागिर्दों को जो मछलियाँ पकड़ने वाले थे बुलाते वक़्त फ़रमाया था कि “मेरे पीछे चले आओ मैं तुम्हें आदमीयों का पकड़ने वाला बनाऊँगा।” (मर्कुस 1:17) मुक़द्दस लूका हमको बतलाता है कि ख़ुदावंद ने इन्जील की इशाअत के लिए सत्तर (70) शागिर्दों को भेजा। (लूका 10:17) जिस तरह कलिमतुल्लाह (मसीह) ने बारह (12) शागिर्द चुने ताकि ये तादाद बनी-इस्राईल के दो ज़ादा क़बीलों के बराबर हो। इसी तरह उन बारह के इलावा अब “ख़ुदावंद ने सत्तर (70) आदमी मुक़रर किए।” (लूका 10:1) और इस तादाद के

इतिखाब की वजह ये थी कि ये ख्याल किया जाता था कि कुल दुनिया में सत्तर (70) नसलें और क्रौमें आबाद थीं। इन मुबल्लगीन को मुबशिशर मुकर्रर करके खुदावंद ने कुल जहान पर ये साबित कर दिया कि जिस तरह आपने बारह शागिर्दों को बनी-इसाईल के दो जादा (12) कबीलों के ख्याल से चुना था। इसी तरह आपने सत्तर (70) मुबल्लगीन को अक्वाम आलम (दुनिया की क्रौमों) की तादाद के ख्याल से चुना था, ताकि सब जाहिर हो जाए कि आप यहूद और गैर-यहूद दोनों के मुनज्जी (नजातदहिदा) हैं।

□ये सत्तर (70) मुबल्लगीन सामरिया और कपल्स के गैर-यहूद इलाके के बुत-परस्त शहरों में जो सूबा पियरिया के शुमाल मशरिकी इलाके में वाकेअ है, जहां गैर-अक्वाम (गैर-क्रौमें) कसत से बस्ते थे बशारत के लिए गए।□

(The Mission and Message of Jesus p.279)

सय्यदना मसीह ने आप गैर-अक्वाम यूनानियों, सामरियों, दिकपौलस, अदूमियाह वगैरह-वगैरह, यहूदी बुत-परस्त इलाकों में खिदमत की थी, चुनान्चे आपने इन सत्तर (70) को वहां भेजा और उनकी तब्लीगी कोशिशें इस कद्र कामयाब हुईं कि लिखा है कि वो “सत्तर (70 शागिर्द) खुश हो कर फिर आए और कहने लगे, “ऐ खुदावंद तेरे नाम से बद-रूहें भी हमारे ताबे हैं।.... इसी घड़ी वो रूहुल-कुद्दुस से खुशी में भर गया और कहा ऐ बाप आस्मान और ज़मीन के खुदावंद, मैं तेरी हम्द करता हूँ कि तूने ये बातें दानाओं और अक्लमंदों से छुपाइं और बच्चों पर जाहिर कीं।□.... और शागिर्दों की तरफ़ मुतवज्जोह हो कर खास उन्हीं से कहा, “मुबारक हैं वो आँखें जो ये बातें (यानी गैर-अक्वाम (गैर-क्रौमों) में बशारत के शानदार नताइज) देखती हैं, जिनको तुम देखते हो, क्योंकि मैं तुमसे कहता हूँ कि बहुत से नबियों और बादशाहों ने चाहा कि जो बातें तुम देखते हो (यानी गैर-अक्वाम का खुदा का इल्म हासिल करना) देखें मगर ना देखीं और जो बातें तुम सुनते हो सुने लेकिन ना सुनीं।” (लूका 10:17 ता 24 (

अग़लब (मुम्किन) यही मालूम होता है कि इन तब्लीगी मसाई (कोशिशों) के शानदार नताइज देखकर खुदावंद ने इनके इलावा कई दफ़ाअ और शागिर्दों को बशारत (प्रचार, तब्लिग) के लिए रवाना किया था, क्योंकि मुकद्दस मर्कुस के अल्फ़ाज़ कि, “उन्हें

दो-दो कर के भेजना शुरू किया।” (मर्कुस 6:7) से ये नतीजा मुस्तंबित (अखज़ किया गया, छांटा गया) हो सकता है। यही नतीजा हम इस इन्जील की मर्कुस 1:37 ता 38 से अखज़ करते हैं, जहां मुनज्जी-ए-आलम (दुनिया के नजात-दहिंदा मसीह) अपने शागिर्दों को फ़रमाते हैं, “आओ हम कहीं आस-पास के शहरों में चलें, ताकि मैं वहां भी मुनादी करूँ, क्योंकि मैं इसी लिए निकला हूँ।” इन मुख्तलिफ़ तब्लीगी मसाई (कोशिशों) के वक़्त खुदावंद ने शागिर्दों को यहूद और ग़ैर-यहूद दोनों की तरफ़ भेजा, ताकि इस काम को जो आपने ग़ैर-यहूदी इलाक़ों में किया था, मुस्तहकम और मज़बूत करें और उन ग़ैर-यहूद को जो आप पर ईमान लाए थे ताअलीम दें।

ग़ैर-यहूद में तब्लीग़ की मुमानिअत का सवाल

(1)

एक दफ़ाअ का ज़िक्र है कि खुदावंद यमूअ सब शहरों और गांव में फिरता रहा और (गलील में यहूद) के इबादत खानों में ताअलीम देता और बादशाहत की खुशखबरी की मुनादी करता और हर तरह की बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी दूर करता रहा और जब उसने (अहले-यहूद) की भीड़ को देखा तो उस को लोगों पर तरस आया, क्योंकि वो उन भेड़ों की मानिंद जिनका चरवाहा ना हो खस्ता-हाल और परागंदा थे। तब उसने अपने शागिर्दों से कहा कि, “फ़स्ल तो बहुत है लेकिन मज़दूर थोड़े हैं। पस फ़स्ल के मालिक की मिन्नत करो कि वो अपनी फ़स्ल काटने के लिए मज़दूर भेजे। और उसने उन बारह (शागिर्दों) को पास बुला कर उनको नापाक “रूहों पर इख्तियार बख़शा कि उनको निकालें और उन को कुदरत बख़शी कि हर तरह की बीमारी और हर तरह की कमज़ोरी को दूर करें और उन को खुदा की बादशाही की मुनादी करने और बीमारों को अच्छा करने के लिए भेजा और उन को हुकम देकर कहा, कि ग़ैर-कौमों की तरफ़ ना जाना और सामरियों के किसी शहर में दाखिल ना होना बल्कि इस्राईल के घराने की खोई हुई भेड़ों के पास जाना और चलते चलते ये मुनादी करना कि आस्मान की बादशाहत नज़दीक आ गई है। बीमारों को अच्छा करना, मुर्दों को जिलाना, कोढीयों को पाक साफ़

करना, बदरूहों को निकालना, तुमने मुफ्त पाया मुफ्त देना। ना सोना अपने कमरबंद में रखना और ना चांदी और ना पैसे रास्ते के लिए ना झोली लेना और ना दो दो कुरते, ना जूतीयां ना लाठी, क्योंकि मज़दूर अपनी खुराक का हकदार है और जहां तुम किसी घर में दाखिल हो वहीं रहना, जब तक वहां से रवाना ना हो और जिस किसी शहर के लोग तुमको कुबूल ना करें उस शहर से बाहर निकलते वक़्त अपने पांव की गर्द झाड़ दो। मैं तुमसे सच कहता हूँ कि अदालत के दिन इस शहर की निस्बत सदोम और अमोरह के इलाके का हाल ज़्यादा बर्दाशत के लायक होगा। देखो मैं तुमको भेजता हूँ गोया भेड़ों को भेड़ियों के बीच में, पस साँपों की मानिंद होशियार और कबूतरों की मानिंद भोले बनो। (इन्जील मती 9 व 10 बाब, मर्कुस 6 बाब व लूका 9 बाब)

(2)

आयात मज़कूर बाला से अयाँ है कि मुनज्जी-ए-आलमीन (मसीह) ने अहले-यहूद की भीड़ की परागंदा और खस्ता हालत को मुलाहिजा फ़र्मा कर उन पर तरस खाया और अपने दो ज़ादा (12) शागिर्दों को इस खास मौक़े पर सिर्फ अहले-यहूद में अपने दायरे तब्लीग को महदूद रखने और उन ही में मुक़ीम रहने के अहकाम सादिर फ़रमाए, ताकि अहले-यहूद की बर्गशता क़ौम पर इतमाम (तक्मील हुज्जत) हो जाए। यहां ये बात काबिल-ए-गौर है कि मुमानिअत सिर्फ एक दफ़ाअ के लिए थी और वो भी सिर्फ बारह शागिर्दों को खास मौक़े की हिदायत को आम हुक्म तसव्वुर कर लिया जाये। ये सही है कि सय्यदना मसीह ने अपने बारह शागिर्दों को एक खास मौक़े पर एक खास तब्लीगी मुहिम के वक़्त ये हुक्म दिया था कि, ग़ैर-यहूद की तरफ़ ना जाना, लेकिन इस से ये साबित नहीं होता कि, आपने उनको ये हुक्म दिया था कि हमेशा के लिए ग़ैर-यहूद के पास ना जाना और ना ये साबित होता है कि मुनज्जी-आलमीन (मसीह) ने अपने हर शागिर्द को हमेशा के लिए मना फ़रमाया कि ग़ैर-यहूद के पास अबद तक ना जाना और ना उनके नज़दीक फटकना। इस किस्म की दलील एक ऐसा मन्तकी मुग़ालता है जिसकी हमें किसी सही-उल-अक्ल शख्स से तवक्को नहीं हो सकती।

(3)

खुद मुमानिअत के अल्फाज़ इस एतराज़ को रफ़ा करने के लिए काफ़ी हैं। खुदावंद ने शागिर्दों को हिदायत फ़रमाई, “गैर-क्रौमों की तरफ़ ना जाना और सामरियों के किसी शहर में दाखिल ना होना।” हम ये पूछते हैं कि अगर शागिर्दों ने खुदावंद से गैर-क्रौमों की तरफ़ जाने और सामरियों के शहरों में दाखिल होना नहीं सीखा था, तो उनको कैसे ख्याल आ गया कि वो गैर-क्रौमों और सामरियों की तरफ़ जिस पर खुदावंद ने उनको फ़रमाया, कि इस दफ़ाअ गैर-क्रौमों की तरफ़ ना जाना और सामरियों के किसी शहर में दाखिल ना होना? अगर शागिर्दों के दिलों में ये ख्वाहिश नहीं थी तो खुदावंद का हुक्म फ़ुज़ूल था और अगर ये उमंग मौजूद थी, तो खुदावंद के सिवाए और किस ने उनको ये सबक सिखलाया था कि गैर-अक्वाम (गैर-क्रौम) और सामरी भी अहले-यहूद की तरह खुदा की बादशाहत में दाखिल हो सकते हैं? खुदावंद के यहूदी शागिर्दों ने अपने रब्बियों से यही सीखा था कि गैर-अक्वाम (गैर-क्रौमों) खुदा की बादशाहत से खारिज हैं। चुनान्चे यहूदी क्रौमी तअस्सुबात की तंग-नज़री इस एक फ़िक्रे से अयाँ है, जो सिदरास की दूसरी किताब में है। “ऐ खुदा तू ने फ़रमाया है कि तूने दुनिया को हमारी खातिर खल्क किया है और गैर-अक्वाम महज़ नेस्त हैं और थूक की तरह हैं।” (2 सिदरास 6:55) मुअरिख़ टीसी टस कहता है कि :-

“यहूद एक दूसरे की मदद करने को हर वक़्त तैयार होते हैं, लेकिन दुनिया के बाकी बाशिंदों को अपना दुश्मन समझ कर नफ़रत की निगाह से देखते हैं।”

(Hist V.5)

सामरियों के साथ नफ़रत रखना यहूद को उनकी माँ की गोद में सिखलाया जाता था। सामरी उन असूरियों की औलाद थे जो असीरी (क़ैद) के ज़माने में अर्ज़-ए-मुक़द्दस में आ बसे थे और उन्होंने ने इस्राईली औरतों से शादी करली थी। (2 सलातीन 17:24) और मूसा की शरीअत के पैरोकार थे। जब यहूदी असीरी (क़ैद) से वापिस आए तो सामरियों ने यरूशलेम की हैकल को दुबारा तामीर करने में उनका हाथ बटाना चाहा, लेकिन यहूद ने एज़्राह (तरीका से) तहकीर उनको रद्द कर दिया। पस यहूदियों और सामरियों में दुश्मनी पैदा हो गई जो सदीयों तक रही और आए दिन दोनों अक्वाम (क्रौमों) में कुशत व खून होता रहता था। हम ज़िक्र कर चुके हैं कि :-

□यहूदी रब्बी कहते थे कि जो शख्स सामरी की रोटी खाता है वो सूअर का गोश्त खाता है।□

(Mshnah Shebi ith V11.10)

और कि :-

□कोई सामरी कभी यहूदीयत के ज़मुरा में शामिल ना किया जाये। वो मुर्दों की क्रियामत में शरीक ना होंगे।”

(Pirke Elieser.38)

किसी को सामरी कहना, गाली देने के बराबर था। (यूहन्ना 8:48) जब यहूदी जाइरीन हर साल हज के मौके पर यरूशलेम जाते तो मीलों चक्कर लगाते, ताकि सामरियों के शहरों में से उनको गुजरना ना पड़े। एक दफ़ा सामरियों ने शागिर्दों को अपने गांव में टिकने ना दिया था क्योंकि उनका रुख यरूशलेम की तरफ़ था। इस सुलूक से सय्यदना मसीह के शागिर्द इस कदर ग़जब में आ गए, कि वो चाहते थे कि आस्मान से आग नाज़िल हो कर उनको भस्म कर डाले।” (लूका 9 बाब)

जब सूरत-ए-हालात ये थी तो ये ग़बी (कमअक्ल, कुंद ज़हन से) शख्स पर ज़ाहिर है कि शागिर्दों ने सामरियों और ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-कौमों) में तब्लीगी फ़राइज़ को सरअंजाम देने का काम खुद सय्यदना मसीह की ताअलीम और नमूने से सीखा था।

इश्क की एक जस्त ने तै कर दिया किस्सा तमाम

इस ज़मीन व आस्मां को बेकरां समझा था मैं

(4)

मुमानिअत के अल्फ़ाज़ काबिल-ए-गौर हैं। ऐसा मालूम होता है कि आँखुदावंद इस मौके पर अहले-यहूद पर इतमाम-ए-हुज्जत (तकरार की तक्मील) की खातिर एक खास तब्लीगी कोशिश करना चाहते थे। आपने कौम यहूद की बर्गशता और तबाह व खस्ता

और परागंदा हालत को देखकर हुक्म दिया कि यहूद की तरफ जाओ और “चलते-चलते ये मुनादी करना कि आस्मान की बादशाहत नज़दीक आ गई। ना सोना अपने कमरबंद में रखना ना चांदी ना पैसे, जिस घर में दाखिल हो उसे दुआ-ए-खैर दो। अगर कोई तुमको कुबूल ना करे और तुम्हारी बातें ना सुने, तो उस घर या शहर से बाहर निकलते वक़्त अपने पांव की गर्द झाड़ दो। मैं तुमसे सच्य कहता हूँ कि अदालत के दिन इस शहर की निस्बत सदोम और अमोरह के इलाके का हाल ज़्यादा बर्दाश्त के लायक होगा।” (मत्ती 10:5 ता 15) हुक्म के अल्फ़ाज़ से ज़ाहिर है कि खुदावंद अहले-यहूद पर इतमाम-ए-हुज्जत करना चाहते थे। लिहाज़ा इस ख़ास तब्लीगी मुहिम को सिर्फ़ अहले-यहूद तक महदूद रखना चाहते थे, लेकिन खुदावंद के रसूल बशारत (तब्लित्ग) के जोश में भरे थे और चाहते थे कि यहूद को बशारत देते वक़्त दौर में ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क्रौमों) की तरफ़ भी चक्कर लगा आएं और चूँकि सामरिया भी रास्ते में पड़ता था वो चाहते थे कि सामरियों के गांव में से भी होते चलें। लेकिन खुदावंद ने उनको इस बात से मना किया और फ़रमाया कि अब की दफ़ाअ ये तब्लीगी मसाई (कोशिश) ख़ास अहले-यहूद पर इतमाम-ए-हुज्जत के लिए हैं। इधर-उधर जाकर अपने वक़्त और कोशिश को सर्फ़ ना करना “ग़ैर क्रौमों की तरफ़ ना जाना और ना सामरियों के किसी शहर में दाखिल होना बल्कि इस्राईल की खोई हुई भेड़ों के पास जाना और चलते चलते ये मुनादी करना कि आस्मान की बादशाहत नज़दीक आ गई है और अगर कोई तुमको कुबूल ना करे और तुम्हारी बातें ना सुने तो इस घर से या शहर से बाहर निकलते वक़्त अपने पांव की गर्द झाड़ दो। मैं तुमसे सच्य कहता हूँ कि अदालत के रोज़ इस शहर की निस्बत सदोम और अमोरह के इलाके का हाल ज़्यादा बर्दाश्त के लायक होगा।□

हमने सय्यदना मसीह के अपने तर्ज़-ए-अमल से, ताअलीम से, अक्वाल से ये साबित कर दिया है कि कलिमतुल्लाह (मसीह) अपने आपको मुनज्जी-आलमीन (दुनिया को नजात देने वाले) ख़्याल फ़रमाते थे। क्या कोई दानिशमंद शख्स ये ख़्याल कर सकता है कि इब्ने-अल्लाह (मसीह) आप तो ग़ैर-यहूद, रोमीयों, सामरियों में काम करें। मोअज्जे दिखाएं और उन में से बाअज़ के ईमान को अहले-यहूद के ईमान से बेहतर करार दें। उनमें से बहुतेरों को मुरीद बना लें, लेकिन अपने हर एक शागिर्द को हमेशा के लिए कतई तौर पर ये हतमी हुक्म दे जाएं कि ग़ैर-यहूद की तरफ़ ना जाना और ना कभी किसी सामरी शहर में क़दम रखना? इस के खिलाफ़ हम सय्यदना मसीह का आखिरी

हुक्म पेश कर देते हैं ताकि किसी मुखालिफ़ को सही उसूल तफ़्सीर के मुताबिक जिसका ज़िक्र फ़स्ल अक्वल में किया गया है एतराज़ करने की या शक शुब्हा की गुंजाइश ना रहे। मुनज्जी-आलमीन (मसीह) ने इस जहान से अलविदा होते वक़्त अपनी ज़बान मुबारक से रसूलों और दूसरे शागिर्दों को हुक्म दिया कि “आस्मान और ज़मीन का कुल इख्तयार मुझे दिया गया है, पस तुम दुनिया में जाकर सारी खल्क (क्रौमों) के सामने इन्जील की मुनादी करो और जा कर सब क्रौमों को शागिर्द बनाओ और उनको ये ताअलीम दो कि उन सब बातों पर अमल करें जिनका मैंने हुक्म दिया है कि देखो मैं दुनिया के आखिर तक हमेशा तुम्हारे साथ हूँ।” (मत्ती 28:19, मर्कुस 16:15) फिर फ़रमाया, “जब रूहुल-कुद्दुस तुम पर नाज़िल होगा तो तुम कुव्वत पाओगे और यरूशलेम और तमाम यहूदिया और सामरिया में, बल्कि ज़मीन की इतिहा तक मेरे गवाह होंगे।” (आमाल 1:18)

सूर फ़ीनीकी लड़की को शिफ़ा बख़शना

अब हम सय्यदना मसीह के अक्वाल में से उस क़ौल पर ग़ौर करेंगे जिसकी बिना पर कहा जाता है कि आपको इस बात का एहसास था कि आपका मिशन सिर्फ़ अहले-यहूद तक ही महदूद है। इन्जील में वारिद है कि “ख़ुदावंद यसूअ वहां से निकल कर सूर और सैदा के (गैर-यहूद) इलाके को रवाना हुआ और सूर और सैदा की सरहदों में गया और एक घर में दाख़िल हुआ और नहीं चाहता था कि कोई जाने, मगर पोशीदा ना रह सका बल्कि एक कनआनी औरत जिसकी छोटी बेटी में नापाक रूह थी उस की खबर सुनकर उन सरहदों से निकली और आई और उस के क़दमों पर गिर पड़ी। ये औरत यूनानी थी और क्रौम सूर फ़ीनीकी की थी। उसने उस (मसीह) से दरख्वास्त की और पुकार कर कहा, कि ऐ ख़ुदावंद इब्ने दाऊद मुझ पर रहम कर। एक बदरूह मेरी बेटी को बुरी तरह सताती है। उस बदरूह को मेरी बेटी से निकाल। मगर उसने कुछ जवाब उसे ना दिया। उस के शागिर्दों ने पास आकर उस से अर्ज़ की कि, उसे रुख़्सत कर दे, क्योंकि वो हमारे पीछे चिल्लाती है, उसने जवाब में कहा कि, **मैं इस्राईल के घराने की खोई हुई भेड़ों के सिवा किसी और के पास नहीं भेजा गया।** मगर उस ने आकर उसे सज्दा किया और कहा, ऐ ख़ुदावंद मेरी मदद कर, उसने जवाब में उस से कहा कि, पहले लड़कों को सैर होने दे। क्योंकि लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों को डाल देनी अच्छा नहीं।

उसने जवाब में कहा, हाँ ख़ुदावंद कुत्ते भी मेज़ के तले की रोटी के टुकड़ों में से खाते हैं, जो उनकी मालिकों की मेज़ पर से गिरते हैं। इस पर यस्ूअ ने जवाब में उस (औरत) से कहा, ऐ औरत तेरा ईमान बहुत बड़ा है, इस कलाम के सबब से जा जैसा चाहती है तेरे लिए वैसा ही हो, बदरूह तेरी बेटी से निकल गई है और उस की बेटी ने उसी घड़ी शिफ़ा पाई और उस ने अपने घर में जाकर देखा कि लड़की पलंग पर पड़ी है और बदरूह निकल गई है।” (मर्कूस 7 बाब 24 ता 30 आयात, मत्ती 15 बाब 21 ता 28 आयात)

(1)

इन आयात की तावील करके मोअतरज़ीन ये साबित करना चाहते हैं कि सय्यदना मसीह सिर्फ एक यहूदी मुसल्लेह (सुधारक, मुजद्दिद) हो गुज़रे हैं और आपके कभी वहम व गुमान में भी ना आया था कि आपकी रिसालत यहूद तक महदूद ना रहेगी। लेकिन हम सुतूर बाला में साबित कर आए हैं कि सही उसूल तफ़्सीर के मुताबिक़ मोअतरज़ी की ये तावील बातिल है। मुनज्जी-आलमीन (नजात-दहिंदा मसीह) का तर्ज़-ए-अमल साफ़ जाहिर करता है कि आँख़ुदावंद ने गैर-यहूद में ख़िदमत की और उन को ताअलीम भी दी। आयत ज़ेर-ए-बहस ख़ुद इस बात की गवाह है कि मुनज्जी-ए-जहान (दुनिया का नजात-दहिंदा) के मोअजज़ात का फ़ैज आम था और आपने उस औरत की लड़की को शिफ़ा बख़्शी। (मत्ती 15:28) हम ये भी देख चुके हैं कि ख़ुदावंद के कलिमात-ए-तय्यिबात भी इस अम्र के गवाह हैं कि आपकी इन्ज़ील सारी ख़ल्क के लिए थी और आप का हुक्म “सब क़ौमों को शागिर्द बनाने का था।” हम नाज़रीन को याद दिलाते हैं कि सही उसूल तफ़्सीर तावील-उल-कलामा बिमायर्ज़ा बह काइला (تفسير تاويل الكلامه بما يرضى به قائله) बातिल है। यानी क़ौल के कहने वाले की तावील वही सही हो सकती है जो उस की मंशा, इरादे और ख़यालात के मुताबिक़ हो। पस हम ज़ेर-ए-बहस की सिर्फ़ इस तर्ज़ पर ही तावील व तफ़्सीर कर सकते हैं जो सय्यदना मसीह के लाएहा-ए-अमल, तर्ज़-ए-अमल, कलिमात, हिदायात और अहकाम के मुताबिक़ हो। हम एक शख्स के किसी खास क़ौल को उस के दीगर अक्वाल और हालात-ए-ज़िंदगी की रोशनी में ही समझ सकते हैं। इंशा-(अल्लाह) इस सही उसूल तफ़्सीर को मद्द-ए-नज़र रखकर हम मोअतरज़ीन पर ये साबित कर देंगे कि जो नतीजा वो इस आया शरीफ़ा से अख़ज़ करते हैं वो सरासर ग़लत है।

कीं राह कि तू मेर्वी बतुरकस्तान अस्त

(2)

ये अम्र काबिल-ए-गौर है कि ये औरत अहले-यहूद से ना थी। मुकद्दस मती इस को “कनआनी औरत” कहता है। मुकद्दस मर्कुस कहता है कि “ये औरत यूनानी और क्रौम की सूर फ़ीनीकी थी।” (मर्कुस 7:26) “कनआन” और “सूर फ़ीनीका” एक ही सूबा के दो नाम थे, जिस तरह इंग्लिस्तान को भी “इंगलैंड” और कभी “बर्तानिया” कहा जाता है। इस क्रौम के लोग मुल्क कनआन के असली बाशिंदे थे, जिसकी निस्बत अहले-यहूद को हुक्म हुआ था कि उनको सफ़ा हस्ती से नेस्त व नाबूद (खत्म) कर दिया जाये। (इस्तिस्ना 31:3 ता 5 वगैरह) इस बात से नाज़रीन पर वाज़ेह हो गया होगा कि यहूदी क्रौम और इस औरत की क्रौम में हद दर्जे की बाहमी मुखासमत (दुश्मनी और मुनाफ़िरत, नफ़रत, घिन) थी। लेकिन आयत ज़ेर-ए-बहस से ज़ाहिर है कि मुनज्जी-आलमीन (मसीह नजात-दहिंदा) का मुहब्बत भरा दिल इस नफ़रत और तास्सुब से कुल्लियतन (कुल्ली तौर पर, मुकम्मल तौर पर) पाक था और कलिमतुल्लाह ने इस क्रौम की दुखतर को और दीगर अफ़राद को शिफ़ा बख़्श कर इस हकीकत पर मुहर-ए-सदाक़त लगा दी।

(3)

“ये औरत जिसका नाम रिवायत के मुताबिक़ जस्टा (Justa) था और इस की दुखतर (बेटी) जिसका नाम रिवायत के मुताबिक़ बर्नेस (Bernice) था, ना सिर्फ़ ग़ैर-क्रौम में से थी बल्कि वो यूनानी थी और यूनानी मज़हब रखती थी। वो देवी देवताओं की परस्तार थी। चुनान्चे पुराने शामी तर्जुमे की क़िरात है “वो औरत बुत-परस्त थी।” (मर्कुस 7 : (26) इस इलाके में एक बुत जिसका नाम “सूर” था पूजा जाता था। जिसकी वजह से इलाके का नाम भी सूर पड़ गया था।⁹

⁹ Margoliath Religions of Bible Lands.p1

लेकिन ये बुत-परस्त औरत एक यहूदी “इब्ने दाऊद” पर भरोसा रख कर आई। पस सय्यदना मसीह ने उस के ईमान की तारीफ़ करके फ़रमाया “तेरा बड़ा ही ईमान है।” (मत्ती 15:28) जब हम उस के ईमान की तरफ़ नज़र करते हैं तो हम मुतअज्जिब हो जाते हैं। क्योंकि ये औरत उस क़ौम में से थी जो अहले-यहूद के साथ अदावत और नफ़रत रखती थी। लेकिन ताहम वो यहूदी यसूअ नासरी से मदद की ख्वाहां हुई। आँखुदावंद इस दफ़ाअ अलैहदगी, उज़लत और गोशा-नशीनी की खातिर इस इलाके में तशरीफ़ ले गए थे। (मर्कुस 7:24 (लेकिन जूही उस औरत ने आपकी आमद की ख़बर सुनी वो भागी आई और आपके मुबारक क़दमों पर गिर पड़ी और उस ने चिल्ला कर कहा, “ऐ ख़ुदावंद इब्ने दाऊद मुज़ पर रहम कर” उस की हाजतमंदी ने उस के दिल से क़ौमी तास्सुब बुग़ज़ और इनाद को दूर कर दिया और वो अपनी दुश्मन क़ौम यहूद के मसीह मौऊद के पास दरख्वास्त करने पर इसरार करती है। उस का ईमान है कि गोया इब्ने दाऊद मसीह मौऊद क़ौम का यहूदी है, ताहम वो दीगर यहूद की तरह उस का दुश्मन नहीं है। वो ज़रूर उस की बेटी को शिफ़ा अता करेगा। माँ की ममता उस को मजबूर करती है कि यहूदी मसीह मौऊद के पीछे-पीछे चिल्लाती जाये। सय्यदना मसीह के शागिर्द इस इनाद, नफ़रत और तास्सुब से ख़ाली ना थे। उन्होंने उस को ख़ुदावंद तक पहुंचने में कोई दिलेरी ना दी थी और वो तंग आकर ख़ुदावंद से दरख्वास्त करते हैं कि “उसे रुख़्सत कर दे, क्योंकि हमारे पीछे चलाती है।”

(4)

हमको ये बात फ़रामोश नहीं करनी चाहिए कि सही उसूल तफ़सीर के मुताबिक़ जिसका ज़िक्र फ़स्ल अच्चल में किया गया है, इस आया शरीफ़ा की तफ़सीर करते वक़्त हमको मौक़ा और महल और इन्जीली इबारत के सबाक को ज़रूर मद्द-ए-नज़र रखना चाहिए। इस मौक़े पर सय्यदना मसीह की गुफ़्तगु का मक़सद हरगिज़ ये नहीं था कि आप कनआनी औरत से अपनी ज़िंदगी के नस्ब-उल-ऐन (मक़सद) का ज़िक्र करें। सय्यदना मसीह और इस औरत के दर्मियान सय्यदना मसीह के मिशन के मतमाअ नज़र पर बहस और मुकालमा नहीं हो रहा था। अगर बहस का मौजू सय्यदना मसीह के मिशन का मक़सद होता और कोई शख्स निकुदीमस की तरह आपके पास आता और ये दर्याफ़्त करता कि, क्या आपका पैग़ाम सिर्फ़ क़ौम यहूद तक ही महदूद है या आप ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क़ौमो) को नजात देने के लिए भी दुनिया में आए हैं और कलिमतुल्लाह

(मसीह) जवाब में अपने नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) की तशरीह व तु तोजिया करके फ़रमाते कि मैं इस्राईल की खोई हुई भेड़ों के सिवा किसी और के पास नहीं भेजा गया और आप अपने प्रोग्राम, पैगाम, तर्ज-ए-अमल, वगैरह को इस जवाब की ताईद में पेश फ़रमाते तो मोअतरिज़ की तावील हक-बजानिब होती। लेकिन इस मौके पर सवाल जो दर्मियान में था, वो आँखुदावंद की जिंदगी के नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) और आपके मिशन के असली मक्सद से मुताल्लिक नहीं था। बल्कि उस औरत की लड़की की बीमारी और शिफ़ा याबी का सवाल था। पस सय्यदना मसीह का जवाब लड़की की शिफ़ायाबी के मुताल्लिक था और आपके मिशन के नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) से इस का कुछ वास्ता ना था। ये याद रहे कि जेर-ए-बहस फ़िक्कह औरत से नहीं बल्कि शागिर्दों से कहा गया था। पस सही उसूल तफ़सीर के मुताबिक़ लाज़िम है कि हम खुदावंद के जवाब को जो आपने औरत से नहीं, बल्कि शागिर्दों से मुखातब हो कर फ़रमाया था, इस के मौके और महल के मुताबिक़ समझने की कोशिश करें और इस की तावील खारिजी उमूर की रोशनी में ना करें। इंजीली इबारत का सियाक़ (मफ़हम) साफ़ बतलाता है कि इस मौके और महल में गैर-अक्वाम की रुहानी नजात का सवाल एक ऐसा अम्र है, जो खारिज-अज़-बहस है। पस सही तावील में हम खारिज अज़ बहस उमूर को ना दर्मियान में ला सकते हैं और ना इनकी रोशनी में इस आया शरीफ़ा की तफ़सीर कर सकते हैं। ये एक मज़हकाख़ेज़ अम्र होगा कि औरत तो कहे कि, ऐ खुदावंद मेरी लड़की को शिफ़ा अता कर और खुदावंद जवाब में क़ौम यहूद की रुहानी हालत-ए-ज़ार पर बहस करें। ये ऐसा ही है जैसा एक बुत-परस्त हिंदू किसी मवहिहद मुसलमान तबीब के पास अपनी लड़की के ईलाज का सवाल करे और तबीब उस के जवाब में बर्गशता मुसलमानों की खस्ता-हाली का रोना रोए और उनकी दाइमी रुहानी नजात पर बहस करे। इंजीली इबारत का सियाक़ हमको बतलाता है कि कनआनी औरत ने एक शिफ़ा दहिदा की खबर सुनी और वो उस के क़दमों में आकर इल्तिजा करने लगी कि मेरी लड़की को शिफ़ा बख़्श। इस सवाल का जवाब सिर्फ़ एक ही हो सकता था यानी या इस्बात में या नफी में। खुदावंद ने उस की इल्तिजा को कुबूल फ़रमाया और लड़की को शिफ़ा अता की।

(5)

पस इंजीली इबारत के सियाक़ पर नज़र करके हम कह सकते हैं कि दर-हकीक़त इस कनआनी औरत की चीख़ व पुकार ने खुदावंद (मसीह) के दिल में खयालात का

सिलसिला शुरू कर दिया। आप अपने दिल ही दिल में एक तरफ तो गम-गश्ता यहूद की परागंदा हालत-ए-ज़ार पर गौर फ़र्मा रहे थे और दूसरी तरफ़ बुत-परस्त ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क्रौमों) की खस्ता हालत की सदा उस औरत के नाले (गम के साथ चिल्लाने) की सूरत में आपके कानों में आ रही थी। इंजीली इबारत से ऐसा मालूम होता है कि सय्यदना मसीह अपने हवारइन के आगे-आगे आहिस्ता-आहिस्ता चल रहे थे और अपने खयालात में गर्क थे और यह औरत शागिर्दों के पीछे चिल्लाती आ रही थी। कलिमतुल्लाह (मसीह) चलते चलते इस गहरी सोच में पड़े हुए थे और अपने खयालात में इस कद्र मुनहमिक) किसी काम में बहुत मसरूफ़) हो गए थे कि आप ने “इस औरत को कुछ जवाब ना दिया। एक तरफ़ तो आप अपने दिल में बनी-इस्राईल के उन गुमराह लोगों का खयाल करके उन पर तरस खा रहे थे जो “उन भेड़ों की मानिंद जिनका कोई चरवाहा ना हो खस्ता-हाल और परागंदा थे।” (मती 9:36) उनकी तरफ़ नज़र करके कलिमतुल्लाह (मसीह) ने अपने हवारियों (शागिर्दों) को चंद रोज़ पहले फ़रमाया था कि, “फ़सल तो बहुत है लेकिन मज़दूर थोड़े हैं। पस फ़सल के मालिक की मिन्नत करो कि वो अपनी फ़सल काटने के लिए मज़दूर भेज दे।” (मती 9:37 (दूसरी तरफ़ कलिमतुल्लाह (मसीह) के कान में एक बुत-परस्त औरत की चीख़ पुकार आ रही थी कि “ऐ खुदावंद इब्ने दाऊद मुझ पर रहम कर। इस चीख़ पुकार ने आपके जहन में उन तमाम बुत-परस्त ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क्रौमों) का तसव्वुर बांध दिया जो नजात और “रहम” की तलबगार थीं। मुनज्जी-आलमीन (दुनिया के नजात देने वाले मसीह) क्रौम बनी-इस्राईल की खोई हुई भेड़ों की तरफ़ नज़र करते हैं तो उन को परागंदा और खस्ता-हाल देखकर कहते हैं कि “फ़सल बहुत है। ग़ैर-यहूद बुत-परस्त अक्वाम की जानिब नज़र करते हैं तो उनकी सनम-परस्ती और परागंदगी को मुलाहिजा करके कहते हैं कि “फ़सल बहुत है” काम हर तरफ़ है। मैं अकेला हूँ, मेरी ज़िंदगी के सिर्फ़ चंद माह बाकी हैं कहीं-कहीं काम करूँ। अहले-यहूद गो परागंदा खस्ता-हाल और गम-गश्ता हैं ताहम वो बुत-परस्त ग़ैर-यहूद की निस्बत खुदा का इल्म ज़्यादा रखते हैं और बुत-परस्तों से ज़्यादा तैयार हैं कि मेरे पैगाम को कुबूल कर लें। बेहतर यही है कि मैं अपनी ज़िंदगी के चंद माह जो बाकी रह गए हैं क्रौम यहूद की खोई भेड़ों में खिदमत करके काटूँ और अपने बाकीमांदा कीमती वक़्त और कोशिश को ग़ैर-यहूद बुत-परस्तों में सर्फ़ ना करूँ और अहले-यहूद के गुमराह और मुर्तद गिरोहों की तरफ़ जो खुदा से बर्गशता हो गए हैं खासतौर पर मुतवज्जोह हों। पस आलम इन्हिमाक (मसूफ़ियत) में कलिमतुल्लाह (मसीह) ने अपने खयालात का

इज़हार करके अपने शागिर्दों को मुखातब करके अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाया “मैं बनी-इस्राईल की बर्गशता गिरोह के सिवा और किसी के पास नहीं भेजा गया। यूनानी औरत की आँखें आपके मुबारक चेहरे पर लगी हुई थीं। उसने आपके लबों की जुंबिश को देखा और इस फ़िक्रह को सुन लिया। उस का ईमान ज़बरदस्त था, वो आगे बढ़ी और उसने कहा, “ऐ खुदावंद मेरी मदद कर। इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने अपने खयालात का जिनको वो सोच रहे थे इज़हार करके फ़रमाया कि “पहले लड़कों को सैर होने दे।” मेरा अक्वलीन फ़र्ज ये है कि मैं पहले बनी-इस्राईल के मुर्तद लोगों को उनके खुदा के पास फेर लाऊँ, बाद में ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क़ौमें) भी आ जाएंगी लड़कों की रोटी लेकर कुत्तों को डाल देनी अच्छा नहीं।” मैं पहले अपना पैगाम अहले-यहूद को सुना लूँ। ये वाजिब नहीं कि अब अपने बाक़ीमांदा वक़््त और कोशिश को अहले-यहूद की तरफ़ से जो मेरा पैगाम समझ सकते हैं, हटा कर ग़ैर-यहूद की तरफ़ लगाऊँ जो हकीकी खुदा की हस्ती और इल्म से बे-बहरा और नबुव्वत और किताब से नाआशना हैं। औरत ने जवाब दिया “हाँ ऐ खुदावंद लेकिन कुत्ते भी मेज़ के तले लड़कों की रोटी के टुकड़ों में से खाते हैं। यानी ग़ैर-यहूद बुत-परस्तों में से मेरे जैसे जो इब्ने दाऊद और मसीह मौऊद से रहम और मदद के मुल्तजी हैं वो भी अहले-यहूद के खयालात से मुतास्सिर हो कर ही तेरे पास आते हैं। इस पर मुनज्जी-आलम (मसीह) ने फ़रमाया, “ऐ औरत तेरा बड़ा ही ईमान है, जैसा चाहती है तेरे लिए वैसा ही हो और उस की बेटी ने उसी घड़ी शिफ़ा पाई।” (मती 15:28)

(6)

मज़कूर बाला आयात में दो अल्फ़ाज़ खासतौर पर काबिल-ए-ग़ौर हैं यानी “लड़के” और “कतारे” (कुत्ते) बाअज़ खयाल करते हैं कि लफ़ज़ “कतारे” (कुत्ते) से हिक़ारत टपकती है। लेकिन सही उसूल तफ़्सीर के मुताबिक़ हमें ज़बान के मुहावरे का लिहाज़ तावील करते वक़््त रखना चाहिए। अगर हम इस उसूल को मद्द-ए-नज़र रखें तो हम देखेंगे कि,

खुदावंद (मसीह) ने जो अल्फ़ाज़ [लड़के] और [कतारे] (कुत्ते) अपनी ज़बान मुबारक से फ़रमाए तो आपने इस वक़््त दर-हकीक़त खास उन अल्फ़ाज़ को इस्तिमाल किया जो बनी-इस्राईल और ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क़ौमें) खुद अपने-अपने बच्चों के लिए प्यार के तौर पर इस्तिमाल करते थे। बनी-इस्राईल अपने बच्चों

को प्यार के तौर पर [लड़का] बुलाते थे।)मत्ती8 : 12वगैरह (लेकिन गैर-अक्वाम अपने बच्चों को [कतूरा] (कुत्ता) बुलाया करते थे।¹⁰

हमारे अपने पंजाब देस के बाअज़ अज़ला और पहाड़ी मुकामात में भी वालदैन अपने बच्चों को प्यार के तौर पर “कतूरा”, (कुत्ता) डबो वगैरह बुलाते हैं जिस तरह अंग्रेज़ अपने बच्चों को “कडीज़” यानी “लेले” पुकारते हैं।

जाये गौर है कि जिस यूनानी लफ़्ज़ का उर्दू तर्जुमा “कुत्ते” किया गया है और हम ने “कतोरे” किया है। इन्जील शरीफ़ में ये लफ़्ज़ किसी और जगह वारिद नहीं हुआ वहां लफ़्ज़ “कुत्ते” के लिए दूसरा लफ़्ज़ इस्तिमाल किया गया है। पस सही उसूल-ए-तफ़्सीर के मुताबिक़ जब आँखुदावंद (मसीह) ने लफ़्ज़ कतूरा (कुत्ता) इस्तिमाल फ़रमाया, तो किसी हिक़ारत या नफ़रत की वजह से नहीं किया। बल्कि एक ऐसा लफ़्ज़ इस्तिमाल किया जिसको गैर-अक्वाम (गैर-कौमें) खुद प्यार से अपने बच्चों के लिए इस्तिमाल किया करती थीं। इस लफ़्ज़ से आपका माअनी-उल-ज़मीर भी अदा हो गया। औरत को मादरी मुहब्बत और माँ की ममता ने अक्ल दी और उस ने भी इन दोनों अल्फ़ाज़ के ज़ू मअनी मुतालिब से फ़ायदा उठा कर जवाब दिया कि, हाँ “ऐ खुदावंद मेरे छोटे मुन्ने कतोरे (कुत्ते) की भी मदद कर और उस को शिफ़ा बख़्श।

सुखन-शिनास नई दल्बरा, ख़ताएं जासत

(7)

जिस आया शरीफ़ा की बिना पर मोअतरज़ीन आँखुदावंद के मिशन को अहले-यहूद तक महदूद ख़याल करते हैं वही आयत दर-हकीक़त उनके एतराज़ के रद्द में पेश की जा सकती है। मुक़द्दस मर्कुस हमको बतलाता है कि, खुदावंद (मसीह) ने औरत से फ़रमाया “पहले लड़कों को सैर होने दे।” (मर्कुस 7:27 (लफ़्ज़ “पहले” से साफ़ ज़ाहिर है कि मुनज्जी-आलमीन (मसीह) की नज़र कोताह ना थी और ना आप अपने दायरे रिसालत

¹⁰ Findlay, Jesus in the First Gospel .p153

को महदूद ख्याल फ़रमाते थे, बल्कि आप पहले अहले-यहूद पर इतमाम-ए-हुज्जत (तक्मील तक़रार व दलील) करनी चाहते थे और ग़ैर-यहूद को अपने नजात बख़्श पैग़ाम से महरूम रखना नहीं चाहते थे।

(8)

अगर हम इस आया शरीफ़ा की वो क़िरात कुबूल करें जो पुराने शामी तर्जुमे में मौजूद है तो इस एतराज़ की सिरे से गुंजाइश ही नहीं रहती। वो क़िरात ये है :-

«उसने जवाब में उनको (शागिर्दों) कहा, मैं नहीं भेजा गया मगर उन भेड़ों की तरफ़ जो इस्राईल के घराने से भटकी हुई हैं।» (मती 15:24 (

इस क़िरात के मुवाफ़िक़ आयत ज़ेर-ए-बहस का ये मतलब हुआ कि खुदा ने मुझे उन तमाम अक़्वाम की खातिर भेजा है जो इस्राईल के घराने में शामिल नहीं हैं। यानी खुदा ने मुझे ग़ैर-यहूद की जानिब भेजा है। ये तर्जुमा दूसरी सदी में शामी ज़बान में किया गया था। मुल्क-ए-शाम अर्ज़-ए-मुक़द्दस कनआन के साथ मुल्हिक़ है और शामी ज़बान अरामी से मुताल्लिक़ है, जो हमारे मुबारक खुदावंद की ज़बान थी। अहदे-जदीद की कुतुब का सबसे पहले इसी शामी ज़बान में तर्जुमा हुआ। पस मुल्क और ज़बान के ताल्लुक़ और तर्जुमे की क़दामत के लिहाज़ से बहुत मुम्किन है कि यही क़िरात सही भी हो। यही क़िरात पशीतो तर्जुमा (پشتو ترجمه) आम और सादा) की है। जो शामी कलीसिया का इसी तरह मुस्तनद तर्जुमा है, जिस तरह विलगेट रूमी कलीसिया का मुस्तनद तर्जुमा है।

अक़्वाम-ए-आलम की नजात और अहले- यहूद का नस्ब-उल-ऐन (मक़्सद)

मोअतरज़ीन ये सवाल कर सकते हैं, क्यों नजात के मुआमला में अहले-यहूद को ग़ैर-यहूद पर तर्ज़ीह दी गई है? अगर इब्ने-अल्लाह (मसीह) यहूद और ग़ैर-यहूद दोनों की खातिर इस ज़हान में आए थे, तो आप क्यों अहले-यहूद को अपना पैग़ाम पहले पहुंचाना

चाहते थे? (मर्कुस 7:27) नजात के मुआमले में अहले-यहूद को क्यों मुकद्दम (पहले) समझा गया?

सही उसूल तफ्सीर के मुताबिक लाज़िम है कि हम किसी क्राइल के क़ौल को उस के दीगर अक्वाल की रोशनी में समझें। चुनान्चे मौलाना रुम कहे गए हैं कि :-

मअनी कुरआँ ज़ कुरआँ पुरुस व बस

इसी तरह अगर हम कलिमतुल्लाह (मसीह) के किसी क़ौल की तफ्सीर करना चाहते हैं तो लाज़िम है कि हम इस क़ौल की तावील खुदावंद के दीगर अक्वाल की रोशनी में करें। इस सवाल का जवाब कि नजात के मुआमले में अहले-यहूद को क्यों तकदीम (तर्जीह) हासिल है। हमको खुदावंद के दीगर अक्वाल में मिलता है। एक दफ़ा आँखुदावंद (मसीह) ने सामरी औरत से असना-ए-गुफ़्तगु में फ़रमाया था कि, “नजात यहूदीयों में से है।” (यूहन्ना 4:22 (आँखुदावंद (मसीह) को मालूम था कि नजात का इल्म खुदा ने अहले-यहूद में वदीअत (अमानत, सुपुर्दगी) फ़रमाया है, पस खुदावंद ने अपनी हयात में अपने काम और पैग़ाम को एक हद तक अहले-यहूद में महदूद रखा। अहले-यहूद को दीगर अक्वाम (क़ौमों) की निस्बत खुदा-ए-वाहिद और बरहक़ का ज़्यादा इल्म था। हमने अपनी **“किताब नूर-उल-हुदा”** में बतलाया है कि ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क़ौमों) सनम-परस्ती (बुत-परस्ती) और शिर्क में और रसूम बंद में मुल्तला थीं। वो बुत-कदों में लाखों देवताओं के आगे सर-निगूँ होती थीं, लेकिन अहले-यहूद सिर्फ़ एक वाहिद खुदा की परस्तिश (इबादत) करते थे। पस मुनज्जी-ए-कौनैन (मसीह) ने अहले-यहूद की गम-गशता गिरोहों को जगाने की और उन पर खुदा का इल्म ज़ाहिर करने की सर तोड़ कोशिश की ताकि पहले वो खुद कलाम सुनें और फिर दीगर अक्वाम (क़ौमों) तक इस खुशख़बरी के पैग़ाम को पहुंचाने वाले बनें। मुनज्जी-आलमीन को इस बात का इल्म था कि दुनिया पर आपकी उम्र के दिन थोड़े हैं लेकिन आपको तारीकी हर तरफ़ छाई हुई नज़र आती थी। इस तारीकी में आपको एक शमा टिमटिमाती नज़र आती थी, यानी यहूदी क़ौम पस आपने दुनिया की तारीकी को दूर करने की गर्ज़ से इस एक टिमटिमाती शमा की तरफ़ ख़ास तवज्जोह की। अहले-यहूद खुदा की पहचान में बुत-परस्त फ़िलासफ़ा से भी गोया सबक़त ले गए हुए थे। जब हम यहूदी ताअलीम का यूनानी फ़ल्सफ़ा और अख़लाक़ीयात से मुकाबला करते हैं तो हम पर वाज़ेह हो जाता है कि सुकरात, अफ़लातून

और अरस्तू जैसे अजीमुशान फिलासफर इस ताअलीम का मुकाबला नहीं कर सकते। चुनान्चे इंग्लिस्तान का मशहूर फिलासफर मरहूम डाक्टर रीशडाल इस मौजू पर मुफस्सिल तबस्सरा करके इस नतीजे पर पहुंचता है कि :-

□मजहब और अखलाक के मुआमले में अरस्तू के हम-अस्र
यूनानी अहले-यहूद के मुकाबले में कल के बच्चे थे।□¹¹

पस जब खुदावंद ने अपना काम और पैगाम एक हद तक अहले-यहूद में महदूद रखा तो इस की वजह आपकी तंग-नज़री और कोताहबीनी ना थी, बल्कि इस की अस्ल वजह आपकी मुआमला-फहमी, दूर अंदेशी, और हिक्मते अमली थी, जिसके मुताबिक आपने अपने लाएहा-ए-अमल को ढाला था।

अगर मोअतरिज़ हमसे ये सवाल करे कि आँखुदावंद ने क्यों फ़रमाया था कि “नजात यहूदीयों में से है?□ क्या कोई और क़ौम नजात नहीं पाएगी? तो हम इस का जवाब ये देंगे कि, सय्यदना मसीह ने ये नहीं फ़रमाया था कि नजात यहूदीयों तक ही महदूद है। अगर आपने ये फ़रमाया होता तो मोअतरिज़ का एतराज़ दुरुस्त हो सकता था। लेकिन आपने फ़रमाया था कि “नजात यहूदीयों में से है।□ यानी नजात का इल्म यहूद में से निकल कर दुनिया में फैलेगा। अहले-यहूद दुनिया में नजात फैलाने का वसीला हैं। खुदा ने बनी-इस्राईल को इसलिए मुंतख़ब नहीं किया था कि सिर्फ वही नजात पाएं बल्कि खुदा ने यहूद के सपुर्द ये ख़िदमत की थी कि वो नजात का इल्म दुनिया की अक्वाम (क़ौमों) में फैलाईं। इस रिसाले की फ़स्ल दोम में हम ये साबित कर आए हैं कि खुदा ने अपनी तौहीद के इल्म को फैलाने के लिए बनी-इस्राईल को ख़ादिम के तौर पर चुना था, ना कि मंज़ूर-ए-नज़र के तौर पर चुना था। उनकी सहफ़ अम्बिया (नबियों के सहिफे) इस अम की शाहिद (गवाह) हैं कि “उम्मत इस्राईल ग़ैर-क़ौमों को रोशनी देने वाला नूर” मुकर्रर की गई थी। (लूका 2:32) मसलन, “ऐ बनी-इस्राईल तुम मेरे गवाह हो और मेरा ख़ादिम भी जिसे मैंने बर्गुज़ीदा किया। मैं ही खुदा हूँ सो तुम मेरे गवाह होगे। मैं तुझे अक्वाम (क़ौमों) के लिए नूर करूँगा और ज़मीन की इतिहा तक तुम मेरी नजात

¹¹ Rashdall, Conscience and Christ .pp.79-85

के पैगाम्बर होंगे।[□] गर्ज ये कि जिस तरह जर्मन नक्काद वेलहाससेन (Wellhasusen) कहता है कि :-

□बनी-इसाईल का ये अक्रीदा था कि, ला-इलाहा इल्लल्लाह
इसाईल रसूलुल्लाह। (यानी यहोवा खुदा के सिवा कोई खुदा नहीं
और इसाईल उसका रसूल है।) अहले-यहूद की रोजाना दुआ में ये
फ़िक्कह है।[□]

□ऐरे खुदावंद हमारे खुदा कुल कायनात के बादशाह ,तू
मुबारक है कि तूने हमको अक्वाम आलम) दुनिया की क़ौमों (में
से चुन लिया है।[□]

(2)

अगर कोई ये सवाल करे कि क्यों खुदा ने खास क़ौम यहूद को दुनिया में नजात का पैगाम देने के लिए मुंतखब किया और दूसरी क़ौमों को इस के ज़रीये अपने इल्म का नूर बख़शा? तो इस का जवाब ये है कि :-

हर किसे राबहर कार्य साखतन्द

ہر کسے را بہر کارے ساختند

ईलाही इंतजाम ही ऐसा है कि कुदरत ने मुख्तलिफ़ नेअमतेँ मुख्तलिफ़ अफ़राद और अक्वाम (क़ौमों) को अता फ़रमाई हैं और यह इंतजाम हमको दुनिया की छोटी बड़ी शैय में दिखाई देता है। मसलन हमारे बदन के मुख्तलिफ़ आज़ा के सपुर्द मुख्तलिफ़ काम किए गए हैं और तमाम आज़ा मिलकर बदन का सारा काम सर-अंजाम देते हैं। खुदा ने हाथ के सपुर्द एक काम किया है। आँख को दूसरा काम दिया है। कान को तीसरा अला हाज़ा-उल-क़यास (इसी तरह) हर एक उजू के सपुर्द एक खास काम है जो सिर्फ़ वही उजू बेहतरीन तौर पर कर सकता है और कोई दूसरा उजू इस खास काम को सर-अंजाम नहीं दे सकता। इसी तरह इन्सान की तमदुनी ज़िंदगी में एक उस्ताद है तो दूसरा लोहार है। एक सुनारर है तो दूसरा तबीब (डाक्टर, हक़िम) है। अला हाज़ा-उल-क़यास (इसी तरह

सोचते जाए) हर शख्स के सपुर्द कुदरत ने एक खास काम किया है और इस खास काम करने के वास्ते उस को पैदा किया है। वो काम सिर्फ वही बेहतरीन तौर पर कर सकता है और दूसरा शख्स इस काम को वैसी खुश-उस्तूबी के साथ अंजाम नहीं दे सकता। लेकिन तमाम अफ़राद मिलकर सोसाइटी के काम को चला रहे हैं। इसी तरह क़ौमों के सपुर्द कुदरत ने मुख्तलिफ़ नेअमतेँ की हैं। अगर हिन्दुस्तान को फ़ल्सफ़ा अता किया है तो रुम को क़ानून साज़ी की नेअमत अता की है। अगर जर्मनी को बाल की खाल निकालने की नेअमत अता की है, तो इंग्लिस्तान को तिजारत करने की नेअमत अता की है। अगर यूनान को इल्म व फ़ज़ल से माला-माल किया है तो यहूद को खुदा ने अपनी नजात का इल्म बख़शा है। गर्ज़ ये कि कुदरत ने हर क़ौम और मुल्क को मुख्तलिफ़ काम सपुर्द किए हैं और तमाम अक्वाम (क़ौमों) और ममालिक मिलकर निज़ाम-ए-आलम को चला रहे हैं। जिस तरह कुदरत ने यूनान के ज़रीये तमाम दुनिया में इल्म और फ़ल्सफ़ा की इशाअत की है और उस के सपुर्द ये ख़िदमत की कि दुनिया-भर में इल्म और फ़ल्सफ़ा को फैलाएं। इसी तरह रुम के सपुर्द ये ख़िदमत की कि दुनिया को क़ानून साज़ी का इल्म सिखाए। इसी तरह कुदरत ने अहले-यहूद के सपुर्द ये ख़िदमत की कि दुनिया में खुदा-ए-वाहिद की हस्ती का और उस की ज़ात व सिफ़ात और नजात का इल्म फैलाएं जिस तरह ये एक तवारीख़ी हकीक़त है कि तमाम दुनिया इल्म और फ़ल्सफ़ा के लिए यूनान की ममनून है और क़ानून साज़ी के लिए रुम की मर्हूने मिन्नत है। इसी तरह ये भी एक हकीक़त है कि कुल दुनिया खुदा-ए-वाहिद बरहक़ और लाज़वाल के इल्म और उस की नजात के नूर के लिए अहले-यहूद की शर्मिदा एहसान है।

(3)

जब हम अहले-यहूद की तारीख़ पर निगाह करते हैं तो हम देखते हैं कि इस क़ौम में जिसकी इब्तिदा सहरा से हुई और दीगर शामी अक्वाम मसलन इस्माईली, अदूमी, मूआबी, अम्मोनी वगैरह अक्वाम (क़ौमों) में (जिन के साथ इब्तिदा में यहूदी क़ौम का खूनी रिश्ता था) ज़मीन व आसमान का फ़र्क़ है। दीगर अक्वाम जिस सतह पर पहले थीं वहीं रहीं और उन्होंने ने इस से आगे एक क़दम भी ना बढ़ाया। बल्कि उनको ऐसा ज़वाल आया कि दौर-ए-हाज़रा में कोई इन अक्वाम के नाम से भी वाक़िफ़ नहीं। लेकिन क़ौम बनी-इस्राईल ने सहरा-ए-फ़िज़ा से निकल कर हैरत-अंगेज़ तरक्की की। वो मिस्र में गए लेकिन मिस्र की ज़बरदस्त तहज़ीब उनको ज़ब ना कर सकी। हालाँकि वो इस मुल्क में

गुलामी की हालत में रहे। जब उन्होंने कनआन में बदोबाश इख्तियार की तो वो अपने इर्द-गिर्द की कनआनी, फ़लस्ती और दीगर बुत-परस्त हमसाया अक्वाम की मुशरिकाना राह पर ना चले। माबाअद के ज़माने में इस क्रौम का साबिका अराम, असीरिया, बाबुल, मिस्र और ईरान व युनान व रोम के साथ पड़ा और उनमें से बाअज़ ममालिक इस पर हुक्मरान भी रहे, लेकिन उनमें से कोई भी इस्राईल की हस्ती को मिटा ना सके। एक ज़माने में इस का साबिका फ़ीनेश्या (Phoenicia) के साथ पड़ा जो ऐसी ज़बरदस्त बहरी (समुंद्री) ताक़त थी कि दुनिया को अपने कब्ज़े में लाने के लिए सल्तनत-ए-रूम का मुकाबला करती थी। लेकिन क्रौम यहूद के सामने उस की एक ना चली। बहीरा मुतवस्सित के मशरिकी साहिल के इर्द-गिर्द के ममालिक में सिकंदर-ए-आज़म की फुतूहात की वजह से यूनानी तहज़ीब हुक्मरान रही और जब रूम ने इन ममालिक को फ़तह क्या उस ज़माने में भी यूनानी इल्म-ए-अदब और तहज़ीब का दौर दौरा था और साथ ही रूमी तहज़ीब का सिक्का भी जम गया। इस यूनानी रूमी तहज़ीब के ग़लबे ने बहीरा मुतवस्सित के ममालिक की तहज़ीब का ख़ातिमा कर दिया और मुआमला यहां तक पहुंचा कि मिस्र की ज़बरदस्त तहज़ीब के पांव भी उखड़ गए और वो भी ताब मुकाबला ना ला सकी, लेकिन ये यूनानी रूमी तहज़ीब अपनी तमाम ताक़त के बावजूद क्रौम इस्राईल के मज़हब की बुलंदी और रिफ़अत को कुबूल किए बग़ैर कोई चारा ना देखा। बनी-इस्राईल ने इब्तिदा से लेकर आखिर तक अपनी अनानीयत (खुदी, गुरूर, खुद-सताई) को हाथ से ना खोया। रूए-ज़मीन की तारीख में क्रौम इस्राईल की जुदागाना हस्ती एक ऐसा मोअजिज़ा है जिससे किसी मुअरिख को मजाल इन्कार नहीं। ये क्रौम फ़ख़्रिया कह सकती है कि :-

यूनान व मिस्र व रोम सब मिट गए जहां से
मिटता नहीं है लेकिन नामोनिशां हमारा
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी
सदीयों रहा है दुश्मन दौर-ए-फ़लक हमारा

हमको ये फ़रामोश नहीं करना चाहिए कि फ़ी ज़माना जब हम यूनान और रोम की तहज़ीब का ज़िक्र करते हैं तो वो यूनान और रोम जिनकी तहज़ीब का ज़िक्र किया जाता है, सफ़ा हस्ती से हमेशा के लिए मफ़कूद (गायब) हो चुके हैं। गोया ममालिक

आजकल दुनिया के नफ़िशा पर मौजूद हैं और यूनान में बस्ते हैं और रोम एक बड़ी ताक़त है, लेकिन दौरे-ए-हाज़रा के यूनान और रोम का क़दीम यूनान और रोम की तहज़ीब से रती भर ताल्लुक नहीं। वो तहज़ीब मिट चुकी है और हर्फ़-ए-ग़लत की तरह महव (गायब) हो चुकी है। लेकिन बनी-इस्राईल का ये हाल नहीं, उनकी तहज़ीब मुर्दा नहीं। अगरचे वो अर्ज़-ए-मुक़द्दस में मन-हैस-उल-क्रौम (काहिनों की ममलकत من حیث القوم) नहीं बस्ते।

आख़िर कोई वजह तो ज़रूर है कि ये क्रौम जिसकी सियासी और दुनियावी नुक़्ता निगाह से कुछ हैसियत नहीं ज़िंदा है। इस की वजह सिवाए इस के और कुछ नहीं कि रब-उल-आलमीन ने अपनी परवरदिगारी में इस हकीर क्रौम को खासतौर पर चुन लिया था, ताकि अक्वाम आलम (दुनियां की क्रौमों) को ख़ुदा का सबक़ सिखलाए। क्रौम यहूद को भी अपने मिशन का एहसास था, इसी लिए उसने अपने आपको किसी मुशरिकाना बुत-परस्त क्रौम कुफ़्फ़ार में ज़ब्ब होने ना दिया। उनकी तारीख़ इस पेशगोई को साबित करती है जो बलआम ने इन की निस्बत की थी कि, “ये लोग अकेले सुकूनत करेंगे और क्रौमों के दर्मियान शुमार ना किए जाएंगे।” (गिनती 23:9 (उनको बख़ूबी मालूम था कि, “ख़ुदावंद ने याक़ूब को अपने वास्ते चुन लिया और इस्राईल को अपने खास घराने के वास्ते चुना।” (जबूर 135:4 (इस इतिखाब का मतलब ये नहीं था कि बनी-इस्राईल की क्रौम ख़ुदा की मंज़ूर-ए-नज़र है या वो जो चाहें सो करें ख़ुदा हर हाल में उनका मददगार होगा। बल्कि ख़ुदा ने साफ़ तौर पर उनको बतला दिया था कि इस खास ताल्लुक की वजह से उन पर चंद एक ज़िम्मेदारियाँ आइद होती हैं, क्योंकि ये एक कानून-ए-फ़िन्नत है कि “जिसको ज़्यादा दिया जाता है, उस से ज़्यादा तलब किया जाता है।” चुनान्चे ख़ुदावंद ने हज़रत आमोस के ज़रीये उनको ख़बरदार कर दिया था और फ़रमाया था, “अक्वाम-ए-आलम (दुनिया की क्रौमों) में से मैंने सिर्फ़ तुम को जाना है, इसलिए मैं तुमको तुम्हारी सारी बदकारियों के लिए सज़ा दूँगा।” (आमोस 3:2) पस इतिखाब (चुनने) का मतलब ये ना था कि बनी-इस्राईल की ज़ात को फ़ायदा पहुंचे, बल्कि ख़ुदा का ये अज़ली इरादा था कि बनी-इस्राईल ख़ुदा की मार्फ़त के लिए एक तब्लीगी क्रौम हो। ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क्रौमों) के दर्मियान वो चमकने वाला नूर होता कि सय्यदना मसीह की नजात का इल्म फैलाने के लिए वो अक्वाम आलम (दुनिया की क्रौमों) को तैयार करे। और मुनज्जी-आलमीन (मसीह) के पैग़ाम की पेशरू हो। पस बनी-इस्राईल का ये मिशन

था कि ये क्रौम खुदा के इल्म को क्रौमे-ए-आलम में पहुंचाने की खिदमत को पूरा करे और इस क्रौम को ये एहसास था कि उनकी क्रौम फ़ना नहीं हो सकती तावक़ते के वो अपने मिशन को पूरा ना करे। (हिज़्कीएल 37:20 ता 28) ये एक तवारीख़ी हकीकत है कि इस नुक्ता निगाह से कुल अक्वाम आलम (दुनिया की सारी क्रौमों) में कोई दूसरी क्रौम बनी-इसाईल की हमपल्ला (बराबरी की) नहीं हुई।

इब्तिदा ही से बनी-इसाईल अपने खुदा में वहदानीयत, कुद्दुसियत, पाकीज़गी और रहम की सिफ़ात के काइल थे। ये सिफ़ात ना तो उनकी हमसाया अक्वाम (क्रौमों) के माबूदों में और ना दुनिया की किसी क्रौम के माबूदों में पाई गई। ना तो उन माबूदों के परस्तारों (इबादत गुजारों) ने अपने देवी-देवताओं में ये सिफ़ात पाइं और ना ये माबूद अपने परस्तारों से पाकीज़गी के तालिब हुए।

दुनिया की तमाम दीगर अक्वाम (क्रौमों) की तारीख़ में एक ऐसा ज़माना आया, जब इनकी अख़लाकी नशव व नुमा इस क़द्र तरक्की कर गई कि वो अपने देवी देवताओं और माबूदों की सिफ़ात व आदात की नुक्ता-चीनी करने लगे। मसलन कि वो चोरी या ज़िनाकारी के मुर्तक़िब थे, बल्कि ज़िनाकारी बाअज़ अक्वाम (क्रौमों) की परस्तिश (इबादत) का हिस्सा थी। जिस तरह अहले-हुनुद के बाअज़ देवी देवताओं की परस्तिश का हिस्सा है। लेकिन क्रौम इसाईल की तारीख़ में ऐसा वक़्त कभी ना आया। इसाईल का खुदा खुदा-ए-कुद्दूस और तमाम सिफ़ात-ए-हसना का जामा था, जो अपने परस्तारों (इबादत गुजारों) से पाकीज़गी का तालिब था। तारीख़ गवाह है कि खुदा ने सिर्फ़ बनी-इसाईल के ज़रीये अक्वाम-ए-आलम को ये ताअलीम दी कि खुदा की ज़ात ना सिर्फ़ हर तरह की बदी से मुनज़ज़ह और मुबर्रा है, बल्कि वो एक ऐसी वाहिद अकबर और कुद्दूस हस्ती है, जिसका मतलब ये है कि “तुम पाक हो क्योंकि मैं पाक हूँ।” (अहबार 11:44 (

यही वजह थी कि सय्यदना मसीह ने अहले-यहूद के दर्मियान अपनी खिदमत को एक हद तक महदूद रखना मुनासिब ख़याल फ़रमाया और हमेशा अहदे-अतीक की कुतुब का ही इस्तिमाल फ़रमाया। आपकी ताअलीम में अहले-यहूद की लिट्रेचर के इलावा किसी और क्रौम के इल्म-ए-अदब का ज़िक्र नहीं पाया जाता। हालाँकि अगर आप चाहते तो कदीम यूनान के फ़लसफ़ियाना ख़यालात और ईरान व हिन्दोस्तान के मज़ाहिब की कुतुब

का जिक्र कर सकते थे, लेकिन आपने ऐसा ना किया, क्योंकि अहले-यहूद ने कुदरत में मज्हबी मिजाज और ईलाही रगबत व दीअत कर रखी थी।

(4)

अहले-यहूद सामी नस्ल के थे और दुनिया के बेहतरीन अम्बिया और तमाम मजाहिब के अजीमुशान अश्खास इसी नस्ल से पैदा हुए हैं। हजरत इब्राहिम खलील-उल्लाह (अल्लाह के दोस्त) से लेकर रसूल-ए-अरबी तक जितने अम्बिया और मुस्लिहीन (सुधारक) पैदा हुए हैं, सब इसी नस्ल के थे। अहले-यहूद ने ही खुदा का इल्म दुनिया के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैला दिया। आज दुनिया के अजीमुशान मजाहिब ने सिर्फ यहूदीयत से ही तौहीद का इल्म पाया। मसीही कुतुब मुकद्दसा में यहूदी कुतुब मुकद्दसा शामिल हैं और इस्लाम की किताब कुरआन मजीद बबांगे दहल (नकारे की चोट पर) पुकार कर यहूदी कुतुब मुकद्दसा को बनी-नूअ इन्सान के लिए हिदायत, नूर कामिल, नेअमत, रहमत, रहनुमा वगैरह करार देती है और उन को इमाम-उल-कुतब वन्नास (यानी किताबे मुकद्दस को इन्सानों और किताबों की इमाम) बतलाती है और बानी इस्लाम और अहले इस्लाम को हिदायत करती है कि इन कुतुब मुकद्दसा के अहकाम पर चलें।

(5)

अहले-यहूद की कुतुब मुकद्दसा से हम को मालूम होता है कि किस तरह खुदा ने क्रौम-इसाईल को अपना पैगाम तमाम दुनिया को पहुंचाने की खिदमत अता फ़रमाई और बनी-इसाईल की तारीख से मालूम होता है कि, किस तरह खुदा ने इस क्रौम की तारीख की मुख्तलिफ़ मनाज़िल में इस को इस मुबारक खिदमत को सरअंजाम देने के लिए तैयार भी किया। पस मुनज्जी-ए-कौनैन (मसीह) ने इस क्रौम में काम किया जिसमें खुदा ने खास तौर पर अपना इल्म वदीअत कर रखा था और जिस के सपुर्दे ये खिदमत की गई थी और जो इस खिदमत के लिए ईलाही इंतज़ाम के मुताबिक तैयार भी की गई थी। आपने अपने काम और पैगाम को इसी क्रौम में हद तक महदूद रखा ताकि इस को मुबारक खिदमत के लिए ज़्यादा तैयार करें। कलिमतुल्लाह (मसीह) इस दुनिया में नूर हो कर आए और तमाम दुनिया भर की अक्वाम (क्रौमों) में सिर्फ अहले-यहूद ही ऐसे थे

जिनको खुदा ने अपनी नजात का इल्म फैलाने के लिए तैयार रखा था। वो खुदा-ए-वाहिद कुद्दूस के काइल थे और मानते थे कि हय्युल-कय्यूम खुदा इस कायनात का खालिक और परवरदिगार है। जिसने दुनिया को एक खास मक्सद की खातिर पैदा किया है। और वाकियात-ए-आलम में से कोई वाकिया भी उस के इल्म और इरादे के बगैर वकूअ पजीर नहीं होता। इनके पास मुकद्दस किताबें थीं। इनके पास अम्बिया आए थे जो मसीह मौऊद की आमद, सिफात, खसूसीयात आपकी सलीबी मौत और क्रियामत की पेश गोईयां कर चुके थे। अहले-यहूद इस मसीह मौऊद की आमद के इंतजार में बेकरार थे। पस इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने अपनी दूर-अंदेशी और हिक्मत-ए-अमली और नुक्ता रस (तेज फ़हम) तबीयत की वजह से इस तैयार ज़मीन में अपनी ताअलीम का बीज बोया (मत्ती 13:2 ता 9) सय्यदना मसीह ने बनी-इस्राईल में ईमान देखा और उन में वसीअ पैमाने पर अपना काम किया। खुदावंद (मसीह) ईमान की तलाश में थे और जहां कहीं आपने ज़रा भी ईमान देखा वहां आपने काम किया ख्वाह वो ईमान अहले-यहूद में देखा ख्वाह गैर-यहूद में। (मर्कुस 5: 19 वगैरह) जहां सय्यदना मसीह ने तैयार ज़मीन देखी वहां आपने अपनी ताअलीम का बीज बो दिया। (मत्ती 13:38 ता 39) चूँकि सबसे ज़्यादा तैयार ज़मीन आपको अहले-यहूद में ही मिली लिहाज़ा आपने तीन साल के मुख्तसर अर्से में अपने काम और पैगाम को एक हद तक अहले-यहूद में महदूद रखा। क्योंकि गैर-अक्वाम (गैर-कौमें) खुदा से नावाकिफ़ और बुत-परस्त थीं। ना वो खुदा पर ईमान रखती थीं, ना सहफ़ मुकद्दसा उनके पास थीं और ना वो मसीह मौऊद की मुंतज़िर थीं। उनके समझाने के लिए एक अर्सा-ए-दराज़ और मुबल्लगीन की कसीर (बड़ी) तादाद की ज़रूरत थी और यहां सय्यदना मसीह के पास सिर्फ़ आपकी ज़िंदगी के चंद माह और मादूद-ए-चंद (गिनती के, बहुत थोड़ी तादाद में) हवारइन (शागिर्द) थे जो आपकी ज़िंदगी के आखिर तक आपके पैगाम की तह को ना पा सके। (लूका 22:24, मत्ती 20:25, लूका 24 44, आमाल 1:6 वगैरह) पस सय्यदना मसीह ने अपनी दूर-अंदेशी और हिक्मत-ए-अमली को काम में लाकर अपनी खिदमत का अक्सर हिस्सा अहले-यहूद में सर्फ़ किया, ताकि वो इस बर्गशता कौम को दुबारा खुदा-ए-वाहिद के कदमों में ला कर उनको अपना वो नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) याद दिलाएँ जो उनकी कुतुब-ए-मुकद्दसा में बार-बार बतलाया गया था और उन के अम्बिया ने जो कई सदीयों से खुदा की तरफ़ से मामूर हो कर उनकी तरफ़ आए थे उनको बार-बार बतलाया था, कि वो अक्वाम आलम (दुनिया की कौमों) में खुदा की नजात की इशाअत का वसीला बनने के लिए अपने आपको तैयार करें।

(6)

दौर-ए-हाजरा में हम हिन्दुस्तान के मुसलमानों और हिंदुओं की मिसाल देकर अपने मतलब को वाज़ेह कर देते हैं। अगर कोई शख्स मुसलमानों में से मसीहीयत का हल्का-ब-गोश हो जाए और वो अपने खुदावंद और मुनज्जी (नजात-दहिंदा) के पैगाम को अपने हम-वतनों पर ज़ाहिर करना चाहे तो वो हिंदू और मुस्लिम जमाअतों में से किस जमाअत में पहले अपनी तब्लीगी कोशिशों को शुरू करेगा? अगर उस को ये इल्म हो कि उस की ज़िंदगी के चंद माह बाकी हैं और उस के मादूद-ए-चंद शागिर्द उस के कलाम को कमा-हक्का नहीं समझते और अगर वह खुद हिंदू-मज्हब के अक्काइद व रसूम और ज़बान वगैरह से ना-बलद (नाआशना, नावाक़िफ़) हो, लेकिन मुस्लिम अक्काइद रसूम और अरबी फ़ारसी ज़बान से वाक़िफ़ हो, तो ये ज़ाहिर है कि वो अपनी ख़िदमत का अक्सर हिस्सा मुस्लिम हलकों में सर्फ़ करेगा। क्योंकि मुसलमान खुदा पर, खुदा की किताबों, रसूलों पर, नबुव्वत पर, क़ियामत पर, हश्र व नश्र पर ईमान रखते हैं। वो कलिमतुल्लाह (मसीह) से ना सिर्फ़ वाक़िफ़ हैं बल्कि आप पर ईमान रखते हैं। कुरआन व हदीस में आपकी बाबत बक़सत तसरीहात (तसरीह की जमा, तशरीह, साफ़ तौर पर बयान करना) मौजूद हैं और अहले-इस्लाम आपकी आमद सानी के मुंतज़िर और बेकरार हैं। इस के बरख़िलाफ़ अहले-हनूद मसीह से महज़ ना-बलद (नावाक़िफ़) हैं। ना उनके वेदों में आँखुदावंद का ज़िक्र है ना उनकी की कुतुब में आपका नाम और निशान है। यही वजह है कि मसीही कलीसिया अहले-इस्लाम में ज़्यादा सहूलत के साथ काम कर सकती है।

(7)

तारीख़ इस अम्र की गवाह है कि मुनज्जी आलमीन (मसीह) के यहूदी नज़ाद (हसब, नसब) शागिर्दों ने ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क्रौमों) में मुनज्जी-आलमीन (मसीह) के पैगाम को फैलाया। आपके रसूल सब यहूदी क्रौम के थे और वही ग़ैर-अक्वाम के रसूल भी हुए। हम फ़स्ल-ए-चहारुम व पंजुम में इस बात का मुफ़स्सिल ज़िक्र करेंगे कि ग़ैर-यहूद अक्वाम की कलीसियाएं इन्ही यहूदी नस्ल के रसूलों की वसातत से मुनज्जी-आलमीन के क्रदमों में आईं। पस ये ज़ेरे बहस सय्यदना मसीह की दोरुबीन (दुरे से देखने वाली) निगाहों और हिकमत-ए-अमली और दूर-अन्देशी और मुआमला फ़हमी पर दलालत करती है, ना कि आपके मिशन के महददूद होने पर दलील है।

मसीही नजात की आलमगीरी

पस कलिमतुल्लाह (मसीह) के कलिमात तय्यिबात, अहकाम, हिदायात, पैगाम, लाएहा-ए-अमल और तर्ज-ए-अमल से हर मुंसिफ़ मिजाज शख्स यही नतीजा अख़ज करेगा कि आपकी नज़र तमाम दुनिया की कुल अक्वाम (सारी कौमों) पर थी। दौर-ए-हाज़रा में डाक्टर मॉटी फ़ेअरी से ज़्यादा काबिल शख्स यहूदीयत में नहीं है। हम उस के अल्फ़ाज़ ज़ेल में दर्ज करते हैं ताकि मोअतरज़ीन (एतराज़ करने वाले) उन पर गौर करके अपने खयालात की सेकली (साफ़, चमक) कर सकें। ये यहूदी आलिम सवाल करता है कि :-

“क्या मसीह की बादशाहत आलमगीर है ?क्या इस नई बादशाहत में कौमीयत की इम्तियाज़ नहीं है ?क्या यहूद और ग़ैर-यहूद मसीही खुदा के सामने बराबर हैं ?इन सवालात के जवाब में कहता है कि, ये मानने के लिए काफ़ी दलाईल मौजूद हैं कि दीगर यहूदी अम्बिया की तरह सय्यदना मसीह का भी खयाल था कि उस की नई बादशाहत में ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-कौमों) के इमानदार खारिज शूदा यहूदी गुनेहगारों की जगह ले लेंगे। मशरिक और मगरिब शुमाल और जुनूब से ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-कौमों) आयेंगी और आस्मानी ज़ियाफ़त (दावत) में इब्राहिम की हकीकी औलाद बनी-इस्राईल के साथ बराबरी का दर्जा हासिल करेंगी। एक और अम्र में जनाब-ए-मसीह के खयालात अपने हम-अस्रों (हम-जमानों) के खयालात से बुलंद व बाला थे। उसने अहले-यहूद की कौमी तंग-नज़री को बिल्कुल नज़र-अंदाज कर दिया, जहां तक उन ग़ैर-मुकम्मल मुतअस्सिब और एक तरफ़ा इंजीली बयानात से पता चल सकता है, हमको मानना पड़ता है कि सय्यदना मसीह अपनी बादशाहत को कोई यहूदी सलतनत खयाल नहीं करता था। उस की बादशाहत में यहूद को ग़ैर-यहूद पर कोई फ़ज़ीलत हासिल नहीं। उस बादशाहत में ना कोई हाकिम है ना कोई मुहकम और ना कोई बाजगिज़ार है। अगर बादशाहत

में कोई दर्जा बंदी है तो वो खिदमत के लिहाज़ से है। इस में सबसे बड़ा वो है जो सब का खादिम है।¹²

एक और यहूदी रब्बी डाक्टर कलासंर कहता है कि :-

“जनाब-ए-मसीह ने यहूदी अम्बिया की ताअलीम से तमाम क़ौमी और सियासी उमूर को खारिज करके अपनी ताअलीम को आलमगीर बना दिया।¹³ फिर एक और जगह कहता है कि ये हक़ है कि यहूदीयत से मसीहीयत पैदा हुई। यही वजह है कि यहूदीयत और मसीहीयत में मुमासिलत और मुशाबहत (यकसानियत) है लेकिन ये भी हक़ है कि यहूदीयत के साथ मसीहीयत ने किसी किस्म की मुसालहत ना की और इस ने अपने उसूल को अपनी राह पर चलाया और यही वजह है कि यहूदीयत और मसीहीयत में मुगाइरत और फ़र्क अज़ीम है।”¹⁴

हमें उम्मीद है कि अहले-इस्लाम अहले-यहूद ही से इन्साफ़ की बात करना सीखेंगे, जिनको कुरआन ने गधे की तरह हमिल तौरात (सूरह जुमा आयत 4) “नाखलफ़” (आराफ़ 168, मर्यम 60) और “स्याह दिल” (माइदा 16) के खिताबात दे रखे हैं।

¹² Montifiori, Religious Teachings of Jesus

¹³ Klausner, Jesus of Nazareth, pp.117,369-411

¹⁴ IBI D,p 10

फ़स्ल चहारुम

हवारइन (शागिर्दों) की तहरीरात और तरीक़ अमल

अगर कोई शख्स इब्ने-अल्लाह (मसीह) के अहकाम के हकीकी मंशा और असली मतलब को समझ सकता था तो वो आपके हवारी (शागिर्द) थे। आपके रसूल आपकी सोहबत से हर वक़्त फ़ैज़याब होते थे। चुनान्चे उनको ये शर्फ़ हासिल था कि उन्होंने आपके कलिमात-ए-तय्यिबात को “खुद अपने कानों से सुना और आपको अपनी आँखों से देखा, बल्कि गौर से देखा और अपने हाथों से छुवा, हमने उस को देखा और उस की गवाही देते हैं और उसी हमेशा की ज़िंदगी की तुमको ख़बर देते हैं, जो कुछ हमने देखा और सुना है उस की तुमको ख़बर देते हैं, ताकि तुम भी हमारे शरीक हो और यह बातें हम इसलिए लिखते हैं कि हमारी खुशी पूरी हो जाए।” (1 यूहन्ना पहला बाब) ये हवारइन (शागिर्द) तबा ताबईन के गिरोह में से ना थे बल्कि ये वो लोग थे जिनको आपकी रिफ़ाक़त में रहने का फ़ख़्र हर वक़्त हासिल था और आपके उठने बैठने, चलने फिरने, खाने पीने, सोने जागने, हँसने रोने, मज़ाक़ तबईत, अंदाज़-ए-गुफ़्तगू, तर्ज़-ए-ज़िंदगी, गर्ज़ कि आपकी एक-एक अदा से वाकिफ़ थे। वो कलिमतुल्लाह (मसीह) के साथ शुरू से आख़िर तक रहे। (यूहन्ना 15:27 आमाल 1:2 वगैरह) पस आपके रसूल माबाअद (बाद) की नसलों से ज़्यादा और गुमराह कुन मुफ़स्सरीन से कहीं ज़्यादा अपने आका और मौला के नस्ब-उल-ऐन (मक्सद) मतमाअ नज़र और असली मक्सद को जानते थे। जब हम इन शागिर्दों और हवारियों के लाएह-अमल, तर्ज़-ए-अमल, ताअलीम, हिदायात और अहकाम पर गौर करते हैं तो हम पर ये ज़ाहिर हो जाता है कि मुनज्जी-आलमीन (मसीह) के सब शागिर्द और कुल हवारइन (शागिर्द) यही समझे कि आँखुदावंद सिर्फ़ अहले-यहूद के लिए मबरूस हो कर नहीं आए थे, बल्कि आप दुनिया की कुल अक्वाम और बनी-नूअ इन्सान के मुनज्जी (नजात-दर्हिदा) हो कर इस दुनिया में आए थे।

(2)

खुदावंद (मसीह) की आखिरी हिदायात के मुताबिक शागिर्दों ने अक्वल ही अक्वल यरुशलेम में गवाही देनी शुरू की। इब्ने-अल्लाह (मसीह) के सऊद आस्मानी के बाद मोमिनीन का गिरोह मुबल्लगीन की अजीमुशान जमाअत में तब्दील हो गया। उन्होंने यरुशलेम को मर्कजी मुक़ाम करार देकर आस-पास के गांव, कस्बों और शहरों में इन्जील की बशारत (तब्लिग) की खिदमत शुरू कर दी। अहले-यहूद उनको तरह तरह की ईजाएं (सताव) देने लगे ताकि वो इस बात से बाज़ आ जाएँ। (आमाल 4:18) लेकिन

گشتگان خنجر تسلیم را۔ ہر زماں از غیب جانے دیگر است

ایڈارسانیوں نے ان کی آتش شوق کو دو بالا کر دیا۔ ع

حدی راتیز تر میخوں چو محمل را گراں بینی

गश्तगान खंजर रतसलीम रा। हर ज़माँ अज़-गेब जाने दीगर अस्त

इजा रसानियों ने उनकी आतिश-ए-शौक को दो-बाला कर दिया।

हुदा रातीज़ तर मेखों चू महमल रागरां बीनी

फिलिप्पुस शहर सामरिया में जाकर मुनादी करने लगा और लोगों ने बाला इतिफ़ाक़ उस की बातों पर जी लगाया। जब रसूलों ने जो यरुशलेम में थे सुना कि, सामरियों ने खुदा का कलाम कुबूल कर लिया तो पतरस और यूहन्ना को उनके पास भेजा वो गवाही देकर और खुदा का कलाम सुना कर यरुशलेम को वापिस हुए और सामरियों के बहुत से गांव में खुशखबरी देते गए।” (आमाल 8 बाब) जाये गौर है कि वो यहूद जो सामरियों के साथ सदियों से पुर-खार (तक्लीफ़-देह) रखते थे मसीह में हो कर अपने यहूदी तअस्सुबात से कुल्लियतन (पुरे तौर से) ऐसे आज़ाद हो जाते हैं कि अपने जानी दुश्मनों को मसीही उखुव्वत (भाईचारे) की अजीमुशान बिरादरी में दाखिल करने के लिए सरतोड़ कोशिश करते हैं। अब की दफ़ाअ जब मुक़द्दस यूहन्ना सामरिया में गया होगा तो क्या वो जिगर खराश (निहायत रंज-दह) वाक़िया याद ना आया होगा “जब

सामरियों ने खुदावंद को और आपके शागिर्दों को अपने गांव से निकाल दिया था और ऐसा बुरा सुलूक किया था कि मुकद्दस यूहन्ना का जी चाहता था कि आग आस्मान से बरसे और उन को भस्म कर दे।” (लूका 9:54) लेकिन सय्यदना मसीह की रूह ने हर तरह की कुदूरत और मलाल, बुरज और अदावत को उस (शागिर्द, रसूल) के दिल से निकाल दिया। (लूका 9:55 (और वो “सामरिया के बहुत से गांव में खुशखबरी देते गए” और उन के बाशिंदों को मसीही कलीसिया की बिरादरी में शामिल करते गए।” (आमाल 8:17)

मुकद्दस फिलिप्पुस ने एक हब्शी वजीर को बपतिस्मा दिया। (आमाल 8:38) मुकद्दस पतरस ने कुर्नेलियुस को जो गैर-क्रौम और इटली का सूबेदार था बपतिस्मा दिया। (आमाल 10:48 (और उस के घर में गैर-यहूद को इन्जील जलील की आलमगीरी पर दर्स दिया। (आमाल 10 बाब) मुनज्जी-कौनैन (मसीह) के मस्लूब होने के तीन साल के अंदर मसीहीयत दमिशक तक फैल गई। वहां उसने ऐसी जड़ पकड़ी कि यरूशलेम के सरदार काहिनों ने साऊल को खुतूत दिए ताकि जिन लोगों को वो मसीहीयत पर पाए “ख्वाह मर्द ख्वाह औरत उनको बांध कर यरूशलेम में लाए।” (आमाल 9:2) मुकद्दस स्तिफनुस के शहीद होने पर सय्यदना मसीह के नाम का पर चार अन्ताकिया तक चले गए और उन्होंने ने यूनानियों को बशारत दी “और खुदावंद का हाथ उन पर था और बहुत से लोग ईमान ला कर खुदावंद की तरफ रुजू लाए। इन लोगों की खबर” यरूशलेम की कलीसिया के कानों तक पहुंची और उन्होंने ने बर्नबास को अन्ताकिया तक भेज दिया। वो पहुंच कर और खुदा का फ़जल देखकर खुश हुआ।” (आमाल 11:21 (वाकिया सलीब के तीन साल के अंदर-अंदर शागिर्दों ने ये सब कुछ कर दिया। रऊसा-ए-यहूद ने मुनज्जी-आलमीन (मसीह) को मस्लूब करके अपने ज़ाम-ए-बातिल में आपकी रिसालत और नजात के पैगाम का खातिमा कर दिया था। लेकिन वो अब ख्वाब-ए-गिराँ से जागे, उन्होंने यहूदीयत को कायम रखने के लिए हाथ पांव मारने शुरू किए और बेगुनाह मसीहीयों को ईज़ा (सताव, तकलीफ़) देने पर कमर बांध ली, लेकिन शहीदों का खून कलीसिया का बीज साबित हुआ। खुदावंद के मस्लूब होने के बीस साल के अंदर अन्ताकिया जो शिर्क-ए-ज़िनाकारी और शहवत परस्ती का घर था। इन्जील जलील की बशारत का सदर मुक़ाम बन गया। इस जगह से सल्तनत रूमा के मुख्तलिफ़ सूबे मसलन गलातियाह, मक्किदूनिया, आक्या, एशया-ए-कोचक वगैरह के बाद दीगरे

मसीहीय्यत के हल्का-ब-गोश हो गए। इसी सदर मुकाम से इफिसुस और जज़ाइर ईजीबन (جزائر الكيبين) में बशारत (तब्लिग) का काम अदा किया गया। इन्जील के अलमबरदार समुंद्र पार करके शहर रुम में जा पहुंचे जो उस ज़माने की मालूम दुनिया का मर्कज़ था।

सय्यदना मसीह की मौत के चालीस (40) साल बाद रूमी अफ़वाज (फ़ौजों) ने यरूशलेम को तबाह और बर्बाद कर दिया और इस वाकिये के बाद मसीहीय्यत और यहूदीयत के ताल्लुक का आखिरी रिश्ता टूट गया और खुदावंद के हवारइन (शागिर्द) और ताबईन ने पहली सदी के इख्तताम (खात्मे) से पेशतर गैर-अक्वाम (गैर-क्रौमों) और गैर-यहूद इलाकों में रुम और इफिसुस जैसी मुख्तलिफ़ और दूर-दराज़ जगहों में तब्लीगी मसाई (कोशिश) के सदर मुकाम बना लिए। (Harnack, Expansion of Christianity) सलीब के रसूल यूनान को भी इन्जील का फ़र्हत अफ़जा पैगाम सुना गए और जज़ीरानुमा अतालिया और हसपानीया गर्ज “ज़मीन की इंतिहा” तक मुज्दा जान फ़िज़ा दे गए। खुदावंद के हवारियों और रसूलों ने उस ज़माने की मालूम दुनिया के हर मुल्क और हर क्रौम को मुनज्जी-आलमीन (मसीह) की नजात का पैगाम दे दिया।

(3)

काबिल-ए-गौर बात ये है कि ये मुबल्लगीन जिन्हों ने इन्जील की खातिर ऐसी शानदार ख़िदमात सर-अंजाम दीं, यहूदी नस्ल के लोग थे। हम गुजशता फ़स्ल में बतला चुके हैं कि यहूद किस नफ़रत के साथ गैर-यहूद से पेश आते थे, लेकिन इब्ने-अल्लाह (मसीह) की ताअलीम और नमूने ने और मसीह की रूह ने इन मुबल्लगीन के दिलों में से हर क्रिस्म के क्रौमी और नसली इम्तियाज़ात और तअस्सुबात को निकाल दिया था। रसूलों के आमाल की किताब का मुसन्निफ़ खुद गैर-अक्वाम (गैर-क्रौमों) में से मुशरफ़ बह मसीहीय्यत हुआ था। लेकिन इस किताब के किसी लफ़ज़ से भी ये ज़ाहिर नहीं होता कि मसीही कलीसिया की उखुव्वत और बिरादरी (भाईचारे) में यहूदी अंसर ने गैर-यहूद को जो मसीह पर ईमान लाए थे नफ़रत और हिकारत की निगाह से देखा हो या गैर-यहूद ने जो मसीहीय्यत के हल्का-ब-गोश हो गए थे। उन लोगों को जो अहले-यहूद से कलीसिया में दाखिल हुए थे बुग़ज़ या अदावत की नज़र से देखा हो। तस्नीफ़ आमाल-उल-रसूल (रसूलों के आमाल) ये साबित करती है कि इस के गैर-क्रौम मुसन्निफ़ को क्रौम-यहूद से किसी क्रिस्म का इनाद (नफ़रत) ना था। पस मसीहीय्यत का ये मोअजिज़ा

शुरू से ही चला आया है कि जो अशखास मुख्तलिफ़ अक्वाम में से इस में दाखिल होने का शर्फ़ हासिल करते हैं, वो हर तरह के क्रौमी नसली इम्तियाजात, तअस्सुबात और दर्जा बंदीयों से आजाद हो कर मसीही मुहब्बत के बंधनों में जकड़े जाते हैं। लेकिन

गरना बीद बरोज़ शिप्रा चश्म

चश्मा आफ़ताब राचा गुनाह

گرنه بیند بروز شپره چشم

چشمه آفتاب راچه گناه

मुक़द्दस पौलुस और मसीहीय्यत की आलमगीरी

मोअतरजीन (एतराज़ करने वाले) जो ये एतराज़ करते हैं कि कलिमतुल्लाह (मसीह) की रिसालत और पैगाम सिर्फ़ अहले-यहूद तक ही महदूद है। अब इस मुश्किल में गिरफ़्तार हुए कि मसीहीय्यत की ग़ैर-यहूद के दर्मियान फैलने की हकीकत की तावील (बचाओ की दलील) किस तरह करें। उन्होंने ये रवैय्या इख़्तियार किया कि कलिमतुल्लाह (मसीह) को तो सिर्फ़ एक यहूदी मुस्लेह (सुधारक) बनाया और ग़ैर-यहूद के दर्मियान इन्जील की इशाअत का सहारा मुक़द्दस पौलुस के सर पर बांध दिया और कहा कि, ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क्रौमों) के दर्मियान मसीहीय्यत की इशाअत का ख़्याल पौलुस रसूल के दिल में पैदा हुआ और उसी ने मसीहीय्यत को आलमगीर (पूरी दुनिया का) मज़हब बना दिया वर्ना कलिमतुल्लाह (मसीह) ना तो किसी नए मज़हब के बानी थे और ना ग़ैर-यहूद दुनिया में मसीहीय्यत की इशाअत आपके ख़्याल में कभी आई थी।

फ़स्ल सोम में हमने ये साबित कर दिया है कि ये ख़्याल बिल्कुल ग़लत और बातिल है। सय्यदना मसीह ने खुद एक आलमगीर मज़हब की बुनियाद रखी। कलिमतुल्लाह (मसीह) के अपने लाएहा-ए-अमल, तर्ज़-ए-अमल, ताअलीम, हिदायात और अहकाम वग़ैरह से ये ज़ाहिर है कि आपका ये ख़्याल था कि आप कुल दुनिया के मुनज्जी (नजात-दहिंदा) हो कर आए हैं। ये अस्हाब मुक़द्दस पौलुस को वो वक़अत देते हैं

जिसका वो मुस्तहिक नहीं है। मुकद्दस पौलुस के एक अजीमुशान इन्सान होने में किसी सही-उल-अक़ल शख्स को शुब्हा नहीं हो सकता, लेकिन हमें याद रखना चाहिए कि “शागिर्द उस्ताद से बड़ा नहीं होता।” (यूहन्ना 13:16) मसीहीयत की इशाअत का ख्याल मुनज्जी-आलमीन (मसीह) से शुरू हुआ और मुकद्दस पौलुस के मसीही होने से पहले खुदावंद के रसूलों ने ग़ैर-यहूद और सामरियों, हब्शियों वगैरह को मसीहीयत का हल्का-ब-गोश कर लिया था। मसीही होने के बाद मुकद्दस पौलुस ने भी दीगर रसूलों की तरह (1 कुरिन्थियों 15:11) अपने आका और मौला की हिदायत पर अमल करके इन्जील जलील को ग़ैर-अक्वाम (ग़ैर-क़ौमों) में पहुंचाया। (1 कुरिन्थियों 15:1 ता 11) उस की तकरीरों और तहरीरों से ज़ाहिर है कि वो खुदावंद की आलमगीर शख्सियत और जामा हस्ती और आलमगीर नजात की गिरिफ्त में ऐसा जकड़ा हुआ है कि वो इन्जील का पैगाम सुनाए बगैर रह नहीं सकता, वो वारफ़ता और “बे-खुद है।” मसीह की मुहब्बत उस को मजबूर करती है। 2) कुरिन्थियों 5:13 (नजात का पैगाम सुनाना उस की ज़िंदगी के लवाज़मात में से है वो कहता है कि “अगर मैं इन्जील सुनाऊँ तो मेरा कुछ फ़ख्र नहीं क्योंकि ये तो मेरे लिए ज़रूरी बात है, बल्कि मुझ पर अफ़सोस है अगर इन्जील ना सुनाऊँ।” (1 कुरिन्थियों 9:16 (इन्जील की खातिर उसने अपने आपको सब का गुलाम बना दिया।” (1 कुरिन्थियों 9:16 ता 19)

ए शेख पाक दामन माअज़रदार मारा

ताज्जुब ये है कि मुकद्दस पौलुस अपने आपको खुदावंद “यसूअ मसीह का अब्द (बन्दा)” (रोमीयों 1:1) कहे और अपने आपको कलिमतुल्लाह का “रसूल होने के लायक” ना समझे। (1 कुरिन्थियों 15:9) और यह अस्हाब उस को उस के आका, मौला और मुनज्जी से अफ़ज़ल समझें याबोवालअजब (अनोखा يا بوالعجب ! हक़ तो ये है कि जैसा पौलुस रसूल खुद इस बात का इक़बाल करता है। सय्यदना मसीह ने ही उस को यहूदीयत की गुलामी से आज़ाद किया था और इस तरह वो खुद आज़ाद हो कर आलमगीर मसीहीयत का बानी नहीं, बल्कि आज़ाद मसीहीयत का एक आज़ीम उल-शान वाइज़ (नसीहत करने वाला) बना।

मन बंदा आज़ादम इश्क अस्त इमाम मन

इश्क अस्त इमाम मन अक्ल अस्त गुलाम मन

(2)

मोअतरजीन (एतराज़ करने वाले) अपने दाअ्वे के सबूत में रसूलों के आमाल की किताब के पंद्रहवें (15) बाब को पेश करते हैं। जब कलीसिया ने यरूशलेम में मसीहीयों के मूसवी शरीअत के ताबेअ होने के खिलाफ़ फ़ैसला किया था। लेकिन ये मोअतरजीन इस बात को नहीं समझते कि इस कान्फ़्रेंस में मुतनाज़ा फिया अम्र ये नहीं था कि गैर-अक्वाम (गैर-क्रौमों) को इन्जील की बशारत दी जाये या नहीं, बल्कि सवाल ये था कि किन शराइत पर उनको कलीसिया में शामिल किया जाये? ये उसूल तो पहले ही कायम हो गया था कि मसीह इब्ने-अल्लाह यहूद और गैर-यहूद दोनों को नजात देने वाले हैं। लेकिन हल तलब मसअला ये था कि क्या कलीसिया में दाखिल होने से पहले गैर-मख्तूनों का खतना करना ज़रूरी है या कि नहीं? बअल्फ़ाज़े दीगर क्या मसीही कलीसिया के गल्ले का दरवाज़ा यहूदीयत है, जिसमें से अक्वाम आलम (दुनिया की क्रौमों) का गुजर कर मसीहीयत में दाखिल होना है।

अगर ये नहीं तो मूसा की शरीअत में से किस-किस कानून और शराअ (शरीअत) पर अमल करना उन लोगों पर फ़र्ज़ है जो गैर-अक्वाम (गैर-क्रौम) से मसीही हों? हम देख चुके हैं कि खुद मुनज्जी-ए-आलमीन (मसीह) ने गैर-अक्वाम (गैर-क्रौमों) के दर्मियान इन्जील की बशारत (तब्लिग) का हुक्म दिया था और आमाल की किताब से जाहिर है कि इस कान्फ़्रेंस के नअक्राद से कई साल कब्ल गैर-यहूद और गैर-मख्तूनों (यानी जिनका खतना नहीं हुआ यानी गैर-क्रौमों) में इन्जील जलील के पैगाम की बशारत दी जा चुकी थी। लिहाज़ा ये अम्र ज़ेर-ए-बहस नहीं था। सय्यदना मसीह ने अपनी ज़बान मुबारक से कलीसिया में शमूलीयत की शराइत नहीं बतलाई थीं। लेकिन खुदावंद ने ये वाअदा किया था कि “रुहुल-कुद्दुस यानी सच्चाई का रूह आएगा तो तुमको तमाम सच्चाई की राह दिखाएगा।” (यूहन्ना 16:13 (यरूशलेम की कान्फ़्रेंस में इस सच्चाई के रूह ने रसूलों की मार्फ़त फ़ैसला दिया। (आमाल 15:28 (कि गैर-मख्तून मसीही मूसवी शरीअत के ताबे नहीं हैं। किताब आमाल-उल-रसूल (अमाल की किताब) से जाहिर है कि मुकद्दस पतरस गैर-क्रौम कुर्नेलियुस के घर इस वास्ते नहीं जाना चाहता था क्योंकि “उस

को गैर-क्रौम वाले से सोहबत रखनी या उस के हाँ जाना नाजायज़ था।” ना कि वहां इन्जील की बशारत ना करे। मुकद्दस पतरस पर यरूशलेम में इल्जाम लगाया गया था कि “तू ना मख्तूनो के पास गया और उन के साथ खाना खाया।” ना कि क्योँ “गैर-क्रौमों ने भी खुदा का कलाम कुबूल किया।” (आमाल 11:1 ता 2) इस के बरअक्स यहूदी मसीहीयोँ ने ये सुनकर खुदा की बड़ाई करके कहा “बेशक खुदा ने गैर-क्रौमों को भी जिंदगी के लिए तौबा की तौफ़ीक दी है।” (आमाल 11:18 (

(3)

मुकद्दस पौलुस के तेज़ फ़हम ने मसीही होने से पहले ही कलिमतुल्लाह (मसीह) की ताअलीम और आपके रसूलों की ताअलीम और तर्ज़-ए-अमल से ये मालूम कर लिया था कि मसीहीयत आलमगीर (पूरी दुनिया की क्रौमों के लिए) है। अहले-यहूद ने अपने माअबूद यहोवा के साथ वफ़ादारी का अहद बाँधा हुआ था और इसी वजह से वो यहोवा की खास उम्मत कहलाते थे। लेकिन मुकद्दस पौलुस ने देखा था कि मसीही यहोवा के बजाय एक दूसरे शख्स यसूअ नासरी के साथ वफ़ादारी, इरादत (एतिक़ाद, आरजू) व अक़ीदत के जज़्बात रखते हैं और यसूअ नासरी भी वो जो उस के ख़्याल में शराअ (शरीअत) की रु से काफ़िर और मुजरिम साबित हो कर मस्लूब कर दिया गया था। लिहाज़ा वो इब्तिदा ही से बअल्फ़ाज़ मरहूम कमाल-उद्दीन :-

□उनका जानी दुश्मन था उनकी ईजा रसानी) तकलीफ
दने (में उसने कोई दकीका) कसर (नहीं छोड़ा।□

(यनाबीअ सफ़ा 124)

जिस मसीहीयत के साथ पौलुस रसूल का साबिका पड़ा था वो महज़ यहूदीयत की इस्लाह ना थी। अगर वह महज़ इस्लाही तहरीक होती, तो पौलुस रसूल इस तहरीक का “जानी दुश्मन” ना होता, बल्कि वो उस का ज़बरदस्त हामी होता। इब्तिदा ही से वो इस नतीजे पर पहुंच गया था कि यहूदीयत और यसूअ नासरी के उसूल एक दूसरे के नक़ीज़ (मुखालिफ़) हैं और इस नतीजे के साथ यहूदी रब्बी सरदार काहिन, फ़कीह, फ़रीसी ग़र्ज तमाम उलमा-ए-उम्मत-ए-यहूद मुतफ़िक् थे और इसी सबब से उन शक़ी दिल उलमा ने सय्यद-उल-शोहदा खुदावंद मसीह को मस्लूब करवा दिया था।

मुकद्दस पौलुस “गैर-क्रौमों का रसूल” कहलाता है। लेकिन जब हम आपकी यहूदी ताअलीम व तर्बियत और क्रौमी जज़्बात की तरफ नज़र करते हैं, (गलतीयों 1:14 वगैरह) तो हम पर अयाँ हो जाता है कि यहूद के एवज़ (बदले) गैर-अक्वाम (गैर-क्रौमों) में इन्जील की बशारत देने के लिए जाना आपके लिए कैसा मुश्किल साबित हुआ होगा। अपने लोगों को जो “वाअदे के वारिस थे तर्क करना” और बे शराअ् ना मख्तूनो के पास जो “ना इब्राहिम से और ना उस की नस्ल” से थे जाकर खुदा के फ़ज़ल की खुशखबरी देना आप पर कितना शाक़ (दुशवार, मुश्किल) गुजरा होगा। (आमाल 13:44 ता 47) इस से हम अंदाज़ा कर सकते हैं कि आप गैर-क्रौमों के रसूल होने की ईलाही बुलाहट को (गलतीयों 1:16, आमाल 9:15) किस क़द्र महसूस करते थे। सिर्फ़ एक यहूदी ही इस बात का कमा-हक्का अंदाज़ा कर सकता है कि जब आपको अपनी बुलाहट का एहसास हुआ होगा तो ये मुआमला आप पर कितना शाक़ (मुश्किल) गुजरा होगा। आपने “पेने की कील” पर कितनी बार “लात” चलाई होगी। लेकिन मुनज्जी-आलमीन की रूह ने मुकद्दस पौलुस को बिल-आख़िर “गैर-अक्वाम का रसूल बना कर छोड़ा।” (गलतीयों 1:1 व 12)

अगर हम दौर-ए-हाज़रा से मिसाल लें तो ये ऐसा ही होगा जैसा फ़ी ज़माना जर्मनी का हिटलर अहले-यहूद को पामाल, बर्बाद, क़त्ल और ग़ारत करने की बजाय उनको और तमाम दुनिया को ये ताअलीम दे कि जर्मनी के अस्ल बाशिंदे और अहले यहूद सल्तनत जर्मनी में मुसावी (बराबर) हुकूक रखते हैं और इनमें और अस्ल जर्मन में हर तरह की दर्जा बंदी का ख़ातिमा हो गया है। अगर हमारी कुव्वत-ए-मुतखय्युला (सोचने की कुव्वत) इस बात की मुतहम्मिल (बर्दाशत करने वाली) हो सकती है कि हिटलर ग़ारत-गर होने के बजाय इस उसूल का ज़बरदस्त मुबल्लिग़ और अज़ीमुशान वाइज़ हो जाए तो हम कुछ-कुछ समझ सकेंगे कि ग़ारत-गर साऊल पर ये अम्र किस क़द्र शाक़ (मुश्किल) गुजरा होगा कि ऐसी इन्जील की मुनादी करे जो यहूद और गैर-यहूद में किसी किस्म की तमीज़ रवा नहीं रखती थी।

हमको ये बात हरगिज़ फ़रामोश नहीं करनी चाहिए कि उस ज़माने में यहूद और गैर-यहूद के दर्मियान एक ऐसी खलीज (रूकावट) हाइल थी जो निहायत वसीअ थी और जिस को मसीहीय्यत के सिवा कोई और शैय उबूर (पार) ना कर सकी। हिक़ारत सिर्फ़ अहले-यहूद तक ही महदूद ना थी बल्कि गैर-यहूद और यूनानी भी यहूद को नफ़रत और

कराहीयत की निगाह से देखते थे हता कि अरस्तू जैसा फिलासफर नूअ-इन्सानी को दो हिस्सों में तक्सीम करता है यूनानी और वहशी, और कहता है कि :-

“फ़ित्रत ने यूनानियों को हुक्मरान और दूसरों को महकूम
)गुलाम, रिआया (होने के लिए पैदा किया है। ”

(Politics, 253 b, 1263a)

इस के बरअक्स मसीहीयत के मुबल्लिग ये ताअलीम देते थे कि खुदा अज़ल से यहूद व गैर-यहूद को प्यार करता है और हर किस्म की दर्जा बन्दी कानून-ए-फ़ित्रत के खिलाफ़ है। (इफ़िसियों 3:4 ता 6, कुलिस्सियों 1:26 ता आख़िर वगैरह)

हवस ने टुकड़े-टुकड़े कर दिया है नूअ इन्सान को
उखुव्वत की ज़बां होजा मुहब्बत का बयाँ होजा

मुकद्दस पौलुस बार-बार ज़िक्र करता है कि खुदा की नज़र में यहूद और गैर-यहूद में कोई तमीज़ नहीं और यहूद को गैर-यहूद पर कोई तर्ज़ीह हासिल नहीं। (रोमीयों 10:12, 16:25 वगैरह इब्ने-अल्लाह (मसीह) ने इस दुनिया में आकर इस हकीकत को महर-नीम रोज़ की तरह रोशन कर दिया। पौलुस रसूल इस हकीकत पर इसरार करता है कि मसीह में यहूद और गैर-यहूद खुदा की बादशाहत में मुसावी (बराबर) तौर पर शरीक हैं और गैर-अक्वाम के मसीहीयों को याद दिलाता है कि “तुम जो जिस्म की रू से गैर-क्रौम वाले हो अगले ज़माने में मसीह से जुदा और इस्राईल की सल्तनत से खारिज और वाअदे के ओहदों से नावाक़िफ़ और ना उम्मीद और दुनिया में से खुदा से दूर थे। अब मसीह के सबब से नज़्दीक हो गए हो जिसने यहूद और गैर-क्रौम दोनों को एक कर लिया और जुदाई की दीवार को जो बीच में हाइल थी ढा दिया।” (इफ़िसियों 2:11 (ये रसूल बार-बार अपने खुतूत में मसीहीयों को जतलाता है कि वो सब ख़्वाह यहूद हों ख़्वाह गैर-यहूद सय्यदना मसीह में वाअदे के शरीक और आपस में हम मीरास हैं। (1 कुरिन्थियों 12:13, इफ़िसियों 3:4 ता 6, कुलिस्सियों 1:26, रोमीयों 10:12, कुलिस्सियों 3:11 वगैरह) गलतिया के मसीहीयों की तरफ़ जो खत आपने लिखा वो इसी जज़्बे के जोश से मामूर है। (गलतीयों 3:28 वगैरह) रुम के मसीहीयों की तरफ़ जो खत आपने

लिखा, उस में आपने इस कज़ीया (झगड़ा, तकरार) को मुंतकीयाना इस्तिदलाल (सबूत, दलील) से साबित किया है कि रुहानी उमूर में यानी गुनाह की वाजेह और आलमगीर हकीकत और नजात की ज़रूरत में यहूदीयों, यूनानियों और दीगर अक्वाम (गैर-कौमों) के अफ़राद में किसी तरह का फ़र्क नहीं। खुदावंद यस्अ मसीह कुल बनी-नूअ इन्सान का मुनज्जी है। (इफ़िसियों 2:11 ता 14 (

रसूलों की तहरीरात और मसीहीय्यत की आलमगीरी

इन्जील जलील सत्ताईस (27) कुतुब और मक्तुबात पर मुश्तमिल है और यह तमाम किताबें खुदावंद के मुख्तलिफ़ रसूलों ने इसी मक्सद के लिए लिखीं कि यहूद और गैर-यहूद दोनों को नजात का इल्म हो जाए। इन्जील नवीसों ने अपनी अनाजील इस बात को ज़ाहिर करने के लिए तहरीर कीं कि मुनज्जी-ए-आलमीन कुल अक्वाम (सारी कौमों) का नजातदिहंदा है और अक्वाम आलम (सारी दुनिया की कौमों) को मालूम हो जाए कि “मसीह के नाम से गैर-कौमों उम्मीद रखेंगी।” (मत्ती 12:21) ताकि “सब कौमों में इन्जील की मुनादी की जाये, ताकि उनके लिए गवाही हो।” (मर्कुस 10:9 ता 10) मज़ीदबराँ जिन बातों की गैर-यहूद अक्वाम ने ताअलीम पाई है उनकी पुख्तगी उनको मालूम हो जाए।” (लूका 1:4) ताकि “तुम ईमान लाओ कि यस्अ ही खुदा का बेटा मसीह है और ईमान ला कर उस के नाम से ज़िंदगी पाओ।” (यूहन्ना 20:31 (रसूलों के आमाल में उन तब्लीगी मसाई (कोशिशाँ) का मुफ़स्सिल ज़िक्र है, जो खुदावंद मसीह की मौत के बाद ही यहूद और गैर-यहूद दोनों में की गई। पौलुस रसूल के मक्तुबात (खुतूत) एक मुबल्लिग़ मसीहीय्यत के खुतूत हैं, जो आपने वक्तन फ़वक्तन तब्लीगी ज़रूरीयात के मातहत अपने नव-मुरीदों (नए शागिर्दों) को लिखे थे। इन सब का अक्वल और आखिरी मक्सद और इब्तिदा और इतिहा और इल्लत-ए-गाई (हासिल, सबब) अलिफ़ से लेकर य तक सिर्फ़ यही है कि “ये बात सच्च है और हर तरह से कुबूल करने के लायक़ है कि यस्अ मसीह गुनेहगारों को नजात देने के लिए दुनिया में आया।” (1 तीमुथियुस 1:15 (मुकद्दस यूहन्ना अपने मुखातबों को कहता है कि “हम इस ज़िंदगी के कलाम की बाबत जिसे हमने देखा तुमको खबर देते हैं, ताकि तुम भी हमारे शरीक हो और हमारी शराकत

बाप के साथ और उस के बेटे यूसूअ मसीह के साथ है और यह बातें हम इसलिए लिखते हैं कि हमारी खुशी पूरी हो जाएगी।” (1 यूहन्ना पहला बाब 1 ता 4 आयत) इन्जील जलील की कुतुब के मुसन्निफों के अल्फ़ाज़ इस ज़िंदगी के तजुर्बे को बयान करने से कासिर रहते हैं और वह हर मुम्किन तौर पर इस तजुर्बे को ज़ाहिर करने के लिए अल्फ़ाज़ और मुहावरात वज़ाअ करते हैं, ताकि कुल दुनिया पर ये हकीकत रोज़ रोशन की तरह मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) हो जाए कि मसीह कल, दुनिया का मुनज्जी (नजात-दहिंदा) है और जो इब्ने-अल्लाह (मसीह) के क़दमों में आ जाते हैं वो “अज़ सर-ए-नौ पैदा” हो जाते हैं। वो “तारीकी से निकल कर नूर में दाख़िल हो जाते हैं। वो नए मख़्लूक हैं और नजात याफ़तागान के गिरोह में शामिल” हो गए हैं। मुकाशफ़ात के मुसन्निफ़ पर पौलुस रसूल और “पोलुसी अक्राइद” का रती भर असर साबित नहीं, लेकिन वो नजात याफ़तागान की रोया (कश्फ़) देखते वक़्त ना सिर्फ़ अहले-यहूद को ही नजात याफ़ताह लोगों की सफ़ में देखता है, बल्कि दुनिया के ममालिक की अक्वाम (क़ौमों) को भी वहां देखता है और लिखता है। “इन बातों के बाद जो मैंने निगाह की तो क्या देखता हूँ कि, हर एक क़ौम और क़बीले और उम्मत और अहले-ज़बान की एक ऐसी भीड़ जिसको कोई शुमार नहीं कर सकता बर्र (सय्यदना मसीह) के आगे खड़ी है और बड़ी आवाज़ से कहती है कि, नजात हमारे खुदा की तरफ़ से है।” (मुकाशफ़ा 7:9 (

बख़ोफ़-ए-तवालत हम इन्जील जलील की कुतुब के इक़तिबासात करने से परहेज़ करते हैं, क्योंकि इस मौजू पर इस कस्रत से आयात हैं कि अगर हम उनको नक़ल करने लगे तो तमाम इन्जील की इन्जील हमको नक़ल करनी पड़ेगी।

तूही नादाँ चंद कलीयों पर क़नाअत कर गया

वर्ना गुलशन में ईलाज तंगी दामाँ भी है

जिस शख्स ने इन्जील की कुतुब का सतही मुतालआ भी किया है, उस के लिए ये एक वाज़ेह और रोशन हकीकत है कि इन्जील जलील की हर किताब का हर सफ़ा इस बात का शाहिद (गवाह) है कि सय्यदना मसीह कुल दुनिया की अक्वाम (क़ौमों) के नजातदिहंदा हैं। मसीहीयत की तब्लीग़ के मुताल्लिक़ जो ताअलीम और अहकाम इन कुतुब में हैं वो सिर्फ़ चंद मुंतशिर आयात पर ही महदूद नहीं हैं, बल्कि अहदे-जदीद के रग व रेशे में मौजूद हैं। इस में कोई सहीफ़ा ऐसा नहीं जिसमें तब्लीगी काम और कोशिश

और तब्लीगी अहकाम व मसाई (कोशिश) का जिक्र ना हो। पस इन्जील जलील की तमाम किताबें और सहीफे बयेक आवाज़, हमको बतलाते हैं कि सय्यदना मसीह के हवारी (शागिर्द) और रसूल जो हर वक़्त आपके साथ रहते थे और आप के खयालात, जज़्बात, अहकाम व हिदायात, से कमा-हक्का वाकिफ़ थे, यही मानते और ताअलीम देते चले आए कि सय्यदना मसीह दुनिया के तमाम गुनेहगारों का नजात देने वाला है। (1 कुरिन्थियों 15 बाब)

फ़स्ल पंजुम

मसीही कलीसिया का तर्ज-ए-अमल

गुजशता फ़स्ल में हमने देखा है कि इन्जील जलील की कुतुब जो मसीही कलीसिया में इब्तिदा ही से मुरव्वज थीं, तब्लीग के फ़र्ज को बार-बार हर मसीही के कंधों पर रखती हैं। ये कुतुब इस बात को साबित करती हैं कि इब्तिदा ही से मसीहीयत ने और मसीही कलीसिया ने तस्लीम किया है कि सय्यदना मसीह की नजात का पैगाम दुनिया के हर फ़र्द बशर (इंसान) के लिए है और कलीसिया का ये फ़र्ज है कि इस पैगाम को अकनाफ़ (कन्फ़ की जमा, अतराफ़, सिम्तें) आलम तक पहुंचाए।

ये अम निहायत माअनी-खेज़ है कि बफ़र्ज मुहाल अगर इब्तिदाई कलीसिया में कोई ऐसी किताबें या रिसाले थे जिनमें तब्लीगी अहकाम और तब्लीगी फ़र्ज का जिक्र नहीं था तो ऐसी किताबों की कलीसिया ने पर्वाह तक ना की और वो गुर गफलत में ही गल सड़ गईं और कलीसिया ऐसी किताबों की पर्वाह करती भी कैसे, जब वो उस के मुनज्जी (मसीह) के अक्वाल, हिदायात, अहकाम, लाएहा-ए-अमल और तर्ज-ए-अमल के ऐन नकीज़ (मुखालिफ़) थीं और उस के रसूलों के अहकाम, अक्वाल, तहरीरात और तरीक-ए-अमल की भी मुखालिफ़ थीं। अगर बफ़र्ज-ए-मुहाल ऐसी कुतुब कभी माअज़े वजूद में आईं तो कलीसिया-ए-जामा ने ऐसी कुतुब को मुत्तफ़िका आवाज़ से रद्द कर दिया और उन को अहद-ए-जदीद की कुतुब के मजमूए में शर्फ़-ए-शमूलीयत ना मिला। अहद-ए-जदीद का वजूद इस बात का ज़िंदा गवाह है कि इब्तिदाई ज़माने ही से कुल कलीसिया-ए-जामा ये मानती चली आई है कि सय्यदना मसीह कुल आलम का मुनज्जी

(पूरी दुनिया को नजात देने वाला) है और मसीहीय्यत एक आलमगीर मज्हब है। जिसके उसूल ही ऐसे हैं जो आलमगीर हैं। खुदा की मुहब्बत और इन्सानी हुक्क मसीहीय्यत की इमारत के कोने के पत्थर हैं। इन्जील के मअनी ही खुशखबरी है जो हर शख्स के लिए है। इस की नजात के दायरे से कोई मुल्क, क्रौम, कबीला, जमाअत या फ़र्द खारिज नहीं है, बल्कि वो कुल बनी-नूअ इन्सान पर हावी है। कलीसिया-ए-जामा और अहद-ए-जदीद की ताअलीम के मुताबिक "गैर क्रौम" होना किसी की क्रौमीयत पर मुन्हसिर नहीं क्योंकि ये क्रौमीयत का मुआमला नहीं, बल्कि रुहानी और अखलाकी मुआमला है। "गैर-क्रौम" सिर्फ वही है जो दीदा दानिस्ता जान-बूझ कर अपने आपको खुदा-ए-कुद्दूस की मुहब्बत-ए-बे-कराँ से अलैहदा रखता है।

(2)

मसीहीय्यत की आलमगीरी का सबूत ना सिर्फ मुनज्जी-आलमीन (मसीह) के हवारियों ने ही अपनी ताअलीम और तर्ज-ए-ज़िंदगी से दिया बल्कि इब्तिदा से लेकर दौर-ए-हाज़रा तक हर मुल्क और क्रौम की कलीसियाओं ने गैर-मसीहीयों के पास मुबल्लगीन भेजे और अपने तर्ज-ए-अमल से साबित कर दिया कि वो अपने नजातदिहंदा के लाएहा-ए-अमल और कलिमात-ए-तय्यिबात पर अमल पैरा है। मसीही कलीसिया में बीसों (20) तफ़र्क और बिद्अतें पैदा हुईं, लेकिन तब्लीग दीन और इन्जील जलील की इशाअत के फ़र्ज को सब कलीसियाओं ने बेयक आवाज़ तस्लीम किया। ये अम्र किसी ज़माने में भी कलीसिया की तवारीख में मुतनाज़ा फिया (वो चीज़ जिसकी बाबत झगड़ा हो) ना हुआ। मशरिक और मगरिब की कलीसियाएं इन्जील जलील की इशाअत को मूजिबे सआदत ही ख्याल करती रहीं। चुनान्चे 150 ई. के करीब जस्टीन शहीद लिखता है कि :-

□हम माकूल वजूह की बिना पर मसीह यसूअ की परस्तिश करते हैं, क्योंकि वो हकीकी खुदा का बेटा है। वो उस का इकलौता बेटा और कलिमतुल्लाह (उसका कलमा) है। वो कलाम की कुव्वत से खुदा बाप की मर्जी के मुताबिक एक कुंवारी से पैदा हुआ। वो दानिश का कलाम है जो खुद खुदा है वो खुदा का कलिमा और दानिश और ताक़त और जलाल है।□

कोई कौम और मिल्लत ऐसी नहीं ख्वाह यूनानी हो या वहशी या किसी नस्ल की हो ख्वाह उस का नाम और तरीक-ए-रिहाइश कुछ ही हो। ख्वाह वो गैर-मुहज्जब हो या जराअत से नावाक़िफ़ हो। ख्वाह वो आबाद बस्तीयों में रहती हो या खेमा बदोश हो। गरज़ कि कोई कौम और कोई कबीला ऐसा नहीं रहा जिसमें मसीह मस्लूब के नाम से तमाम मख़लूक़ात के खालिक़ और बाप के हुज़ूर दुआ नहीं की जाती “यही मुसन्निफ़ हमको बतलाता है कि इब्तिदाई कलीसिया में तब्लीग़ का काम सिर्फ़ रसूल ही नहीं करते थे, बल्कि तमाम की तमाम मसीही कलीसिया मुबल्लगीन की एक अज़ीमुशान जमाअत थी।□ इब्तिदाई मसीहीयत को फैलाने वाले वो लोग थे जिनका पेशा तब्लीग़ करना ना था बल्कि वो अपने मुख्तलिफ़ पेशों के ज़रीये रोज़ी कमाते थे, लेकिन चूँकि वो रसूली जोश से भरे हुए थे लिहाज़ा मसीहीयत के अज़ीमुशान मुबल्लिग़ थे। इन मुबल्लगीन की मसाई (कोशिश) की वजह से कलीसिया की अज़ीमुशान बिरादरी इस कद्र वसीअ हो गई कि दूसरी सदी का एक मुसन्निफ़ लिखता है कि :-

□मसीहीयों और दूसरे इंसानों में ज़बान या रसूम या मुल्क का फ़र्क़ नहीं वो जुदागाना शहरों में नहीं बस्ते। ना तो उनकी कोई खास ज़बान है और ना उनके मुआशरती ताल्लुकात अलैहदा (अलग) हैं। वो जिस शहर या मुल्क में पैदा होते हैं वहीं बूद व बाश रखते हैं। उनकी खवारिक़ ,लिबास और तर्ज़ रिहाइश दूसरे इन्सानों की तरह है। ताहम वो कलीसियाई बिरादरी और मसीही उखुव्वत को अजीब और निराले तौर पर अपनी ज़िंदगीयों में ज़ाहिर करते हैं। वो तमाम बातों में अपने शहरी हुकूक़ को काम में लाते हैं। लेकिन इस तौर पर ज़िंदगी बसर करते हैं कि इस दुनिया के हो कर नहीं रहते। वो अपने मुल्क में परदेसीयों की मानिंद बसते हैं और परदेस मुल्क को अपना मुल्क तसव्वुर करते हैं। वो अपनी ज़िंदगी को इस मुल्क में बसर करते हैं लेकिन उनका हकीकी वतन आस्मान है। यहूद उन पर हमला-आवर होते हैं। यूनानी उनको ईजाएं पहुंचाते हैं, लेकिन उनके दुश्मन अपनी दुश्मनी की वजह बयान करने से कासिर हैं जिस तरह रूह बदन के हर हिस्से में मौजूद है, उसी तरह मसीही भी दुनिया के हर

शहर में मौजूद हैं लेकिन जिस तरह रूह बदन का हिस्सा नहीं है इसी तरह मसीही दुनिया में रहते हैं लेकिन दुनिया के हो कर नहीं रहते।¹⁵

आयरेनियस (Irenaeus) 133 ता 203 निहायत साफ़ और वाज़ेह अल्फ़ाज़ में मसीह की आलमगीरी और लासानी हस्ती की निस्बत लिखता है।

“एक ख़ुदा है जो कादिर-ए-मुतलक़ है और एक यूसूअ मसीह जो ख़ुदा का इकलौता बेटा है जिसके ज़रीये तमाम चीज़ें बनें और जो तमाम चीज़ों का बनाने वाला है, वो हकीकी नूर है जो हर एक आदमी को रोशन करता है। अगर कोई इन हक़ बातों को नहीं मानता तो वो मुनज्जी (मसीह) की तहकीर करता है और अपनी नजात का आप ही दुश्मन है।”

हम इब्तिदाई मसीहीयों की तस्नीफ़ात और आबा-ए-कलीसिया की तहरीरात से बीसों (20) ऐसे इक़तिबासात पेश कर सकते हैं जो इस अम्र के शाहिद (गवाह) हैं कि इब्तिदा ही से कलीसिया ने सय्यदना मसीह की आलमगीरीयत को माना और आपको ख़ुदा का इब्ने वहीद और मुनज्जी आलमीन (यानी मसीह को पूरी दुनिया का नजात देने वाला) जाना और इस बात पर पुख़्ता ईमान रखा कि जो मुकाशफ़ा ख़ुदा ने कलिमतुल्लाह (मसीह) के ज़रीये बनी-नूअ इन्सान को अता फ़रमाया है। वो क़तई है और तमाम आलम (पूरी दुनिया) के लिए है और कि इस मुकाशफ़ा के उसूल अबदी और लातब्दील हैं। जो ज़मान व मकान की कुयूद से आज़ाद होने की वजह से हर क़ौम और हर मिल्लत को सिरात-ए-मुस्तक़ीम पर चलाते हैं।

(3)

कलीसिया इन बातों को महज़ ज़बानी जमा ख़र्च के तौर पर तस्लीम नहीं करती थी। तारीख़ इस बात की गवाह है कि :-

¹⁵ Epistle to Diognetus, Chaps.5-6

□मसीहीय्यत के बेशुमार और कामयाब मुबल्लिग सिर्फ वो ना थे जो मसीहीय्यत के प्रचारक (मुबल्लिग) और मुअल्लिम थे , बल्कि मसीही जमाअत के अफ़राद अपने ईमान की ज़बरदस्त ताक़त की वजह से, इस के निहायत कामयाब और शानदार मुबल्लिग थे। इस मज़हब का ये ख़ास्सा था कि हर शख्स जो मसीह को अपना नजातदिहंदा मानता था, दूसरे लोगों में इस का प्रचार (तब्लिग) करता था। हर मसीही को हुक्म था कि वो अपनी रोशनी इस तरह चमकाए कि बुत-परस्त इस रोशनी को देखकर कुबूल करें।□¹⁶

इस जर्मन आलम के अल्फ़ाज़ दर-हकीक़त तमाम ममालिक की कलीसियाओं पर चस्पाँ हो सकते हैं। हर ज़माने में गुम-नाम मसीहीयों ने मुख्तलिफ़ ममालिक में मसीहीय्यत की इशाअत की, तारीख़ उनके नामों से वाकिफ़ नहीं, लेकिन उनके काम दफ़्तर-ए-हयात में लिखे हैं। इन गुम-नाम मुबल्लगीन ने ज़बरदस्त कलीसियाओं को कायम किया। मिसाल के तौर पर हम नहीं जानते कि शामी कलीसिया की बुनियाद किस ने रखी लेकिन ये हम जानते हैं कि इस कलीसिया के मुबल्लगीन दूर व दराज़ के ममालिक मसलन जुनूबी हिन्दुस्तान और चीन तक पहुंच गए थे। हम ये नहीं जानते कि सिकंदरिया में किस ने मसीहीय्यत की इशाअत की लेकिन ये हम जानते हैं कि ये कलीसिया इल्म व फ़ज़ल के लिहाज़ से यगाना (अज़ीज़, रिश्तेदार) रोज़गार थी। हम नहीं जानते कि रोम में किस ने मसीहीय्यत की बुनियाद डाली, लेकिन ये हम जानते हैं कि रूमी कलीसिया इब्तिदा ही से कलीसिया-ए-जामा की ज़बरदस्त शाख़ रही है। हर मसीही मसीहीय्यत की इशाअत को अपना फ़र्ज़ अक्वलीन ख़याल किया करता था। चुनान्चे 197 में टरटोलेन लिखता है कि :-

□हम ब-मुकाबला दीगर मज़ाहिब-ए-बातिला के अभी कल के बच्चे हैं लेकिन हमने शहरों ,जज़ीरों ,खेमों और बाज़ारों को

16 Harnack, Expansion of Christianity

मामूर कर रखा है। हमारी कोशिशों की वजह से अब सिर्फ खाली मंदिर ही तुम्हारे पास रह गए हैं।□

गरज कि दूसरी सदी के आखिर तक मशरिकी कलीसिया के नामवर और गुमनाम मुबल्लगीन मगरिब की इतिहा तक हर सूबे में गए। उन्होंने अपनी जानों को हथेली पर रखा, उन सरफरोश सलीब के जाँ-निसारों ने सफ़र की तकलीफों, ज़माने की सऊबतों, बादशाहों की ईजा रसानियों (सताव) की पर्वाह तक ना की और आज मगरिबी ममालिक की कलीसियाओं का वजूद मशरिकी कलीसियाओं की इन्ही मसाई (कोशिशों) का नतीजा है।

बे-खतर कुद पड़ा आतिश-ए-नमरूद में इश्क
अक्ल थी महूवे तमाशा ए लब-ए-बाम अभी

इसी तरह दौर-ए-हाज़रा में मशरिकी ममालिक की कलीसियाओं का वजूद मगरिबी कलीसियाओं की कोशिशों का नतीजा है। रासिख-उल-एतक्राद कलीसियाओं ने अपने मुबल्लगीन को दूर-दराज़ के ममालिक में भेजा जो कोह व दशत बियाबान और संगलाख पहाड़ों में से गुजर कर दुशवार गुज़ार रास्तों को तै करके दुनिया के हर मुल्क में पहुंचे और उन्होंने ने हर क़ौम को कलिमतुल्लाह (मसीह) की ताअलीम और नजात के पैग़ाम के नूर से मुनव्वर कर दिया।

कि खून सद-हज़ार नज्म से होती है सहर पैदा

(4)

बिद्अती कलीसियाएं भी जैसा हम ज़िक्र कर चुके हैं मसीहीयत की इशाअत में सरगर्म रहीं। मिसाल के तौर पर हम यहां सिर्फ एक बिद्अती कलीसिया यानी नस्तूरी कलीसिया का ज़िक्र करते हैं जिसके ज़ेर-ए-असर रसूल अरबी ने रुहानी ताअलीम और तर्बीयत पाई थी। मुअर्रिख नील हमको बतलाता है कि :-

□नस्तूरी मसीहीयों ने अपने खेमे खाना-ब-दोश तातारियों के खेमों में जा नसब किए। तब कालामाअन (الامان) के मुँह की

बातों से हिरासाँ था। पंजाब के चावलों के खेतों में वो इन्जील की मुनादी करते थे। बहर-ए-आराल (بَحْرُ آرَال) के मछली पकड़ने वाले उनसे ताअलीम पाते थे। मंगोलिया के लुक दोक (सहरा, अस्ल तुर्की) ब्याबान में से वो अपनी जान जोखों में डाल कर गुजर गए। मशहूर सुनगिन फ़ौके कुतबे-जात इस बात की शहादत (गवाही) देते हैं कि उन्होंने मसीहीय्यत के लिए चीन को फ़तह कर लिया था। हिन्दुस्तान के मलयाली राजे उनके दीनी इख्तियार की इज्जत करते थे। ग्यारवीं सदी में नस्तूरी बतरीक का इख्तियार इस क़द्र वसीअ था कि उस के मातहत पच्चीस (25) सदर उस्क़ुफ़ थे जान का इख्तियार चीन से लेकर दजला तक और झील बैकाल से लेकर रास कुमारी था।□

(5)

अगरचे दौर-ए-हाज़रा में मसीहीय्यत बीसों (20) फ़िर्कों पर मुश्तमिल है लेकिन इन फ़िर्कों में से एक फ़िर्का भी आपको ऐसा ना मिलेगा जो ये तस्लीम ना करता हो कि उस की हस्ती का वाहिद मक्सद और इल्लत-ए-गाई (वजह) यही है कि दुनिया को अपने मुनज्जी (मसीह) के क़दमों में लाए। आज दुनिया का कोई मुल्क और कोई क़ौम ऐसी नहीं रही जिसमें मसीही कलीसिया तब्लीग़ के काम को सरअंजाम ना देती हो। फ़ी ज़माना मसीही कलीसिया ने बाइबल शरीफ़ का तर्जुमा एक हज़ार (1000) ज़बानों में करके सलीब के लाखों इल्म बर्दारों को दुनिया के हर मुल्क, सूबा, शहर बल्कि गांव-गांव में भेजा है ताकि दुनिया के तमाम ममालिक और नूअ इन्सानी की कुल अक्वाम को नजात का इल्म हो जाए और इस मुबारक मक्सद की खातिर करोड़ों बल्कि अरब हा रुपया हर साल निसार कर देती है ताकि वो किसी ना किसी तरह अपने तब्लीग़ के फ़र्ज को पूरा करे और हर फ़र्द बशर को मुनज्जी-ए-कौनैन (मसीह) की जाँ-फ़जाँ (दिल खुश करने वाली) नजात का मुज्दा मिल जाये।

फ़स्ल शश्म

कुरआन और मसीहीयत की आलमगीरी

सुतूर बाला में हमने अहले इस्लाम और दीगर गैर-मसीहीयों को मुखातब करके साबित कर दिया है कि कलिमतुल्लाह (मसीह) की ताअलीम आलमगीर (पूरी दुनिया के लिए) है और आप मुनज्जी-आलमीन (दुनिया को नजात देने वाले) और रहमत-उल-आलमीन (पूरी दुनिया के लिए रहमत) हैं। अब हम खास अहले इस्लाम से मुखातब हो कर इंशा-अल्लाह कुरआन से साबित करेंगे कि खुदा ने खास क्रौम यहूद को चुन लिया था ताकि उस के ज़रीये दुनिया को खुदा का इल्म हासिल हो और मसीही कुतुब मुकद्दसा तमाम जहान की हिदायत के लिए हैं और मसीहीयत का पैगाम अहले-यहूद तक ही महदूद नहीं बल्कि कुल बनी-नूअ (तमाम) इन्सान के लिए है।

इन उमूर को हमने मसीही कुतुब मुकद्दसा से साबित किया है और चूँकि कुरआन मसीही कुतुब मुकद्दसा का मुसद्दिक होने का दाअवा करता है लिहाज़ा वो हमारे मज़कूर बाला नताइज की भी तस्दीक करता है।

(1)

हमने फ़स्ल दोम व सोम में इस अम्र को मनकूली और माअकूली (तहरीरी और अकूली) दलाईल से वाज़ेह किया है, कि खुदा ने क्रौम यहूद को चुन लिया था ताकि वो तमाम दुनिया पर खुदा के इल्म और तौहीद को फैलाए। इस हकीकत को कुरआन इन अल्फ़ाज़ में बयान करता है **“और बातहकीक हमने बनी-इस्राईल को किताब और हुक्म और नबुव्वत अता की। और उन को तमाम आलम पर फ़ौक़ियत दी।”** (सूरह जासिया आयत 15) **“ऐ बनी-इस्राईल मेरे उस फ़ज़ल को याद करो जो मैंने तुम पर किया और यह कि सारे जहान के लोगों पर मैंने तुमको फ़ज़ीलत बख़शी।”** (बकरह आयत 44) **“हमने आले-इब्राहिम को किताब दी और इल्म बख़शा।”** (निसा आयत 52) **“बातहकीक हमने नूह और इब्राहिम को भेजा और दोनों की औलाद में पैगम्बरी रखी।”** (हदीद आयत 26) **“हमने इब्राहिम को इस्हाक और याकूब दिया और उस की औलाद में नबुव्वत और किताब को रखा।”** (अन्कबूत आयत 27) क्या कोई शख्स इन अल्फ़ाज़ से ज़्यादा वाज़ेह अल्फ़ाज़ में हमारे उन क़ज़ाया (क़ज़ीया की जमा, फ़िक़्रे जुम्ले) की तस्दीक कर सकता है

कि बनी-इस्राईल को खुदा ने तमाम अक्वाम (कौमों) पर फौकियत बखशी और उन में अपना इल्म वदीअत फरमाया। उनकी औलाद को रिसालत, नबुव्वत और किताब अता फरमाई ताकि उनके जरीये अक्वाम आलम (पूरी दुनिया की कौमें) खुदा की मार्फत और इल्म को हासिल करें।

(2)

हमने इस रिसाले की फ़स्ल दोम में लिखा था कि यहूदी अम्बिया का मतमाअ नज़रिया था कि उनकी कुतुब मुकद्दसा तमाम गैर-यहूद के लिए “नूर” हैं और उनके वसीले खुदावंद की “नजात दुनिया के किनारों तक” पहुँचेगी (यसअयाह 49:6) और कि “इस्राईल कौमों के दर्मियान बरकत का बाइस ठहरेगा।” (यसअयाह 19:23 ता 25) कुरआन इस हकीकत का एतराफ़ मुख्तलिफ़ मुकामात में निहायत साफ़ और वाज़ेह अल्फ़ाज़ में करता है। हम इख्तिसार को मद्द-ए-नज़र रखकर सिर्फ़ चंद मुकामात का हवाला देते हैं, “बातहकीक हमने मूसा को हिदायत दी और विरासत दी। बनी-इस्राईल को किताब दी जो समझ वालों को राह दिखलाने वाली और याद दिलाने वाली है।” (मोमिन आयत 55) “फिर हमने मूसा को किताब दी जो अहसन बात पर कामिल है और हर शैय की तफ़्सील और हिदायत और रहमत है।” (इनाम आयत 155) “बातहकीक हमने उतारी तौरात जिसमें हिदायत और नूर है।□

पस कुरआन मुनज्जी आलमीन (दुनिया के नजात-दर्हिदा मसीह) के इस क़ौल का मुसद्दिक है कि “नजात यहूदीयों में से है।” (यूहन्ना 4:22) (कुरआन निहायत वाज़ेह और गैर-मुबहम (यानी साफ़ साफ़) अल्फ़ाज़ में अपने पैरौओं (मानने वालों) को बतलाता है कि खुदा ने आले-इब्राहिम में नबुव्वत और किताब रखी जो हिदायत है, रहमत है, नूर है। वो दुनिया जहान को राह दिखलाने वाली है ताकि उस के जरीये सारी मख्लूक खुदा का इल्म हासिल करे और उस की नजात दुनिया के किनारों तक पहुंच जाये। नाज़रीन ने ये नोट किया होगा कि कुरआन मजीद यहूद की कुतुब मुकद्दसा के लिए वही अल्फ़ाज़ इस्तिमाल करता है जो सहाइफ़ अम्बिया में वारिद हुए हैं यानी “नूर” और “हिदायत।□

(3)

अब हम कुरआन मजीद से ये साबित करेंगे कि किताब मुकद्दस तमाम दुनिया के लिए नूर और हिदायत है और कि वो ना सिर्फ अहले-यहूद के लिए ही नूर और हिदायत है बल्कि तमाम दुनिया की अक्वाम (तमाम क़ौमों) के लिए नूर है और कि बाइबल मुकद्दस के अहकाम कुल बनी-नूअ इन्सान पर हावी है। “वो किताब जो मूसा लाया बनी-नूअ इन्सान के लिए नूर और हिदायत है।” (इनाम आयत 96) “हमने मूसा को किताब दी जो बनी-नूअ इन्सान के लिए बसीरत हिदायत और रहमत है शायद कि वो लोग नसीहत कुबूल करें।” (क़िसस आयत 43) “बातहकीक हमने मूसा और हारून को फ़र्मान दिया जो खुदा परस्तों के वास्ते नूर और नसीहत है।” (अम्बिया आयत 49) और मबादा (बाद में) मुसलमान ये ख़्याल करें कि ये कुतुब समावी (आस्मानी किताबें) उनके वास्ते नहीं कुरआन कहता है “ऐ ईमान वालो! ईमान लाओ अल्लाह पर और उस के रसूल पर और इस किताब पर जो उस ने रसूल पर उतारी और उस किताब पर जो इस से पहले उतारी और जो कोई मुन्किर हुआ अल्लाह से उस के फ़रिशतों से, और उस की किताबों से और उस के रसूलों से वो दूर की गुमराही में जा पड़ा।” (निसा आयत 35) “ऐ पैगम्बर, ईमानदार वह हैं जो इस पर यकीन करते हैं जो तुझ पर उतरा और जो तुझसे पहले उतरा। मसीही कुतुब मुकद्दसा ना सिर्फ अहले-इस्लाम के लिए ही मुस्तनद हैं और उन पर ही इन किताबों के अहकाम की बजा आवरी लाज़िम है, बल्कि खुद रसूल अरबी इन कुतुब मुकद्दसा के अहकाम पर चलना मूजिब सआदत ख़्याल फ़रमाते थे। [ऐ पैगम्बर तू कह, (ऐ मुन्किरों) अगर तुम सच्चे हो तो अल्लाह की तरफ़ से कोई ऐसी किताब लाओ जो हिदायत में इन दोनों (कुरआन व तौरात) से बढ़कर हो, तो मैं उसी पर चलने लगूँगा।” (क़िसस आयत 49) बल्कि कुरआन में अल्लाह ने आँहज़रत को हुक्म दिया है कि “अगर तू इस की तरफ़ से जो हम ने तेरी तरफ़ उतारी शक में है तो उनसे पूछ जो तुझसे पहले वाली किताब (बाइबल) पढ़ते हैं। बातहकीक तेरे पास रब से हक़ आया है, पस तो शक करने वालों में से मत हो।” (यूनस आयत 94) क्या इस से ज़्यादा ज़बरदस्त शहादत (गवाही) मुम्किन हो सकती है? इन चंद इक़तिबासात से जाहिर है कि मसीही कुतुब मुकद्दसा ना सिर्फ अहले-यहूद के लिए बल्कि कुल बनी-नूअ इन्सान के लिए। दुनिया जहान के परहेज़गारों के लिए, अहले-इस्लाम के लिए और पैगम्बर इस्लाम

के लिए हिदायत, रहमत और नसीहत हैं जिनके अहकाम की बजा आवरी हर मोमिन मुसलमान पर फ़र्ज है।

हमारे बाअज़ मुस्लिम बिरादरान अपने हम मज़हबों को कुरआन की मुखालिफ़त में किताब मुक़द्दस के मुतालआ (करने) से ये कह कर रोकते हैं कि बाइबल शरीफ़ मुहर्रिफ़ (बदल दी गई, तहरीफ़) हो गई है। लेकिन ये दाअवा सरासर बातिल और बे-बुनियाद है। हमने अपनी किताब “सेहत-ए-कुतुब मुक़द्दसा” में ये साबित कर दिया है कि किताब मुक़द्दस की सेहत लाजवाब है और इस सबूत में हमने तारीखी दलाईल दिए हैं। हमको उम्मीद है कि इस किताब को गौर से पढ़ेंगे और देखेंगे कि किताब मुक़द्दस की सेहत के बारे में तारीख़ कुरआन की मुसद्दिक है।

(4)

अब हम कुरआन मजीद से साबित करेंगे कि सय्यदना मसीह का पैगाम अहले-यहूद तक महदूद ना था, बल्कि कुल दुनिया की अक्वाम (पूरी दुनिया की क्रौमों) के लिए था। सूरह मोमिनीन में वारिद है, “बातहकीक हमने मूसा को किताब इस ग़र्ज़ से दी कि लोग इस से हिदायत पाएं और हम ने मर्यम के बेटे और उस की माँ को (अपनी कुदरत की) निशानी बनाया।” (सूरह मोमिनीन आयत 51 तर्जुमा नज़ीर अहमद) ये ज़ाहिर है कि खुदा की निशानीयां सिर्फ़ अहले-यहूद तक ही महदूद नहीं हो सकतीं क्योंकि वह तमाम कायनात के लिए हैं। पस इस आया शरीफ़ा का ये मतलब है कि इब्ने-मरियम आयत-उल्लाह (यानी अल्लाह की निशानी, आयत) हैं और कुल जहान के लिए खुदा की कुदरत की निशानी तमाम ज़मानों के लिए हैं ताकि आपके ज़रीये खुदा की कुदरत का ज़हूर बनी-नूअ इन्सान पर हो। तब ही कुरआन कहता है कि “जो लोग अल्लाह की निशानीयां से मुन्किर हुए उनके वास्ते सख्त अज़ाब है।” (इमरान आयत 4)

मुनज्जी-जहां (दुनिया के नजात-दहिदा मसीह) के आलमगीर मिशन के मुताल्लिक कुरआन मजीद कहता है कि “ऐ पैगम्बर खुदा ने तुम पर ये किताब बरहक उतारी जो उन आस्मानी किताबों की तस्दीक करती है जो इस से पहले नाज़िल हो चुकी हैं और उसी ने इस से पेशतर बनी-नूअ इन्सान की हिदायत के लिए तौरात और इन्जील को उतारा।” (इमरान आयत 2) “हमने ईसा को इन्जील दी जिसमें हिदायत और रोशनी

हैं जो तस्दीक करती हैं तौरात की और परहेज़गारों के लिए हिदायत और नसीहत हैं।” (माइदा आयत 45) यहां वाज़ेह अल्फ़ाज़ में सराहत के साथ इस हकीकत का इक़बाल किया गया है कि इन्ज़ील जलील का पैग़ाम ना सिर्फ़ अहले-यहूद के लिए ही था बल्कि कुल अक्वाम आलम (साड़ी दुनिया की कौमों) के परहेज़गारों के लिए है। खुदा ने इस को ना सिर्फ़ परहेज़गारों के लिए नाज़िल किया था, बल्कि बनी-आदम के लिए नाज़िल किया था। लिहाज़ा कुल बनी-नूअ इन्सान पर फ़र्ज़ है कि इस पर ईमान रखें। यही वजह है कि कुरआन मुसलमानों को हिदायत करता है कि “तुम कहो कि हम ईमान रखते हैं अल्लाह पर और जो नाज़िल हुआ हम पर और इब्राहिम और इस्माईल और इस्हाक़ और याक़ूब और इस्राईली फ़िर्कों पर और जो मिला ईसा को और मूसा को और नबियों को।”

क्या मसीहीयत की किताबों और कलिमतुल्लाह के पैग़ाम के आलमगीर (पूरी दुनिया के लिए) होने की शहादत (गवाही) इस से ज़्यादा ज़बरदस्त हो सकती है कि खुद सय्यदना मसीह आयत-उल्लाह, रूह-उल्लाह, कलिमतुल्लाह (यानी अल्लाह की आयत, अल्लाह की रूह, अल्लाह का कलमा *الله كلمته* ، *روح الله* ، *آيت الله*) करार दिए जाएं। मसीही कुतुब मुक़द्दसा बनी-नूअ इन्सान के लिए उम्मन और अक्वाम आलम (दुनिया की कौमों) के परहेज़गारों के लिए खुसूसुन हिदायत, इमाम, रहमत, नूर और नसीहत वगैरह करार दी जाएं और मोमिनीन और मोमिनात पर उनके अहकाम की तबईत फ़र्ज़ कर दी जाये। चुनान्चे सूरह माइदा में है कि (*ومن لم يحكم*) यानी जो शख्स खुदा की नाज़िल कर्दा किताब पर अमल नहीं करता वो काफ़िर है। इमाम राज़ी इस आयत की तफ़सीर में फ़रमाते हैं कि :-

“इस जुम्ले में लफ़ज़ “ *من* (من) ”शर्त की जगह पर वाक़ेअ हुआ है लिहाज़ा इस का इतलाक़ बिल-उम्म सब पर है।”

अब भी अगर कोई मोमिन मुसलमान कलिमतुल्लाह की आलमगीरी (यानी मसीह का पूरी दुनिया के लिए होने) को ना माने तो दिक्कत से कि वो इस नुक्ते को कुरआन से समझ ले, वर्ना कुरआन इस से समझ लेगा।

अगर अब भी ना समझो तो फिर तुमको खुदा
समझो।

वमा अलैना इल्लल-बलाग़

وَمَا عَلَيْنَا إِلَّا الْبَلَاغُ